शब्दों का शहंशाह

श्रवणबेलगोला स्थित भगवान बाहुबली के महामस्तकाभिषेक महोत्सव–06 में क्रांतिकारी संत मुनि श्री तरुणसागरजी की प्रभावी–उपस्थिति में वहां क्या–क्या घटा ? कैसे ? और क्या–क्या इतिहास बने ? इन सब का यादगार दस्तावेज

प्रवीण शर्मा

इन्दौर (म.प्र.)

तरुण क्रांति मंच ट्रस्ट (रजि.)

70, डिफेन्स एन्क्लेव, दिल्ली-92

फोन : 011-22523123

सौजन्य-संविभाग

श्री महावीर झुंवरलाल बड़जात्या
सौ. जयमाला - महावीर बड़जात्या
अहमदनगर (महाराष्ट्र)

प्रथम संस्करण : जुलाई, 2006
प्रतियाँ : 5,000

शब्दों का शहंशाह

मुनिश्री तरुणसागर

अहिंसा महाकुंभ प्रकाशन
196-सेक्टर-18, फरीदाबाद (हरियाणा)
फोन - 0129-2262549
मुद्रक : पॉपुलर प्रिन्टर्स, जयपुर. फोन : 0141-2606883

Rs. 70/-

समर्पित

उन असंख्य 'कानों' को

जिनका 'पेटेंट' तरुणसागरजी ने करा रखा है.

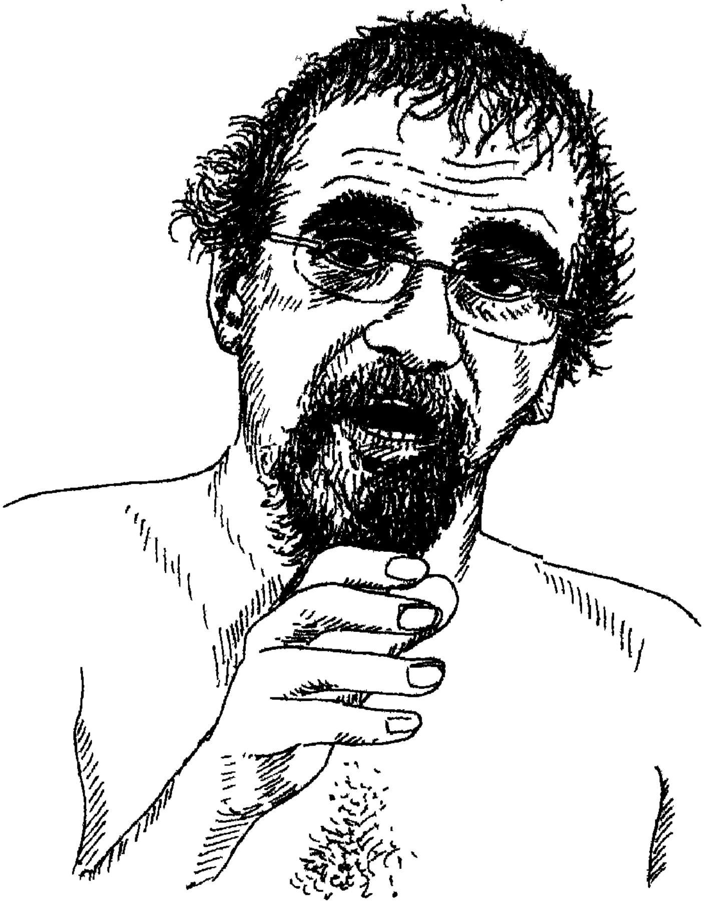
भूमिका

मुनिश्री तरुणसागरजी बिना काम के कभी तंग नहीं करते। इसलिए जब मैं 'नई दुनिया' से स्थायी विदा लेकर गोआ में छुट्टियाँ मना रहा था, उनका एक संदेश मिला। वे श्रवणबेलगोला जा रहे थे, जहाँ नई सहस्राब्दि का पहला महामस्तकाभिषेक समारोह होना था। उनके लिए यह ऐतिहासिक अवसर था और वे चाहते थे कि उन पलों का मैं अपनी कलम से दस्तावेजीकरण करूँ।

मैंने अपनी मुश्किल उन्हें बताई कि महीने भर वहाँ रुकना मेरे लिए असंभव होगा। उनका कहना था 'एक बार आ जाओ फिर जब जी करे चले जाना।' जब वहाँ चला गया तो लगा फँस गया हूँ, क्योंकि महामस्तकाभिषेक पूरा होने से पहले श्रवणबेलगोला छोड़ना संभव ही नहीं था। कुछ बाहुबली और दक्षिण का आकर्षण तो कुछ तरुणसागरजी के साथ सम्बन्धों ने मुझे करीब 40 दिन वहीं रोक लिया। इन दिनों में हर पल का मैंने लुत्फ लिया और एक हद तक आध्यात्मिक माहौल में रच-बस गया। वहाँ रहकर मैंने तरुणसागरजी और बाहुबली पर जो कुछ लिखा, उसमें यदि कहीं अतिशयोक्ति लगे, तो उसे आस्था का प्रबल आग्रह मानकर बिसारा जा सकता है।

वैसे मैंने कोशिश की है कि अनुभवों को लिखते हुए मेरे भीतर का पत्रकार जिन्दा रहे। इसलिए तरुणसागरजी से साक्षात्कार में कुछ कठोर सवाल उनके श्रद्धालुओं का दिल दुखा सकते हैं। पर मुझे कहना होगा कि इस मुनि ने किसी सवाल का जवाब टाला नहीं। और यही उनकी शक्ति है – मुश्किलों से रूबरू होना उनका भी प्रिय शगल है, इसलिए भी वे मुझे अपनी ओर खींचते हैं।

– प्रवीण शर्मा



शब्दों का शहंशाह

खण्ड - 1

अनुक्रमणिका

खण्ड – 1

बाहुबली के बुलावे पर

श्रवणबेलगोला की मेरी यह पहली यात्रा है। ग्रेनाइट की एक ही चट्टान को तराशकर बनाई गई 57 फुट से भी ऊँची विश्व प्रसिद्ध बाहुबली की प्रतिमा देखने की बेसब्री बढ़ती जा रही है। गाड़ी बैंगलोर से चलकर जैसे-जैसे श्रवणबेलगोला के नजदीक पहुँचने लगती है, दिल की धड़कनें बढ जाती हैं। आँखें कुछ खोजने की मुद्रा में आसमान और धरती के बीच लगातार टकटकी लगाए हुए हैं। जैसे ही श्रवणबेलगोला की 'स्काय लाइन' दिखने लगती है, उस विशाल मूर्ति का मस्तक पहाड़ से झाँकता दिखता है। जैसे-जैसे नजदीक जाते हैं मूर्ति का कुछ निचला हिस्सा भी दिखाई देता है। एक ढाँचा-सा मूर्ति के पीछे बना दिखता है। ड्राइवर बताता है, इसी ढाँचे (मचान) पर खड़े होकर श्रद्धालु महामस्तकाभिषेक करेंगे। मन मचल जाता है, चलो सबसे पहले बाहुबली से मिलेंगे। मगर उससे पहले श्रवणबेलगोला की खूबसूरती रास्ता रोक लेती है। पानी की छोटी-बड़ी झीलें इलाके की पवित्रता और समृद्धि की संगिनी लग रही थीं। नारियल के पेड़ों के झुरमुट में

छुपता-छुपाता कोई मकान किसी दुल्हन-सा शरमाता, फिर मुँह छुपा लेता है। नारियल के पेड़ों की सघनता ऐसी कि लगता कि धरती पर खाली जगह छोड़कर उन्होंने एहसान किया हो। हो भी क्यों नहीं, यह देवभूमि है। ... और देवभूमि में देवों के प्रिय फल नारियल का ही बोलबाला होगा। इन झुरमुटों की शीतल छाँव ललचाती है, थोड़ा सुस्ताने को मगर दिल बेसब्र हुआ जा रहा है। वह पहाड़ चढ़ना चाहता है। सूरज लालिमा से रंग गया है और साँझ ढलने की अनुमति चाहती है। छोटे-से कस्बे के बीचोंबीच बाहुबली को जाने वाली सीढ़ियों के प्रमुख प्रवेश द्वार पर पहुँचते ही दिल सूरज से गुजारिश करना चाहता है कि थोड़ा थम जाओ, ताकि उसकी रोशनी में बाहुबली के दर्शन हो जाएँ। ... पर वह तो निष्ठुर निकला और मुँह चिढ़ाता, मुस्कुराता नारियलों के पेड़ों के झुरमुट में खो गया। सूरज से अधिक निष्ठुर प्रवेश द्वार के दरबान हैं, जो ऊपर जाने की अनुमति नहीं देते। नियम का हवाला उनके हाथ में है कि शाम 6 के बाद कोई ऊपर नहीं जा सकता।

मन को मायूसी घेरने लगती है और साँझ को रात। दरवाज़े पर आकर दर्शन बिना कैसे जाएँ ? कल तक का सब्र कैसे करें। तभी एक जत्था सीढ़ियाँ उतरता दिखता है। वे सब दर्शन कर लौट रहे हैं। उनसे बतियाने को जी करता है पर उनकी जुबान चुप थी और आँखें बोल रही थीं। आँखों में असीम आस्था, परम संतुष्टि साफ दिख रही थी। आध्यात्मिक आख्यान सुनाती लगती वे आँखें कह रही थीं, 'हमने बाहुबली को देखा है, तुम हमारी ओर देखो, बाहुबली की छवि दिख जाएगी।' सच भी है श्रद्धा जब सिर चढ़कर बोलती है तो तर्क और ज्ञान गुम हो जाते हैं। बची रहती है तो आस्था, अविचलित आस्था।

इसलिए यह आस्था ही आश्वासन देती है कि इस रात की सुबह भी होगी और तभी तुम बाहुबली को निहार लेना। सो, कदम फिर कस्बे को मुड़ जाते हैं। वहीं बाहर एक होटल पर कॉफी पीने बैठ जाता हूँ। होटल के सामने, बल्कि बाहुबली को अपने सिर पर बिठाने वाले विंध्यगिरि की ठीक तलहटी में एक खूबसूरत-सा सरोवर है चारों ओर दीवारों से घिरा। अंदर जाओ तो शीतल और पवित्र जल तक ले जाने को सीढ़ियाँ तत्परता से आपकी प्रतीक्षा करती हैं। खूबसूरत ! सरोवर की पवित्रता घुल जाती है। नारियल के पेड़ों के झुरमुटों से चला हवा का एक शीतल झोंका कानों में सरगोशी कर जाता है - 'श्रवणबेलगोला में तुम्हारा स्वागत है।' धन्यवाद श्रवणबेलगोला! अब मैं तुम्हारा स्थायी मेहमान हूँ। कम से कम एक माह तक। इसलिए तुम्हें हमेशा तंग करूँगा। सो, उसी शाम श्रवणबेलगोला को करीब से जानने की इच्छा हुई। छोटा-सा कस्बा। सोता-सोता-सा, जिसे, जैसे झिंझोड़कर उठा दिया गया हो - उठो, कब तक सोते रहोगे ? महामस्तकाभिषेक की तैयारी नहीं करनी है ? हर तरफ़ तैयारियाँ तैरती नज़र आती हैं। काम जल्दी पूरा करने

की व्यग्रता हर चेहरे पर पढ़ी जा सकती है। यह छोटा-सा कस्बा, कैसे सहेगा लाखों यात्रियों का बोझ? कैसे करेगा उनकी मेजबानी ? कैसे जुटाएगा उनकी जरूरतें ? कैसे सजाएगा उनके चेहरों पर मुस्कान ? सवालों का सैलाब उमड़ रहा है। भीतर बैठा पत्रकार मैदान में आ जाता है और श्रवणबेलगोला में सभी जरूरतों, सभी जिज्ञासाओं, सभी जिम्मेदारियों को पूरा करने का एक ही नाम है – चारुकीर्तिजी !

स्वामीजी, सीधे एक हजार साल पीछे धकेल देते हैं। वे बता रहे थे एक महान सेनापति हुए थे – चामुंडराय नाम के। अपनी माँ काललदेवी की प्रेरणा से उन्होंने बाहुबली की प्रतिमा विंध्यगिरि पर निर्मित करवाई थी। जिस महान कलाकार को यह जिम्मा सौंपा गया, उसका नाम अरिष्टनेमि था। उसकी कला-साधना ने ग्रेनाइट की एक ही चट्टान पर एक चितचोर की मूर्ति उकेर दी। ये बाहुबली थे, जो पैदा तो बहुत पहले हुए, पर मूर्ति रूप में उनकी प्रतिष्ठा सन् 981 में हुई थी। बाहुबली जैनों के प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव की संतान थे। अयोध्या के शासक ऋषभदेव ने वैराग्य होने पर अपने पुत्र भरत को शासन सौंपा। उनका शासनकाल अत्यन्त लोकप्रिय व विकासशील सिद्ध हुआ। भरत चक्रवर्ती बनने वाले और पृथ्वी के छह खण्डों पर उनका ही राज था। मगर उनके अपने भाई बाहुबली को उनकी अधीनता स्वीकार नहीं थी। वे पोदनपुर के राजा थे। दोनों भाइयों में टकराव का कोई रास्ता बचता न देख अहिंसक युद्ध का प्रस्ताव रखा गया। जल युद्ध, मल्ल युद्ध और दृष्टी युद्ध तीनों में ही बाहुबली जीते। हार से बौखलाकर भरत ने उन पर चक्र चला दिया, जो बाहुबली का सिर काटने के बजाए उनकी परिक्रमा कर लौट आया। भरत को जब तक होश आता तब तक बाहुबली संन्यास का संकल्प ले चुके थे। सालों-साल एक पैर पर खड़े होकर तपस्या के बाद उन्होंने मोक्ष प्राप्त किया।

ये मूर्ति उन्हीं बाहुबली की है, जिसका हर बारहवें साल मस्तकाभिषेक होता है। पिछले तीन मस्तकाभिषेक भट्टारक चारुकीर्तिजी करवाते रहे हैं। उनकी आँखों से नींद झाँक रही है इसलिए उन्हें फिर से प्रणाम कर लौट चलता हूँ सो जाने को। सुबह-सबेरे सबसे पहले बाहुबली को निहारने वाला मैं होऊंगा, यह संकल्प गाँठ में बाँधकर सोया। रात कब गुजरी, पता नहीं, पौ फटते ही कदम बाहुबली के दरबार की ओर बढ़ चले। पूरब के भाल पर लालिमा रंगने लगी। तो क्या सूरज पहले दर्शन कर लेगा ? नहीं-नहीं, सीढ़ियाँ चढ़ते-चढ़ते थकने लगे कदम फिर दौड़ने लगे। फेफड़े जवाब दे रहे थे पर उन्हें उनका पड़ोसी दिल दिलासा दे रहा था। रास्ते में कुछ मंदिर पड़े, मूर्ति दिखने पर सबसे पहले तो बाहुबली को देखना है। एक छोटे-से द्वार से होकर आगे बढ़े तो बाहुबली सामने थे। मुस्कुराते हुए यह महामानव कितना मनमोहक लग रहा था। सूरज की पहली किरणें

उनके मस्तक पर पड़ीं तो चेहरा लालिमा से भर गया है। हे भगवान! ये मूर्ति है या जीता-जागता महामानव! आँखें अधखुलीं, गोया अभी आपसे पूछेगी, बहुत थक तो नहीं गए सीढ़ियाँ चढ़ते-चढ़ते। चेहरे पर कोमल भाव और ओठों पर स्मित मुस्कान! इस मुस्कान की माया आपकी थकान हर लेगी और फिर जिस अंग को निहारो वही सौन्दर्य की गाथा गाता नज़र आए। यह मूर्ति मोहती ही नहीं, आपका ताप भी हरती है और संताप भी। वह त्याग की सीख देती है और देती है सदा सुखी रहने की भीख! बाहुबली के अभिषेक में अभी कुछ दिन हैं, पर आँखें हैं कि अपने एक आँसू से उनका अभी अभिषेक कर देना चाहती हैं... घंटाभर हो गया है और मूर्ति की माया ने आँखों पर जादू चला दिया है। भक्त और भी हैं, सबको दर्शन करने हैं। दिल वापस लौटने के लिए आज्ञा चाहता है बाहुबली से। बाहुबली बिना बोले बता देते हैं - जरा गुल्लिका अज्जी से मिलते जाना! गुल्लिका अज्जी से मिलने कहीं और नहीं जाना पड़ता। वे तो बिल्कुल बाहुबली के सामने उनसे बीस क़दम के फ़ासले पर खड़ी हैं हाथ में नारियल का कटोरा लिए। कहते हैं चामुंडराय के मन में इतनी भव्य मूर्ति बनवाने का घमंड आ गया था। सो, पहले मस्तकाभिषेक में हजारों घड़े पंचामृत से नहलाने के बावजूद भी बाहुबली सिर से पैर तक नहीं नहा सके थे। तब गुल्लिका अज्जी ने अभिषेक की अनुमति चाही थी। हाथ में नारियल के कटोरे में दूध से अभिषेक की चाह लिए बुढ़िया को देख सबने मखौल उडाया। पर बुढिया की दृढ भक्ति ने उसे अभिषेक का मौका दिलाया और जो काम चामुंडराय नहीं कर पाए वह बुढ़िया की गुल्लिका ने कर दिखाया। बाहुबली नहा लिए - आस्था और श्रद्धा के पंचामृत से - आपादमस्तक। गुल्लिका अज्जी के बहाने बाहुबली बता गए कि मुझे पैसा नहीं प्रेम सुहाता है। वैभव के साम्राज्य के बजाए भाव-भरा एक कतरा उन्हें लुभाता है... उम्मीद है *महामस्तकाभिषेक के आयोजक भी गुल्लिका अज्जी को याद रखने की कोशिश करेंगे।*

—) —

श्रवणबेलगोला, कान खोलकर बैठ गया है...!

श्रवणबेलगोला, कान खोलकर बैठ गया है, क्योंकि तरुणसागरजी बोलने वाले हैं। श्रवणबेलगोला की धक-धक शुरू हो गई है क्योंकि देश के करोड़ों लोगों के दिल की धड़कन में धड़कने वाले मुनिश्री तरुणसागरजी का आगमन यहाँ हो गया है। सहस्राब्दि के पहले महामस्तकाभिषेक महोत्सव के लिए भगवान बाहुबली की नगरी सज-सँवर रही है। अगले एक माह तक लाखों श्रद्धालुओं को अपने आँचल में समेटने जा रहे श्रवणबेलगोला का जर्रा-जर्रा तैयारियों में जुटा है। वह खुद को झाड़-पोंछ रहा है। उसके सीने पर दर्जनों नई इमारतें आकार ले रही हैं। जिधर देखिए उधर अस्थायी टीन शेड, पाडाल आकार लेते नजर आ रहे हैं। लगता है श्रवणबेलगोला बहुत हड़बडी में है। उसे फुरसत ही नहीं है, महामस्तकाभिषेक से पहले साँस लेने की।

साँस थामकर तो विंध्यगिरि और चन्द्रगिरि पहाड़ियाँ भी उस घड़ी का इतजार कर रही हैं, जब वह महोत्सव घटेगा और इस महोत्सव का सबसे बड़ा

आकर्षण 'शब्दों का शहंशाह' बन गया है। तरुणसागरजी के तरकश में इस बार कुछ बहुत ही खास होगा, इसका अनुमान उनके श्रद्धालुओं को ही नहीं, मुनियों और आचार्यों को भी है। इसीलिए जब तरुणसागरजी का श्रवणबेलगोला में प्रवेश हुआ तो आचार्य श्री वर्धमानसागरजी एवं कर्मयोगी स्वस्तिश्री चारुकीर्ति भट्टारक जी समेत बड़ी संख्या में मुनिगणों-आचार्यों ने उनकी ऐसी आत्मिक अगवानी की, जिसे यह महातीर्थ हमेशा याद रखेगा।

मुनिश्री के प्रवेश को लेकर स्वयं वर्धमानसागरजी एवं चारुकीर्ति जी भी बहुत उत्साहित हैं। अगवानी समारोह में वर्धमानसागरजी ने उन्हें एक ऐसी क्रान्ति बताया, जो धर्मक्षेत्र में जैन धर्म की पताका बहुत ऊँचे लहरा रही है। उन्होंने कहा, यह कैसा संयोग है कल 'मकर संक्रान्ति' गई और 'तरुण क्रान्ति' आ गई। चारुकीर्तिजी का उत्साह तो उनके सम्बोधन के हर वाक्य में झलका। उन्होंने यहाँ तक कहा कि 'तरुणसागरजी के आने से महामस्तकाभिषेक महोत्सव की तैयारियों और माहौल में तरुणाई आ गई है।' चारुकीर्तिजी यहीं नहीं रुके और उन्होंने तरुणसागरजी को जैन धर्म के महान आचार्य श्री विद्यानंदजी के बाद लाखों की भीड़ खींचने वाला संत बताते हुए कहा कि – 'हम सब भी उन्हें सुनने को तत्पर हैं।'

मुनिश्री तरुणसागरजी श्रवणबेलगोला एक खास भाव लेकर आए हैं। वे यहाँ अपनी वाणी से ऐसा कुछ दे देना चाहते हैं जो अब से पहले उनकी जुबान से होकर न गुजरा हो। इसलिए बेलगाम से श्रवणबेलगोला तक की 65 दिन और 700 किलोमीटर लम्बी पदयात्रा के हर पल उन्होंने भगवान बाहुबली को गुना है। वे कहते भी हैं – 'मुझे नहीं मालूम मैं यहाँ फिर कभी आ पाऊँगा या नहीं। इसलिए मैं अपना सर्वस्व (प्रवचनों का) यहाँ समर्पित करने वाला हूँ। भगवान बाहुबली को श्रद्धांजलि देने का इतना बेहतर अवसर शायद प्रकृति ने स्वयं ही मुझे मुहैया कराया है।' मुनिश्री ने अपनी ऐतिहासिक अगवानी से अभिभूत होकर समारोह में कहा – 'मैं यहाँ आचार्य श्री वर्धमानसागरजी के आदेश, चारुकीर्तिजी के आग्रह, मेरे मन की आस्था और भगवान बाहुबली के प्रति आकर्षण के चलते आया हूँ।' तो, तरुणसागरजी तैयार हैं और श्रद्धालु तो कब से उन्हें यहाँ सुनने का इंतजार कर रहे हैं। देश-विदेश से लाखों श्रद्धालु भगवान बाहुबली के दर्शन करने और तरुणसागरजी को सुनने के लिए पहुँचने वाले हैं। श्रवणबेलगोला खुद को युद्ध स्तर पर तैयार कर रहा है, उन महान क्षणों में लाखों श्रद्धालुओं की मेजबानी के लिए। ऐसा करते हुए यह छोटा-सा कस्बा महानगरों को भी मात देने के 'मूड' में है।

— ○ —

ये कौन आ रहा है ?

वे एक सनसनी हैं। महामस्तकाभिषेक समारोह का औपचारिक उद्घाटन होने में अभी कुछ समय शेष है। भट्टारकजी के शब्दों में महामस्तकाभिषेक समारोह तो 'उनके' आते ही शुरू हो गया लगता है। पिछले कई दिनों की तरह आज भी कई आचार्य और मुनिगण श्रवणबेलगोला पहुँचे तो उनकी अगवानी में शाम को मठ के सामने स्थित पाडाल में समारोह हुआ। समारोह अपने शबाब पर था कि सभी में अचानक हलचल शुरू हो गई। मंच पर बैठे आचार्य और मुनिगण भी सिर उचका-उचकाकर एवं श्रोतागण पीछे मुड-मुड़कर देखने लगे। ये कौन आ रहा है, जिसके लिए इतनी उत्सुकता ?

जवाब भक्तों द्वारा किए गए जयघोष ने ही दे दिया कि मुनिश्री तरुणसागरजी आ रहे हैं। वहीं कृशकाय काया, चारों ओर घूरती चपल आँखें और तेज चाल। उनके साथ चलने वालों को चलना नहीं दौडना पड़ता है। वे सभामंडप के पास पहुँचे ही थे कि श्रोता व कई मुनिगण खडे हो गए। उद्घोषक को कार्यक्रम बीच

में रोककर यह बताना पड़ा कि क्रान्तिकारी संत पधार चुके हैं। मंच पर बड़े-बड़े आचार्यों और मुनियों के मौजूद होने के बावजूद दिगम्बर परम्परा के सर्वोच्च आचार्य श्री वर्धमानसागरजी ने इस युवा मुनि को एकदम अपने करीब जगह दी। उनके आते ही सुस्त सभा में जैसे जान पड गई।

श्रोता ही नहीं मुनि व आचार्यगण एवं आर्यिका माताएँ भी उन्हें सुनने को उत्सुक दिखीं। यह उनकी वाणी का आकर्षण ही था जो उन्हें कई आचार्यों से भी अहम स्थान दिला रहा था। जैसे ही उनका सम्बोधन शुरू हुआ, श्रोताओं की रीढ़ सीधी हो गई और मन एकाग्र ! आर्यिकाएँ, मुनि और आचार्य बहुत उत्सकुता से प्रतीक्षा कर रहे थे कि आज तरुणसागरजी क्या बोलने वाले हैं। आमतौर पर अपनी सभाओं में अविकल एक घंटा बोलने वाले इस संत के पास आज पाँच-सात मिनट ही थे। पर इन पाँच मिनट में ही उन्होंने पाँच घंटे चले बोझिल कार्यक्रम की बोरियत दूर कर दी।

माहौल ताजगी से भर गया। मंच पर एक मुनि ने अचरज जताया - 'अरे, इतने लोग कहाँ से आ गए ?' दूसरे मुनि ने हँसते हुए कहा- 'देखते नहीं, तरुणसागर जी बोलने वाले हैं।' तो, तरुणसागरजी के बोलने का ही ये कमाल है कि रतलाम से रोहतक, दिल्ली से दावनगिरी और बेलगाम से बेलगोला तक उन्हें श्रोताओं का टोटा नहीं पड़ता। आमतौर पर हिन्दी से परहेज करने वाले कन्नड़ भाषी भी उनके प्रवचन कान लगाकर सुनते हैं। वे भी यहाँ सुनने की पूरी तैयारी से आए हैं। देखें किसके हिस्से क्या आता है... !

—) —

दौड़ता-हाँफता श्रवणबेलगोला

श्रवणबेलगोला इस समय दुनिया का सभवत सबसे महँगा स्थान बन गया है। इस छोटे-से कस्बे की तो जैसे उडकर लग गई है। इस कस्बे की किस्मत बारह साल में एक बार ही जागती है जब भगवान बाहुबली का महामस्तकाभिषेक समारोह आयोजित होता है। इस समारोह के दौरान ही यह कस्बा हॉफता-दौड़ता हुआ मेजबानों की जरूरतों की पूर्ति करने और उनकी जेबों का बोझ कम करने का 'पुण्य कार्य' भी बहुत चपलता से करता दिखता है।

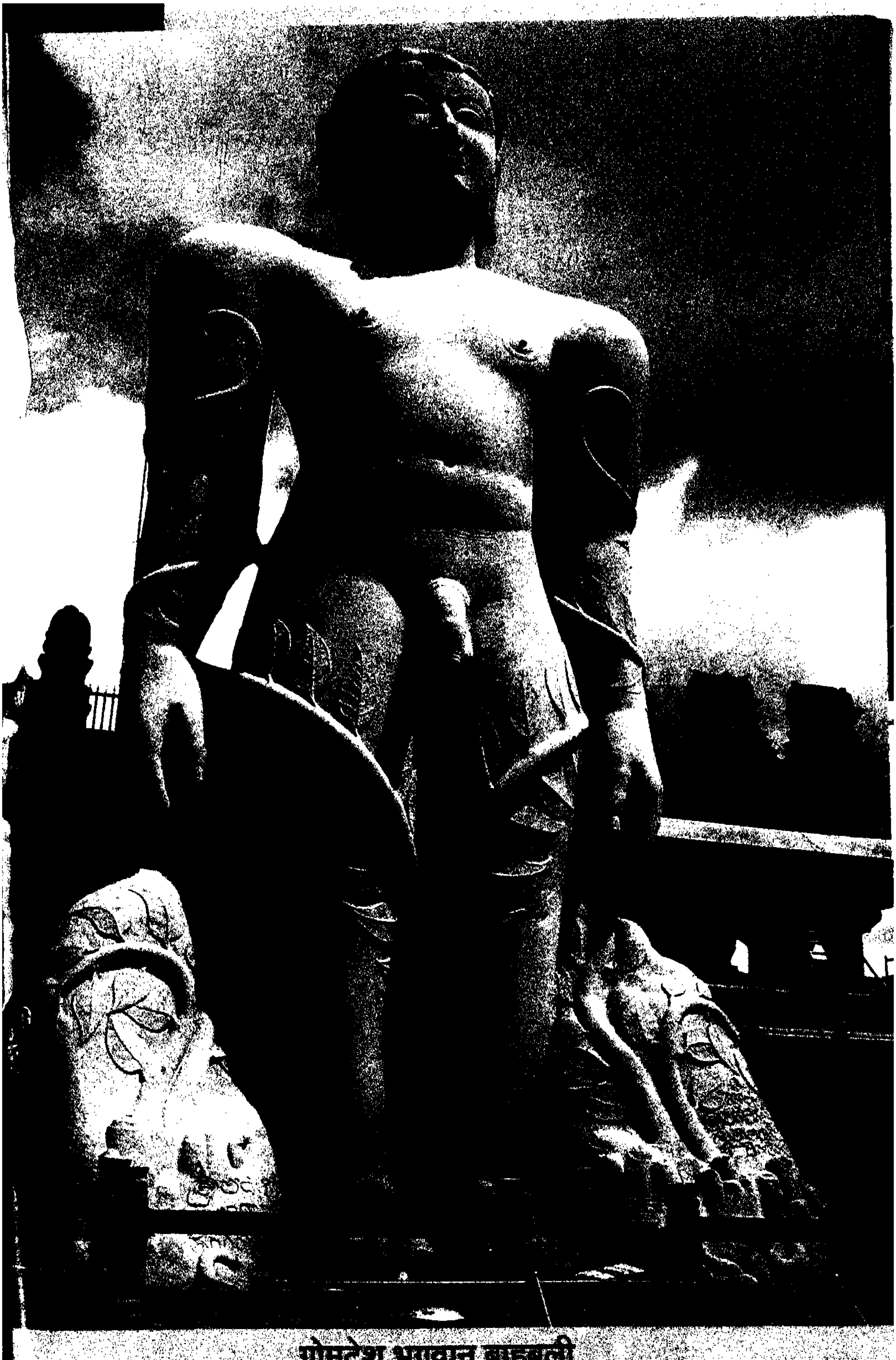
पच्चीस हजार रुपये से लेकर एक लाख रुपये महीने तक पर मकान किराए पर मिल रहे हैं। महँगी सब्जियाँ महँगी चाय और महँगी हर सुविधा। जैसे यह कस्बा आने वाले बारह सालों का इतजाम इस एक माह में ही कर लेना चाहता है। मगर इसके लिए कस्बे को दोष देने के बजाए यहाँ के लोगों की उद्यमशीलता की पीठ थपथपाई जानी चाहिए। यह श्रवणबेलगोला की माटी की ही उद्यमिता है कि यहाँ की एक महिला

पान की दुकान चलाने जैसा परम्परागत पुरुष प्रधान कार्य करते दिख जाती है। वे हर कहीं होती हैं। कोई फुरसत में ही नहीं दिखता। लोग बारह साल में एक बार होने वाले महामस्तकाभिषेक समारोह में आने के लिए क्या-क्या नहीं करते ? पर यहाँ के कुछ लोग इस दौरान अपने मकान भारी-भरकम भाड़ों पर चढ़ाकर आसपास रहने चले जाते हैं।

जैन धर्म का प्रमुख तीर्थस्थल होने के बावजूद यहाँ एक भी अच्छा होटल न होना बड़े अचरज की बात है। नारियल के पेड़ों के झुरमुटों और छोटी-छोटी प्राकृतिक झीलों की खूबसूरती समेटे यह कस्बा हर बारहवें साल चमन हो जाता है। इसका पोर-पोर चमक उठता है और गली-कूचों तक में नई सड़कें बन जाती हैं। इस बार के महामस्तकाभिषेक समारोह का आधारभूत ढाँचा खड़ा करने के लिए केन्द्र व राज्य सरकार ने थोड़े-बहुत नहीं बल्कि पूरे 180 करोड़ रुपये खर्च किए।

इतनी भारी-भरकम राशि के निवेश में नियोजन का दोष कहीं-कहीं दिख जाता है अन्यथा इस राशि से कई स्थायी किस्म के कार्य किए जा सकते हैं। फिलहाल श्रवणबेलगोला को इस तरह के किसी सुझाव को सुनने की फुरसत नहीं है। वह तो भगवान बाहुबली की भक्ति और दूर-दूर से आने वाले भक्तों की सेवा में दिन-रात जुटा हुआ है...अनथक।

— ◌ —

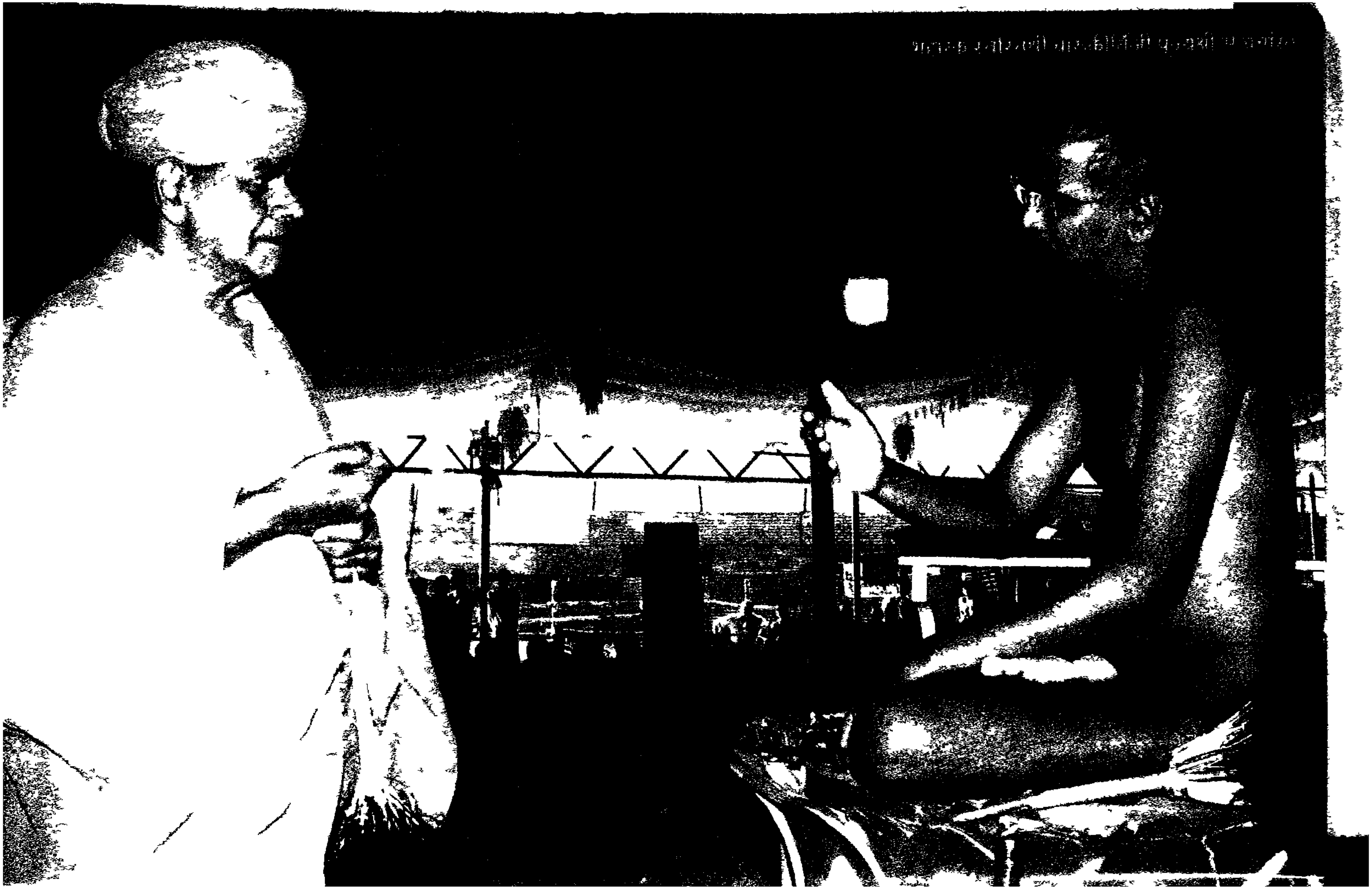


गोमटेश भगवान बाहुबली


गुरु मंत्र दीक्षा में पूज्यश्री



राष्ट्रपति डॉ. ए पी.जे. अब्दुल कलाम क्रांतिकारी संत मुनिश्री तरुणसागरजी से आशीर्वा[illegible]
श्रवणबेलगोला, 22 जन., 06



संत का बसंत

बसंत ने बिगुल फूँक दिया है... और प्रकृति ने इसे बखूबी सुन भी लिया है। वह मुस्कुराने लगी है। उसकी हवा में खुशबू है। आशा है। गुदगुदी है और है सुखद भविष्य की आहट! इस आहट को प्रकृति ही नहीं एक संत ने भी सुन लिया है। संत ने केवल सुना ही नहीं बल्कि बसंत का साथ निभाने का वचन भी दिया है। इस संत का मानना है कि बसंत के आने से प्रकृति मुस्कुराती है और संत के आने से संस्कृति मुस्कुराती है। जाहिर है संस्कृति और प्रकृति की साथ-साथ परवाह करने वाले ये संत श्री तरुणसागरजी ही हो सकते हैं।

उनकी निगाहों से कुछ भी छुपा नहीं रहता। उनकी आँखें अनदिखे को भी देख लेती हैं और उनका दिमाग अबूझ को भी बूझ लेता है . नाक सब कुछ सूँघ लेती है और कान तो जैसे वे फेंककर रखते हैं। सौ मीटर दूर खड़े होकर भी आप क्या बात कर रहे हैं, केवल मुद्रा देखकर ही वे मजमूँ भाँप लेते हैं। आदमजात का मजमूँ पढ़ने की अदा तो कोई उनसे सीखे।

बसंत आने को है पर इस संत की सभाएँ हमेशा बासंती खुशबू से महकती रहती हैं। बसंत की बयार गुदगुदाती है और इस संत की बातें। वे जानते हैं कि श्रद्धालुओं के सिर पर पहले ही बहुत से बोझ हैं। इसलिए वे हँसी बिखेरते चलते हैं। अपने भक्तों के सारे दुःख-दर्दों को वे खुद के कमंडल में डुबो देते हैं और भक्तों के दिलों में खुशी की खूबसूरत इबारत लिख देते हैं। उन्हें सुनने वाले तो दुःख से भी दोस्ती निभाने का हौंसला जुटा लेते हैं।

यह संत गुदगुदाता ही नहीं, झकझोरता भी है। सोते हुए लोगों को जगाना उनका प्रिय शगल है। वे कहते भी हैं - 'सूखे को हरा करना बसंत का काम है और मुर्दों को खड़ा करना संत का।' ऊपरी जिम्मेदारी और जोश के साथ कई मोर्चों पर धर्म के परम्परागत मार्गों पर प्रश्नचिन्ह लगाते चलते हैं और अपने सुनने वालों से भी यह अपेक्षा करते हैं कि वे जीवन की हर पगडंडी पर चलने से पूर्व प्रश्न चिन्ह जरूर लगाएँ। नित बदलते समाज में वे धर्म को भी बदलने की सीख देने से नहीं चूकते। वे बेहिचक कहते हैं - जब श्रेणिक और अर्जुन ने अपने प्रश्न बदल लिए हैं, तो महावीर और कृष्ण को भी अपने जवाब बदलने होंगे। अन्यथा आने वाली पीढ़ियाँ धर्म-पथ से भटक जाएँगी।' प्रवचनों में चीखकर सीख देना उनका शौक नहीं, मजबूरी है। कुंभकर्णी कानों को जगाने के लिए यह चीत्कार जरूरी है। तरुणसागरजी हमेशा कहते हैं - 'कुंभकर्णी नींद में सोए समाज को जगाने के लिए शेर जैसी दहाड और हाथी जैसी चिंघाड जरूरी है।' . तो तरुणसागरजी को सुनने के लिए अपने कान खोलकर रखिए।

—) —

मैं प्रभावित आपसे

मुनिश्री तरुणसागरजी का श्रवणबेलगोला में यह चौथा दिन है और एक महान उत्सव के लिए यहाँ आने का उत्साह वे छुपा नहीं पाते। उनकी बातों से अनायास ही यह जाहिर हो जाता है कि वे उन महान क्षणों के लिए कितने उत्सुक हैं जब भगवान बाहुबली का महामस्तकाभिषेक होते हुए वे पहली बार देखेंगे। व्यवस्थाओं से उनका कोई लेना-देना नहीं है, पर व्यवस्थाओं का जायजा लेने से वे खुद को रोक नहीं पाते। भर दोपहर में वे भ्रमण पर निकल पडते हैं कि तभी जैन मठ के पास उनका सामना भट्टारक चारुकीर्तिजी से हो जाता है। तरुणसागरजी के आक्रामक उद्बोधन से शुरू-शुरू मे आशकित रहे चारुकीर्तिजी अब मुनिश्री से खुलने लगे हैं। मुनिश्री को नमन करते हुए भट्टारकजी बोले – 'आपने तो आते ही सारे सतों का दिल जीत लिया। प्रवचन ऐसा भी हो सकता है, कल्पना से परे है। आपके आते ही लगा कि महामस्तकाभिषेक समारोह शुरू हो गया है। हालांकि उसके औपचारिक शुभारम्भ में अभी दो दिन बाकी हैं।'

भट्टारकजी से प्रभावित नजर आ रहे तरुणसागरजी ने कहा – 'आप को दो-दो महामस्तकाभिषेक समारोह के सफल आयोजन का अनुभव है। एक-एक चीज आपकी नजरों में है और निश्चय ही आपके नेतृत्व में यह तीसरा महामस्तकाभिषेक समारोह भी अब तक का सबसे सफल आयोजन होगा।' भट्टारक जी बोले – 'मुनिवर बारह साल में सब कुछ बदल जाता है। सरकारें बदल जाती हैं। कार्यकर्ता बदल जाते हैं। मीडिया बदल जाता है और परिस्थितियाँ भी बदल जाती हैं। इसलिए नई परिस्थितियों में अनुभव ज्यादा काम नहीं आते। नहीं बदलती है, तो वह है – श्रद्धा। शताब्दियों पहले भी भगवान बाहुबली के प्रति लोगों में श्रद्धा का जो आलम था, वह आज भी है और कल भी रहेगा।'

इसके बाद भट्टारकजी ने मुनिश्री तरुणसागरजी को महामस्तकाभिषेक समारोह की व्यवस्था और तैयारियों का अवलोकन कराया। उन्हें हर छोटी और हर बडी बात की जानकारी दी। कोई एक घंटे तक यह क्रम चलता रहा। भट्टारकजी की सांगठनिक व प्रशासनिक दक्षताओं से अभिभूत तरुणसागरजी बरबस ही कह उठे – 'भट्टारकजी, दुनिया मुझसे प्रभावित होती है, पर मैं आप से प्रभावित हुआ हूँ। और हाँ, मैं बिरले ही लोगों से प्रभावित हुआ करता हूँ।'

—) —

महामस्तकाभिषेक का महानायक !

ये जो भगवा वस्त्र पहने और भगवा पगडी सिर पर लिए रहते हैं, वे जगद्गुरु कर्मयोगी स्वस्तिश्री चारुकीर्ति भट्टारक महास्वामी हैं। बीते तीन युग (1970) से वे श्रवणबेलगोला धर्मपीठ के प्रमुख तथा श्रीक्षेत्र के विकास के लिए गठित एस.डी.जे.एम आई मैनेजिंग कमेटी के चेयरमैन हैं। तीन युग, कोई थोडा समय नहीं होता। इतने लम्बे समय तक इतने महत्वपूर्ण जैन तीर्थ की जिम्मेदारियों ने उन्हें अत्यन्त धीर गंभीर बना दिया है। दूर से देखने पर वे विवेकानंद जैसे नजर आते हैं। अत्यन्त विनम्र और हमेशा ओठों पर मोहक मुस्कान लिए इस शख्स को देखकर अचरज होता है कि महामस्तकाभिषेक की महती तैयारियों में दिन-रात जुटे होने के बावजूद वे कैसे परेशानियों को अपनी पेशानी से दूर रख पाते हैं। कम खाना और मुस्कुराना उनकी ऊर्जा का राज है। किसी ने उन्हें जोर से बोलते नहीं सुना और किसी ने उन्हें फुरसत में बैठे नहीं देखा। इसलिए उनसे साक्षात्कार के लिए समय निकलवाना उतना ही मुश्किल था जितना विन्ध्यगिरि पर चढ़ना।

मुनिश्री तरुणसागरजी को ओजस्वी वक्तव्य कला का अपूर्व वक्ता बताते हुए भट्टारक जी ने कहा कि वे शान्ति के लिए क्रान्ति की ज्वाला को धधकाए हुए हैं।

दो-दो महामस्तकाभिषेक करवाने के बाद अपने कार्यकाल के तीसरे महामस्तकाभिषेक समारोह को आयोजित करते हुए वे क्या बुनियादी बदलाव पाते हैं, इस सवाल के जवाब में श्री चारुकीर्तिजी बोले - 'महामस्तकाभिषेक की परम्परा में तो तब से लेकर अब तक कोई बदलाव नहीं आया। अलबत्ता साधनों में जरूर बदलाव आया है। 1981 से पहली बार पाइप का ढाँचा खड़ा कर अभिषेक के लिए प्लेटफार्म तैयार किया गया। इसके चलते अब साढ़े पाँच हजार श्रद्धालु एक साथ इस महान उत्सव के साक्षी बन सकते हैं। 1981 से 1993 के महामस्तकाभिषेक के लिए सड़कों का जाल बुना गया और इस बार तो सुविधाएं जैसे छप्पर फाडकर श्रवणबेलगोला पर बरसी हैं। पहली बार यहाँ भूमिगत ड्रेनेज सिस्टम विकसित किया गया और हर घर में पक्के शौचालय और मठ सरकार की सहायता से बनाए गए। शौचालयों के लिए लोगों को मठ की ओर से दो-दो बोरी सीमेंट और ईंट और सरकार की तरफ से पाँच-पाँच सौ रुपये की सहायता दी गई। श्रवणबेलगोला तक रेलवे लाइन बिछाई गई।'

वे चाहते हैं कि 2018 के महामस्तकाभिषेक से पहले श्रवणबेलगोला में एक लाख अतिरिक्त परिवारों के लिए सर्वसुविधा युक्त आधुनिक आवास निर्मित किए जाएँ, ताकि अस्थाई व्यवस्थाओं को जुटाने में आने वाली परेशानियों को दूर किया जा सके। वे यह भी चाहते हैं कि तब तक श्रवणबेलगोला में हेलिकॉप्टर सेवा शुरू हो जाए और हासन में आधुनिक एयरपोर्ट बन जाए। साथ ही तब तक श्रवणबेलगोला देश के सभी राज्यों की राजधानियों से रेलमार्ग द्वारा जुड जाए। इस महामस्तकाभिषेक समारोह के लिए मुनियों, आर्यिकाओं और आचार्यों की अब तक की सबसे बड़ी उपस्थिति सम्बन्धी सवाल के जवाब में उन्होंने कहा कि - यह त्यागियों की भक्ति है और उनका त्याग है। कोई यहाँ बुलाने से नहीं आता, सबको बाहुबली की श्रद्धा खींच लाती है। वे मानते हैं कि इस बार व्यापक प्रचार-प्रसार के चलते महामस्तकाभिषेक के दौरान भारी संख्या में श्रद्धालु पहुँचने वाले हैं।

उन्होंने प्रचार-प्रसार का 1910 का अनूठा उदाहरण बताया कि तब महामस्तकाभिषेक वाले दिन कबूतर के जरिए मद्रास समाचार भेजा गया था, जो अगले दिन समाचार पत्रों में छप भी गया। मुनिश्री तरुणसागरजी को लेकर उनके मन में जबरदस्त आदर व आकर्षण है। भट्टारक जी ने कहा - 'तरुणसागरजी शांति के लिए क्रान्तिकारी भाषण देते हैं। उनका ध्येय शांति है मगर मार्ग क्रान्तिकारी है। उनके पास ओजस्वी

वक्तव्य कला की वह अनूठी देन है, जो अन्यों में प्राय: नहीं देखी जाती। आचार्य श्री विद्यानंद जी महाराज ने मठों व मंदिरों से बाहर आकर जनता के बीच प्रवचन करने की जो परम्परा शुरू की थी, मुनिश्री तरुणसागरजी आज उस परम्परा के सर्वोच्च प्रतिमान बन गए हैं।' चारुकीर्तिजी ने जोर देकर कहा कि – 'यदि त्याग है और वक्तव्य कला नहीं है तो ऐसा त्याग किसी काम का नहीं और वक्तव्य कला है मगर त्याग नहीं, तो ऐसी वक्तव्य कला भी बेकार है। मुनिश्री तरुणसागरजी के पास संयोग से त्याग और वक्तव्य कला दोनों ही हैं, जो उन्हें देश का सर्वाधिक लोकप्रिय संत बनाती हैं।'

— ○ —

देखो कान न देना

इस संत के सम्मोहन से कौन बच पाया है, जो राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम बच पाते ? यह मुनि तो बस मन मोहने के लिए ही बना है। एक बार उनकी बातों पर कान दिए नहीं कि आप गए काम से। आपके मन की भैंस, तरुण 'सागर' के पानी में जाना ही जाना है। मजा यह है कि इस सागर में जितने गहरे उतरते जाइए, उतना ही डूबने का खतरा कम होता जाता है। वे आपकी सारी चिन्ता अपनी पोटली में बाँध लेंगे और आपसे कहेंगे - 'जाओ, जी भरकर जी लो ! मैं हूँ ना।'

तो तरुणसागरजी हैं ना। और यदि वे हैं तो हर कार्यक्रम हिट है। और महामस्तकाभिषेक महोत्सव तो सुपरहिट है। वे कार्यक्रमों की सफलता की जरूर शर्त बन गए हैं। इसलिए जब शुभारम्भ समारोह में उद्‌बोधन के लिए उनका नाम पुकारा गया, तो हजारों-हजार श्रद्धालुओं में रोमांच की लहर दौड़ गई। इस हलचल को देख राष्ट्रपति डॉ. कलाम से रहा नहीं गया, तो उन्होंने भट्टारक चारुकीर्तिजी से पूछा -'माजरा क्या है ?' चारुकीर्तिजी ने जो जवाब दिया, सो तो दिया

ही, मगर जल्द ही राष्ट्रपति जी माजरा भाँप गए, जब तरुणसागरजी के मुँह से सरस्वती का निर्झर झरना फूट पड़ा। अपने हर तीसरे वाक्य पर श्रद्धालुओं की तालियाँ लूटने वाला यह संत राष्ट्रपति से भी 'वाह-वाह' कहलवा बैठा।

वे क्रान्तिकारी संत कहे जाते हैं, पर उनकी यह क्रान्ति तो शांति के लिए है। वे आग उगलते हैं, पर यह आग मानवता नहीं, उसकी बुराइयों को झुलसाती है। वे कठोर प्रहार करते हैं, पर उसकी मार विसंगतियों और विषाद पर पड़ती है। उनकी जुबान की 'आरी' जब चलती है, तो किसी से 'यारी' नहीं करती। यह आरी आदमी पर नहीं बल्कि उसके अहम और अहंकार पर चलती है। दंभ को दुत्कारने वाला यह मुनि व्यर्थ के फसादों पर फुफकारता भी है। लालच और लिप्सा को लताड़ने वाला यह संत दया और धैर्य को दुलारता भी है। सच्चाई को शाबाशी देता है और झूठ को झकझोरता है। साहस को सहलाता है और दुस्साहस का दम निकाल देता है। सादगी को सहेजता है और दिखावे की दुम मरोड़ देता है। दरअसल, तरुणसागरजी क्रान्ति की कठोर कहानी कहते हुए भी शांति की शहनाई बजाते चलते हैं। इसीलिए, कभी-कभी कर्कश होते हुए भी वे देश के सर्वाधिक कर्णप्रिय संत भी हैं। नहीं, तो यह बच्चों का खेल नहीं जो उन्हें श्रवणबेलगोला के महामस्तकाभिषेक समारोह का 'हीरो' मान लिया गया है। श्रवणबेलगोला में देश के जाने-माने विद्धान व कठोर साधकों, आचार्यों, मुनियों के बीच एक वे ही हैं जिन्होंने श्रोताओं की श्रवणेन्द्रियों का 'पेटेंट' करा लिया है। सब कानों पर उनका ही कब्जा है और यह बात कई लोगों को कचोटती भी है। जो यदा-कदा भड़ास के रूप में सुनाई भी पड़ती है। पर इसे यह संत ही नहीं खुद श्रद्धालु भी अनसुना कर देते हैं। ... वे 'अनसुनों' के लिए ईर्ष्या का कारण भी बनते हैं और अपने सुनने वालों के लिए अभिमान का भी। अब इसका क्या करें... वे हैं ही ऐसे।

— ○ —

जो सोते को जगा दे

यह बाहुबली को एक कवि की काव्याजलि थी। बाहुबली के चरणों में खडा यह कवि उनकी गाथा को सस्वर गा रहा था और एक हजार पच्चीस साल पहले की घटनाए कानों के जरिए सुनने वाले लोगों के दिलो और ऑखों में पुन जीवित हो रही थीं। कविता की पक्तियों में इतिहास जी रहा था और वर्तमान को अपने विराट अतीत का साक्षात्कार करा रहा था। कुछ भी पहले से तय नहीं था कि पता नहीं क्या हुआ कि मुनिश्री तरुणसागरजी का कवि मन जाग उठा। आचार्य श्री विरागसागरजी समेत कई मुनि व आर्यिकाए भी बाहुबली के चरणों में बैठकर साथ-साथ वदना कर रहे थे। परम्परागत वदना-अर्चना के बाद आचार्य श्री विरागसागरजी ने बाहुबली को शब्दाजलि अर्पित करने का आग्रह श्री तरुणसागरजी से किया। उनका मन मचल रहा था कि एक बार बस एक बार मुनिश्री बाहुबली के चरणों में उनकी गाथा का बखान दर दें। मुनिश्री आचार्य का आग्रह टाल न सके और बाहुबली के चरणों के बीच खड़े हो गए।

कुछ ही क्षणों में सब मौन थे, मुखर थे तो बस तरुणसागरजी। वे एक-एक घटना को एक-एक पद के जरिए चित्रित कर रहे थे। मुनि-श्रावक सब अचंभित थे। एक श्रेष्ठ प्रवचनकार और इतना उत्कृष्ट कवि। यदि आँख बंद करके सुनो तो लगे कि कोई जाना-माना कवि कविता पाठ कर रहा है। कान बंद कर लो तो भी शब्द सीधे दिल में उतरने लगे। सीधी-सादी भाषा में अत्यन्त प्रभावी अंदाज से गोमटेश गाथा गाने का यह बिल्कुल अभिनव-अदांज था। भरत, चामुंडराय, गुल्लिका-अज्जी, सुनंदा समेत सारे पात्रों को जीवंत कर बाहुबली के विराट व्यक्तित्व को उभारना कोई हँसी-खेल नहीं था। इसलिए जब यह कविता पूरी हुई तो हर दिल में प्रशंसा और संतुष्टि के भाव थे।

तरुणसागरजी कुछ संकल्प लेकर पहाड़ पर आए थे, यह तो तभी लग गया था, जब वे बाहुबली के दर्शन के लिए सुबह-सवेरे सरपट चले जा रहे थे। जनवरी के आखिरी दिन का सूरज आसमान के आँगन में अभी-अभी उतरा ही था कि तरुणसागरजी गोमटेश के गगनचुंबी पहाड़ पर चढ़े जा रहे थे। पहाड़ पर चढ़ता उनका हर कदम, हमकदम था - आस्था और अभिषेक का। मुनिश्री तो ऐसे सरपट चढ़े जा रहे थे, गोया वे पहाड़ चढ़ नहीं, उतर रहे हों। कहाँ से मिलती है उन्हें इतनी ऊर्जा ? एक वक्त आहार और उसी एक वक्त पानी आखिर कितना दम भर सकता है ? पर हर बाहरी अवलंबन का अभिमान तोड़ना तो जैसे तरुणसागरजी का पसंदीदा शगल है। उनकी आत्म-ऊर्जा हर बाह्य ऊर्जा पर भारी है। इसलिए दिन भर भोजन-पानी लेते रहने वाले भी पहाड़ चढ़ते थक रहे थे और तरुणसागरजी थे कि चलते और चढ़ते हुए मानो सबको चिढ़ा रहे थे - है कोई जो मुझसे मुकाबला कर सके... ?

सारा जमाना जानता है कि उनसे मुकाबला बस एक ही शख्स कर सकता है और वह शख्स वे स्वयं हैं। जिसने अपना सर्वस्व उस सर्व शक्तिमान के आगे हार लिया हो, उसे कौन हरा सकता है ? पर भक्तों को हरा रही थीं, मुँह चिढ़ा रही थीं, पहाड़ को काटकर बनाई गई छोटी-छोटी सीढ़ियाँ। हर ऊपर वाली सीढ़ी जैसे कह रही थी - चढ़ो-चढ़ो, मैं कब से तुम्हारा ही तो इंतजार कर रही थी। सीढ़ियाँ आस्था को ही नहीं टटोल रहीं थीं, वे जाँच रही थीं - किसमें कितना है दम ! भक्तों का दम भले ही फूल जाए पर दिल तो बाहुबली के दर्शन किए बिना मानने वाला नहीं। पैर भले थककर जवाब देने लगें, पर पाद-पूजा तो करनी ही है।

पहाड़ पर चढ़ता हर कदम यही संकल्प दोहराता अगली सीढ़ी पर चढ़ता जाता और मुँह चिढ़ाती सीढ़ियों का मुँह बंद करता जाता। ये सीढ़ियाँ भी कितनी भाग्यशाली हैं, कौन उनके स्पर्श से अछूता रहा ? किसने उन पर बैठकर आगे बढ़ने का दम नहीं बटोरा ?

बड़े-बड़े आचार्य, मुनि, उपासक और महान भक्त, सब इन्हीं सीढ़ियों के साथ चढ़ते। क्या बड़े, क्या बूढ़े, क्या बच्चे, क्या जवान, सबके लिए बाहुबली तक पहुँचने का माध्यम वे ही थीं। इसलिए उनसे अधिक पुण्यवान कौन होगा ? कब इन सीढ़ियों ने कहा – भक्तों थोड़ा जम जाओ, तनिक मैं भी तो विश्राम कर लूँ। कभी न थकने वाली ये सीढ़ियाँ मुड़-मुड़कर श्रवणबेलगोला का नैसर्गिक सौन्दर्य निहारने के लिए भी कहती हैं, ताकि भक्तों का उत्साह बना रहे। दम भर जाए तो आँखों को जरा नीचे की ओर मोड़ लीजिए। खूबसूरत सरोवर! हर तरफ पनीली झीलें, नारियलों के पेड़ों के झुरमुट! सामने चन्द्रगिरि! हर तरफ हरियाली, चहुँ ओर खुशहाली! जन्नत का नजारा और कैसा होता होगा ? खूबसूरती निहारते हुए आपका दिल कभी नहीं भरेगा। दिल लगाने में मत लग जाइए, जरा पलट भी जाइए। वो देखिए, तरुणसागरजी आपसे बीस सीढियाँ आगे चले गए हैं और पलटकर मुस्कुरा रहे हैं।

वे चढ़ने वालों के लिए ही नहीं उतरने वालों के लिए भी जबर्दस्त आकर्षण का केन्द्र है। हर कोई उन्हें पास से निहारना, छूकर देखना चाहता है। क्या यही वह संत है, जो लोगों को हिला देता है ? जिस दुबली-पतली काया को हवा भी हिला दे, कैसे वह काया जमाने को झकझोर देती है ? इस काया के भीतर आखिर है क्या, जिसके पीछे दुनिया पागल है ? इसकी जुबान में ऐसा क्या है, जो झट कानों को अपना गुलाम बनाए लेती है? इसके दिल में कौनसा सागर उमड़ता है, जो भावनाओं का महासागर लहरा देता है ? इन आँखों में ये कैसी चमक है, जो असंख्य आँखों को नमा देती है ? उनके चरणों में ऐसा क्या है, जिस पर दुनिया माथा टेकती है ?

जो सोते को जगा दे, बैठों को उठा दे, उठों को दौड़ा दे, निराशा को आशा दे, आँसू को आह्लाद में बदल दे, उदासी को मुस्कान बना दे और अधर्म को धर्म की शरण में ले आए, उसी का नाम तो तरुणसागर है। वही तो वह कबीर है, जो सदियों बाद बहरे भारत के कान झाड़ रहा है। वही तो वाल्मीकि है, जो गूंगों को जुबान दे रहा है। वही तो वह विवेकानंद है, जो बुद्धि की बयार देश के आँगन में बहाकर भारत को फिर विश्व गुरु बनाने की तैयारी में जुटा है। वही तो वह विनोबा है, जो कहकर नहीं, करके, त्याग का पाठ पढ़ा रहा है। शुभ-संकल्पों, दृढ-निष्ठाओं और अटल आस्था से जो जैन ही नहीं, अजैनों का भी 'अवतार पुरुष' बन चुका है। अगली सदी उसे, उस सदी का चमत्कार नहीं कहे, तो यह भी चमत्कार ही होगा...।

— o —

महफ़िलों का मायावी

अद्भुत। इस घटना को इसके सिवाय कोई दूसरा शब्द बयान नहीं कर सकता। इतिहास ऐसी ही अभूतपूर्व इबारतों से लिखा जाता है। धर्म-सभा अपने सर्वोच्च आचार्य के उद्‌बोधन के पहले ही उठ जाए, ऐसा कब हुआ है। इसलिए आज की तारीख (29 जनवरी) 'महफिलों का मायावी' के नाम लिखी जाएगी। रविवार को श्रवणबेलगोला महामस्तकाभिषेक समारोह का स्थल खचाखच भरा था। फिर भी हर तरफ शाति थी। गूज रही थी, तो एक आवाज। मुश्किल यह है कि यह आवाज जब अवतरित होती है, तो श्रोता कुछ और सुनना भी नहीं चाहते। आवाज और श्रोताओं के बीच में कोई आना भी नहीं चाहता था। हजारों दक्षिण भारतीय श्रोता चाहते थे कि आवाज अनवरत उनके कानों में पड़ती रहे, पर उसे कभी तो चुप होना ही था। जैसे ही यह आवाज मौन हुई, अद्भुत इसी के बाद घटा। आवाज का यह आलमपनाह वही संत था, जिसे लोग क्रान्तिकारी कहते हैं। मगर उनके बाद दिगम्बर परम्परा के सर्वोच्च आचार्यों में से एक श्री वर्धमानसागर

का प्रवचन था, जिन्हें स्वयं तरुणसागरजी अपार सम्मान देते हैं। मगर जनता तो जैसे तरुणसागरजी के सिवाय किसी को सुनना ही नहीं चाहती थी। सो जैसे ही तरुणसागरजी का प्रवचन खत्म हुआ। उसके अगले ही पल पूरा पांडाल उठ खड़ा हुआ। लाउडस्पीकर पर उद्बोधन किया जा रहा था - 'बैठिए' आचार्य श्री वर्धमानसागरजी का प्रवचन होने वाला है, पर कोई सुनने वाला नहीं था। यह देख स्वयं आचार्यवर ने प्रवचन नहीं करने का मन बना लिया। वे तरुणसागरजी से बोले - 'कभी पुष्पदंतसागर जी ने कहा था कि तरुणसागरजी को सुनने के बाद तो लोग मुझे भी सुनना पसंद नहीं करते। आज मैं कहूंगा कि तरुणसागरजी को सुनने के बाद लोग किसी को भी सुनना पसंद नहीं करते।' भट्टारक चारुकीर्ति स्वामीजी ने आचार्य श्री वर्धमानसागरजी से प्रार्थना की कि कल से मुनिश्री के प्रवचन सबसे आखिर में रखे जायें, आचार्यों के भी बाद। मुनिश्री के प्रताप को देखकर मंच पर मौजूद 200 से अधिक मुनि-आचार्य आश्चर्यचकित थे।

मगर तरुणसागरजी दु:खी थे। वे इस अपराध-बोध को मन में लिए बैठे थे कि उनके कारण आचार्यश्री का उद्बोधन नहीं हो पाया। इसलिए बोले - 'महाराज मुझे बहुत बुरा लग रहा है', ऐसा नहीं होना चाहिए। आचार्यश्री ने उदार भाव दिखाते हुए तरुणसागरजी को आशीर्वाद दिया और विनोद करते हुए महाराज श्री चारुकीर्तिजी से बोले - 'अब आगे से तरुणसागरजी के प्रवचन सबसे आखिर में रखे जाएंगे।' आचार्यश्री की उदारता ने सारा वातावरण प्रफुल्लता से भर दिया। मगर तरुणसागरजी अब भी आहत थे। वे जाते-जाते आचार्य श्री विरागसागरजी से बोले - 'महाराज मुझे दु:ख है कि ऐसा हुआ।' श्री विरागसागरजी तत्काल बोले - 'नहीं तुम्हें ऐसा नहीं सोचना चाहिए। तुम्हारे प्रभाव के बारे में हम सबने सुना है। अब तक तो सुना था, अब प्रत्यक्ष देख चुके हैं। इसलिए तुम्हें अफसोस करने की जरूरत नहीं है।' आचार्य श्री वर्धमानसागरजी ने श्री तरुणसागरजी को स्नेह देते हुए कहा - 'तुम्हें बंगलोर के लोग छोड़ने वाले नहीं। तुम्हारी महावीर जयंती इस बार बंगलोर में कराकर मानेंगे।' भट्टारकजी कब चुप रहने वाले थे। वे बोले - 'महाराज हम इन्हें छोडे, तब ना। हम श्रवणबेलगोला में ही इन्हें महावीर जयंती तक रोके रखेंगे।' फिलहाल तो महामस्तकाभिषेक तक सारे श्रद्धालु जैसे तरुणसागरजी को सुनने के लिए ही रुके हुए हैं। विंध्यगिरि और चन्द्रगिरि भी चुप लगाकर उन्हें सुनने में मशगूल हैं।

—) —

और बाहुबली मुस्कुरा उठे

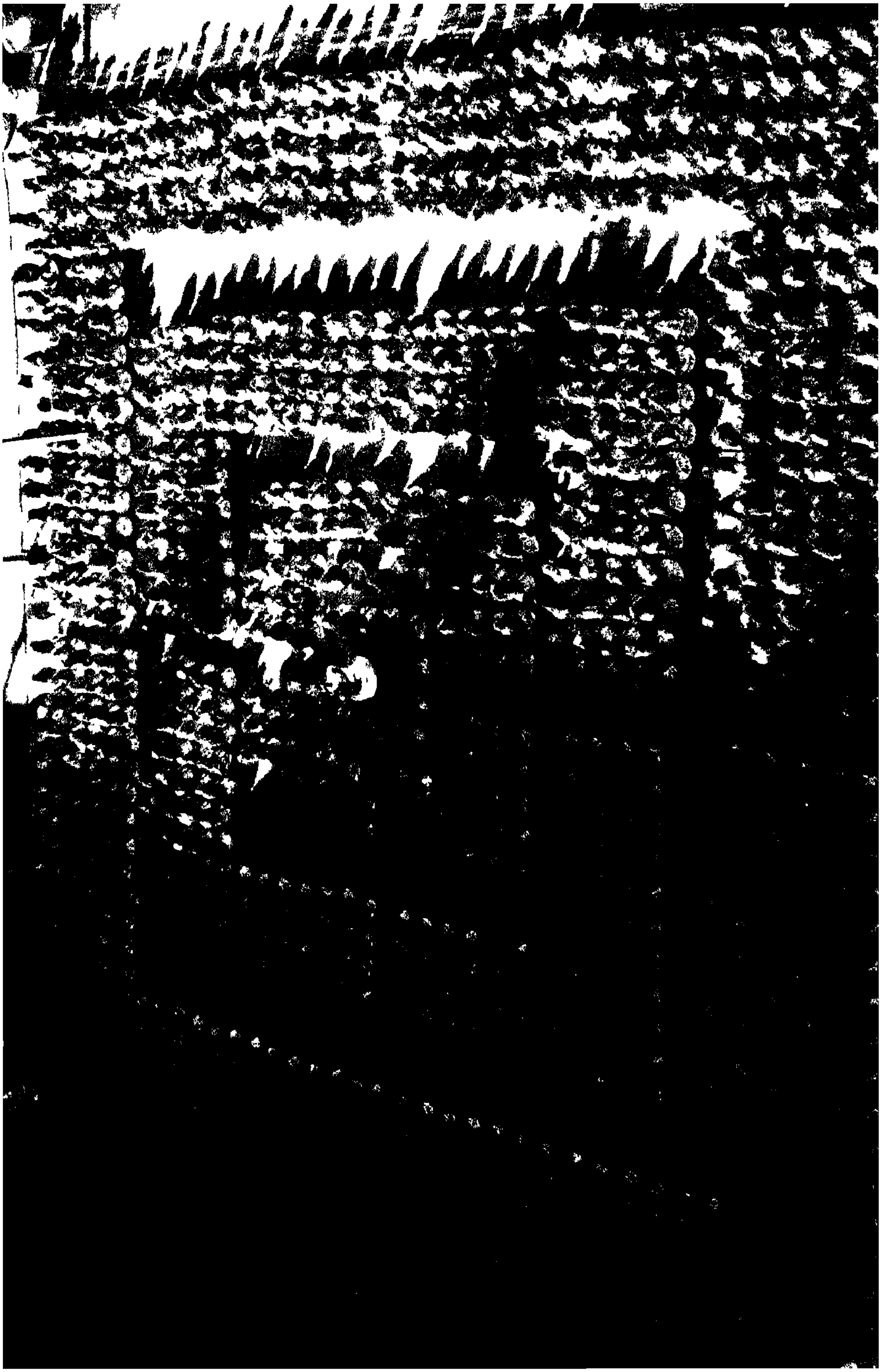
और वह दिन आ गया, जिसके लिए पूरा एक युग, यानी बारह बरस इंतजार करना पड़ता है। बाहुबली के महामस्तकाभिषेक का दिन। जिसके लिए श्रवणबेलगोला नख-शिख श्रृंगार करके दुल्हन की तरह सजा बैठा था। जिसके लिए 180 करोड रुपये खर्च करके जरूरी सुविधाएँ मुहैया कराई गई थीं। जिसके लिए लाखों श्रद्धालु दुनिया भर से श्रवणबेलगोला पहुँचे थे। बुधवार के दिन प्रात: 10.34 बजे का मुहूर्त निकला और महामस्तकाभिषेक के अनुपम दृश्य को निहारने के लिए साधु-साध्वियाँ, भक्तों के जत्थे विंध्यगिरि की ओर बढ़ने लगे। पहाड का पोर-पोर अपने अधिपति की आराधना में डूबा हुआ खुद भी उस महान दृश्य को देखने के लिए लालायित था। सीढ़ियों पर पैर नहीं बल्कि संकल्प चढ़ते जा रहे थे - 'बिना थके, बिना रुके, आज तो बस बाहुबली के सामने जाकर ही रुकना है।' ऐसा हुआ भी। बच्चे-बड़े, जवान-बूढ़े सबके सब बाहुबली के सामने पहुँचकर ही दम लेते थे। ... और एक बार बाहुबली को निहार लिया तो सारी थकान

भगवान की स्मित मुस्कान के साथ ही तिरोहित हो जाती। भक्तों के चेहरे ही नहीं उनके दिल भी मुस्कुराने लगते।

मगर व्यवस्थापकों के चेहरों से मुस्कान गायब थी। उनके माथे पर शिकन थी और आवाज में तनाव साफ झलक रहा था। कलशधारियों द्वारा कलश समर्पित करने का व्यवस्थित क्रम था, मगर ऐन वक्त पर दोनों ओर की व्यग्रताओं के चलते वह व्यवस्था थोड़ी गडबड़ा गई। ख़ैर जब पहला कलश बाहुबली के माथे पर ढुलका और उसमें से अमृत जल बाहुबली के मस्तक पर झड़ा तो भक्तों ही नहीं साधु-साध्वियों में अपार हर्ष की लहर दौड़ गई। उनके हाथ ऊपर उठ गए और उनकी आँखों में उस महान उत्सव का दृश्य हमेशा-हमेशा के लिए समा गया।

जल धारा जब बाहुबली के चेहरे को पूरी तरह भिगो गई तो ओठों की मुस्कान जैसे और खिल गई। चेहरे की चमक बढ गई और विभिन्न मंचों पर महोत्सव की मस्ती थिरकने लगी। थिरकन हर कहीं थी, क्योंकि अधिकतर आँखें, यह दृश्य अपने जीवन में पहली बार देख रही थीं। कहते हैं यह दृश्य भाग्यशाली लोगों को ही नसीब होता है और महोत्सव के पहले दिन पहाड़ पर मौजूद पाँच हजार लोगों का भाग्य तब सचमुच जगमगा गया, जब दुग्ध-धवल-धारा ने महामूर्ति को स्पर्श किया। बाहुबली तो जैसे श्वेत-सौंदर्य का जीता-जागता प्रतिमान बन गए। दूध की श्वेत धाराओं ने उनके भावों को जुबान दे दी। बाहुबली को दुग्ध-धवल पोशाक में देखना एक अद्भुत अनुभव था। दूध में भगवान बाहुबली नहा रहे थे और भक्तों के मन का कलुष धुलता जा रहा था। मन भी नीर-क्षीर हो चले और कई आँखों में आँसू सज गए। महात्माओं की साधना सजीव हो उठी और उन्हें मनमाँगी मुराद मिल गई। भक्ति का भाल दमक उठा और आस्था की अठखेलियाँ पूरे पहाड पर मचलने लगीं। हे भगवान। बाहुबली इतने खूबसूरत पहले कब दिखे थे ? हर कोई चाहता था भगवान की श्वेत-धवल मूरत अपने मन में हमेशा के लिए बसा ले। पर भगवान तो आज भक्तों को एक अलग ही दुनिया में ले जाने वाले थे। एक ऐसी दुनिया में,जो आलौकिक हो, जो रंगों से भरी हुई हो।

और यह दुनिया आनन्द से सराबोर कर देने वाली थी। बाहुबली कभी नारियल पानी से तो कभी गन्ने के रस से 'नख-शिख' नहा जाते । अब बारी है उनके कल्क चूर्ण से अभिषेक की। ये क्या... बादलों का समुद्र उमडा और सफेद आभा ने बाहुबली को ढक लिया। जो बाहुबली एक हजार पच्चीस साल से अडिग खडे हैं, वे आज बादलों की ओट से झाँकते दिख रहे थे। जैसे जादू चल रहा था। मायावी अपनी माया दिखा रहा था। मजा यह है कि वह हर रूप में पहले से अधिक आकर्षक लग रहा था। अब उन्हें हल्दी चढ़ने वाली





आचार्य श्री वर्धमानसागरजी एवं क्रांतिकारी संत मुनिश्री तरुणसागरजी के सानिध्य में उपराष्ट्रपति श्री भैरोसिंह शेखावत द्वारा उद्बोधन.
6 फर., 06 श्रवणबेलगोला






ऐतिहासिक पद-या



क्रांतिकारी संत के श्रवणबेल[illegible] में [illegible] प्रवेश पर पूज्य आचार्य श्री वर्धमानसागरजी, आ. श्री विरागसागरजी, आ. पद्मनंदीजी, आ. [illegible], आ. श्री [illegible] आदि आचार्य मुनि [illegible], 18 [illegible],08

थी... बेशक आज उनकी बारात सजी थी और बाराती देश-दुनिया से, पास-दूर से आए थे। बादलों की ओट में अटे बाहुबली जब पुनः प्रकट हुए तो उन्हें हल्दी चढ़ रही थी। अभी जो प्रतिमा दूर आसमान में विराजी लगती थी, भक्तों को वह प्रतिमा अब अपनी-सी लगने लगी। उनके तारणहार को पीला रंग चढ़ गया था। पीताभ बाहुबली जैसे कामदेव को भी मात देने पर आमदा थे। इस रंग ने उनके अंग-अंग की कोमलता और कठोरता दोनों को ही उभार दिया था। ये क्या। भक्त इस छवि को पूरी तरह निहार भी नहीं पाए थे कि भगवान ने अपना रूप बदल लिया। अब वे ताम्रवर्णी हो गए। उन्हें कषाय का अभिषेक चढ़ रहा था। और अब चंदन, बाहुबली को वंदन करने को उतावला हो रहा था। चंदन धारा ने जब पहली बार बाहुबली को चूमा तो अलग ही दृश्य उपस्थित हो गया। रंग और खुशबू से जैसे पूरी पहाड़ी नहा गई।

चंदन ने बाहुबली को बदलकर रख दिया। सब आँखें स्थिर थीं। बाहुबली के इस रूप को निहारते हुए पुतलियों ने हिलना और पलकों ने झपकना बंद कर दिया था। फिर तो क्या था ? बाहुबली की मनमोहन सूरत माया पर माया रचती जा रही थी। अब बारी कुंकुम की थी। कुंकुम से नहाकर बाहुबली उस राजकुमार से लग रहे थे, जिसका अभी-अभी राज्याभिषेक होने वाला हो। फिर उन स्वर्णाभूषणों की वर्षा की गई। और आखिर दुनिया भर से मँगाए गए दर्जनों किस्म के खूबसूरत व सुगंधित पुष्प मूर्ति पर चढ़ाए गए। महामस्तकाभिषेक का यह सबसे मनोहारी क्षण था, क्योंकि इसके साथ ही बारह वर्ष में बस एक बार होने वाली प्रक्रिया का पहला दौर पूरा होने वाला था। विंध्यगिरि पर मौजूद हर व्यक्ति अपने आपको दूसरी ही दुनिया में पा रहा था। सभी खुद को सौभाग्यशाली मान रहे थे कि उन्हें महामस्तकाभिषेक के पहले दिन ही आलौकिक दृश्य से दो-चार होने का मौका मिला। यह पहला मौका है जब नौ दिन तक बाहुबली का महामस्तकाभिषेक हो रहा है। ...सब जानते हैं कि इन नौ दिनों में बाहुबली के दर्शन से उनके नौ जन्म तर जाने वाले हैं।

पहाड़ी पर मौजूद हर शख्स महामस्तकाभिषेक की वैतरणी में नहाकर खुद को पवित्र, तरोताजा और आध्यात्मिक ऊर्जा से भरा महसूस कर रहा था। उनके तन ही नहीं मन भी हल्दी, कुंकुम और चंदन के रंग में रंग गए थे। बाहुबली पर चढ़ी पंचामृत की बूँदें जब हवा के साथ बहकर लोगों को छू लेतीं तो जैसे भक्तों का जीवन धन्य हो जाता। पंचामृत अभिषेक का अलौकिक दृश्य देखकर कई लोग देर तक झूमते-नाचते-गाते रहे। आचार्य श्री वर्धमान सागरजी, मुनिश्री तरुणसागरजी समेत समस्त साधु-साध्वी आनंद से सराबोर होकर अपलक यह दृश्य निहारते रहे। विंध्यगिरि पर ही नहीं चंद्रगिरि एवं

श्रवणबेलगोला में मौजूद हज़ारों जोड़ी आँखें इस महान अवसर को चश्मदीद देख रही थीं। बाहुबली पर एक भाव आता और जल्द ही दूसरा भाव चढ़ जाता। हालाँकि बाहुबली कई रंगों में रंगे दिख रहे थे, पर उनकी स्मित मुस्कान बार-बार बोल रही थी कि - 'मैं तो वही वीतरागी, मायात्यागी, वनवासी हूँ। मैं एक ही रंग में रंगा हूँ... हो सके तो तुम भी इस रंग में रंग जाओ।'

— ◌ —

आख़िर उन्होंने दिखा ही दिया...

आख़िर उन्होंने साबित कर ही दिया कि श्रवणबेलगोला महामस्तकाभिषेक समारोह के असली हीरो वे ही हैं। मुनिश्री तरुणसागरजी ने दिखा दिया कि लोगों के दिलों पर कैसे काबिज हुआ जाता है। वह भी 200 से अधिक मुनि आचार्यों व त्यागियों की मौजूदगी में, बिना ईर्ष्या का पात्र बने। 13 फरवरी सोमवार का दिन, चारुकीर्तिजी के शब्दों में 'यह महामस्तकाभिषेक समारोह का कभी न भूला जा सकने वाला दीक्षा दिवस बन गया है।' यह गुरु परिवार का दीक्षा दिवस था जिसमें देश भर से आए भक्तों ने तरुणसागरजी को गुरु मानकर उनसे मंत्र दीक्षा ली।

यह एक ऐसा अनूठा कार्यक्रम था कि जिसने देखा वह उनका (तरुणसागरजी) का मुरीद होकर रह गया। श्रवणबेलगोला में मौजूद हजारों श्रद्धालु ही नहीं, बल्कि देशभर के करोड़ों लोगों ने टीवी पर लाइव दिखाए जा रहे इस कार्यक्रम का आनन्द लिया और तरुणसागरजी की हाजिरजवाबी के कायल होकर रह

गए। सुमधुर भजनों के बीच हुए दीक्षा कार्यक्रम अपने अनुशासन और अनूठेपन के कारण सबके लिए आकर्षण का केन्द्र बन गया। दिगंबर जैन परम्परा में इस तरह का कार्यक्रम अनोखा ही कहा जाएगा, जहाँ श्रावकों को संस्कारित और संयमित जीवन का मंत्र देकर उन्हें एक डोर में बाँधा जाता है।

दीक्षार्थी, एक-एक कर चारों दिशाओं से आते और मुनिश्री उन्हें 'उस एक दिशा' की ओर प्रवृत्त कर देते, जो उन्हें ईश्वर के नजदीक ले जाती। साथ ही साथ दीक्षार्थी बुराइयों से भी हमेशा-हमेशा के लिए दूर चले जाते। मुनिश्री दीक्षार्थियों से शाकाहारी और संयमित जीवन जीने के अलावा जीवनभर मद्यपान न करने की कसम भी ले लेते।

एक अलग ही नज़ारा था - दीक्षार्थी हाथ में मंत्र पुस्तिका और माला लेते तथा मुनिश्री उन पर मंत्रोच्चारित पुष्पों की बरसात करते। दीक्षार्थी को दिव्य अहसास होता कि अब उम्रभर समस्या और संकटों से वह मुक्त रहेगा। कोई संकट या समस्या आई तो गुरु मंत्र की ढाल उनके साथ हमेशा रहेगी और वह कभी भी निराशा का दामन नहीं थामेगा। एक तरह से यह बेहतर नागरिक, बेहतर समाज और बेहतर राष्ट्र के निर्माण की भी दीक्षा थी।

अब असली आनन्द की यात्रा शुरू होनी थी, जिसकी प्रतीक्षा पूरे पांडाल में बैठे लोगों के अलावा देशभर में टीवी से चिपके श्रद्धालु भी कर रहे थे। यह था सवाल-जवाब का सत्र, जिसमें गुरु दीक्षा लेने वाले दीक्षार्थी बारी-बारी से सवाल पूछते और तत्क्षण मिलते जवाबों से अचंभित, आनंदित हो जाते। जवाबों में कभी संत का संतत्व झलकता और कभी वे गूढ़ दार्शनिक की तरह समस्याओं का समाधान करते नज़र आते। कभी वे अपने जवाबों से हँसी का समंदर लहरा देते और कभी आँखों से आँसुओं का दरिया बह निकले, ऐसी बात कह जाते।

कभी वे घर के बड़े-बुज़ुर्ग की तरह मशवरा देते और कभी वैद्य बन कानों में कड़वी कुनेन उड़ेलते दिखते। चारों दिशाओं से प्रश्न बरस रहे होते हैं, निरंतर, मगर तरुणसागरजी अविचल, निश्छल और निराकार भाव से बिना एक पल गँवाए जवाब दे देते। वे अपने जवाबों में श्रद्धालुओं को फूलों की सेज पर बैठा देते, तो कभी ऐसा भी लगता कि वे बिल्कुल निर्दयी होकर सच और झूठ का एक-एक क़तरा सामने रख देंगे।

हँसी, उल्लास, उमंग, तरंग, राग और वीतराग सबका पंचामृत बन गया यह कार्यक्रम। पांडाल हर पल का लुत्फ़ लेने को आतुर था और उधर मंच भी कब तक अपने को इस आकर्षण से बचा पाता।

मंच पर महान विभूतियाँ थीं, जिन्हें अपनी ओर खींच लेना अपने आप में वाकई बड़ा काम था। आचार्य वर्धमानसागरजी से लेकर आचार्य पद्मनंदी तक और आर्यिका विजयमतीजी से लेकर आर्यिका ज्ञानमतीजी तक सबके सब आह्लाद से ओतप्रोत दिखाई दे रहे थे। स्वस्तिश्री भट्टारक श्री चारुकीर्तिजी तो अपने हर भाव को बैलोस तरीके से जाहिर करते और किसी विनोदपूर्ण जवाब पर मिनटों तक ठहाके लगाते रहते। वे अचंभित थे कि किसी दिगंबर जैन मुनि का कार्यक्रम इतना अनुशासित और इतना उल्लासपूर्ण हो सकता है। उन्होंने अपने उद्‌बोधन में कहा भी – 'हमने अपनी ज़िन्दगी में किसी दिगंबर जैन मुनि का इतना अनुशासित, व्यवस्थित और भव्य कार्यक्रम कहीं और नहीं देखा। यदि हमें पता होता कि तरुणसागरजी के कार्यक्रम इतना आनन्द देने वाले होते हैं, तो हम रोज ही उनका कार्यक्रम इस महामस्तकाभिषेक समारोह में रख देते।'

बेशक श्रवणबेलगोला को इस बात का अफसोस रहेगा कि महामस्तकाभिषेक के दौरान देश-विदेश के हजारों श्रद्धालु एक क्रांतिकारी संत के प्रवचनों से वंचित रह गए। श्रद्धालुओं की आँखें भगवान बाहुबली के महामस्तकाभिषेक के महान दृश्य को देखकर तो तृप्त ही रही थीं, पर उनके कान तो जैसे प्यासे ही लौट रहे थे। सबको लग रहा था कहीं कुछ अनसुना रह गया है।

मगर, तरुणसागरजी ने इस कमी की पूर्ति उस एक दिन में कर दी। कार्यक्रम कितना सफल रहा, इसकी मिसाल यह है कि स्वयं आचार्य श्री वर्धमानसागरजी ने इतने सुरुचिपूर्ण आयोजन के लिए तरुणसागरजी की पीठ थपथपाई। मंच पर एक भी आचार्य, मुनि, आर्यिका, ऐलक, क्षुल्लक ऐसा नहीं था, जो तरुणसागरजी के आकर्षण से मुक्त रह पाया था। जिस आनन्द को वे गुरु दीक्षा कार्यक्रम में महसूस कर रहे थे, उसकी कहानी बिना कुछ कहे उनकी आँखें अपने आप बयान कर रही थीं।

पांडाल के बीचोंबीच शुभ्र कमल पर गोल-गोल घूमता यह निर्ग्रंथ संत जब बाहुबली पर लिखी अपनी कविता पेश कर रहा था, तो एक साथ लाखों दिल झूम उठे थे। कविता के हर पद में बाहुबली और उनसे जुड़े हर पात्र को लेकर जो रचना इस मुनि ने बुनी, देश ने उसे जब लय-ताल के साथ सुना, तो जैसे उसी में डूबकर रह गया। यह मुनि है या कवि ? वक्ता है या द्रष्टा ? योगी है या जादूगर ? हर मन में यही विचार आते रहे कि यह आदमी आखिर है क्या ... उनकी थाह कौन पा सका है ?

— o —

चलिए, दूसरी ही दुनिया में...

आइए आपको एक ऐसी यात्रा पर ले चलूँ जो आपको अलग ही दुनिया में ले जाए। ऐसी दुनिया, जहाँ धर्म अपना गहन-गंभीरता का चोला उतार फेंक, भेष बदलकर कभी हँसी, कभी ठिठोली, कभी मसखरी तो कभी मस्ती के मूड में खेलता-फुदकता है। इस दुनिया में एक जादूगर अपना पिटारा खोले बैठा है। वह दीन-दुखियों का मनोरंजन करने बैठा है। पर यह जादूगर जरा लालची है। उसका पिटारा सबसे कुछ न कुछ लेकर अपना पेट भरता रहता है। किसी से दुःख, किसी से दर्द, किसी से विष, किसी से विषाद, किसी से ईर्ष्या, किसी से घृणा, किसी से मद, किसी से मलाल- सब कुछ यह जादूगर लोगों से लेकर पिटारे में डालता जाता है। फिर वह सबको गड्डमड्ड करता है और बदले में पिटारे से एक-एककर हँसी, खुशी, उल्लास, उमंग, आशा और आनन्द निकालकर अपने सुनने वालों में बाँट देता है। अजीब जादू है। पिटारा दुःख को खुशी में बदल देता है। आँसू को हँसी, निराशा को आशा का बाना पहना देता है। जादूगर अपने तमाशाइयों को 'आनन्द की यात्रा' पर

ले जाता है और आधा-पौन घंटे की इस सैर के बाद यात्री जब ज़मीन पर उतरता है, तो लगता है वह जहाँपनाह हो गया है ।

यह जादूगर अपनी 'आनन्द यात्रा' के लिए पहले लोगों से प्रवेश शुल्क और बाद में दक्षिणा लेता है । तरुणसागरजी की आनन्द यात्रा में आस्था ही प्रवेश शुल्क है । दुःख-दर्द ही दक्षिणा ! हज़ारों श्रोताओं का दुःख-दर्द लेते हुए भी उनका कमंडल कभी नहीं भरता । हज़ारों ओठों पर हँसी सजाते हुए भी उनका पिटारा कभी खाली नहीं होता । धर्म इस यात्रा में अपने बोझिल स्वरूप में नहीं धमकता, बल्कि वह हँसी-खुशी का दामन थामकर हर दिल में डोलता रहता है । आनन्द यात्रा के यात्री झूमते-नाचते-गाते खुद को भुला देते हैं और मुनिश्री के शब्दों में कुछ देर के लिए सयानापन छोड़ पागल हो जाते हैं ।

कौन नहीं चाहेगा इस पागलपन से गुज़रना, जिससे दिल और दिमाग की 'ओवर हॉलिंग' हो जाए । दीन-दुनिया की खटर-पटर पर शटर लगाकर हर कोई थोड़ा झूम लेना चाहता है । खो जाना चाहता है । रो लेना-हँस लेना चाहता है न कोई बड़ा न छोटा । न पापी न पुण्यात्मा । सबके सब यात्री । सबकी मंज़िल एक । आनन्द की मंजिल ! साँझ ढलते जब तरुणसागरजी की यह यात्रा शुरू होती है तो लगता है साँझ ढल नहीं रही, एक नई सुबह साँस ले रही है । सूरज डूब नहीं रहा, सबके दिलों में नया सूरज उग रहा है । उजाले की चमक नहीं खो रही, इन आँखों को ये इतनी चमक कहाँ से मिल गई है ? रात का सफर अभी शुरू नहीं हुआ, फिर कैसे ये सितारें ज़मीं पर उतर आए ! गम अभी गलत नहीं हुआ है, तो फिर किसने 'मेहमानों की यह महफिल' सजा रखी है ? कौन है जो इन दिलों में, इन ओठों पर, इन आँखों में मुस्कुरा रहा है । कौन है जो गमों को थपकियाँ दे-देकर, लोरी सुना-सुनाकर मीठी गहरी नींद सुला रहा है और अलसाई खुशियों के मुँह पर पानी के छींटे डाल उन्हें जगा रहा है ?

जिस जगह बाहुबली हज़ार से अधिक साल से मुस्कुराए जा रहे हैं, वहाँ यह सब होते देखना अचरजपूर्ण नहीं था । इसलिए ये सवाल ही खुद अपना जवाब है । सो, श्रवणबेलगोला की शाम यदि इस आनंद यात्रा में हँसते-हँसते दोहरी हो जाती, तो भी वह अगली शाम का बेसब्री से इंतज़ार करती... कि फिर साँझ ढलेगी और यहाँ ज़िन्दगी की नई सुबह होगी । कि उधर पश्चिम में फिर सूरज ढलेगा और इधर पूरब के दिल में एक दूसरा ही सूरज उग रहा होगा, कि उधर शाम का धुँधलका गहराएगा और इधर नया उजाला आएगा... सबको खिलखिलाएगा, हर दिल को जगमगाएगा !

— ○ —

दक्षिण के दिल में हिन्दी

यह बिना ढोल बजाए हिन्दी को दक्षिण के दिल में बिठाने का एक यत्न था, जिसे मुनि श्री तरुणसागरजी बेलगाम से लेकर बैंगलोर तक और विदर्भ से लेकर तेलंगाना तक अथक निभाते जा रहे थे। वे जिस तरह से हिन्दी को दक्षिण में मान दिला रहे थे, उससे साफ लगता था कि वे आचार्य मदनमोहन मालवीय के बाद दक्षिण भारतीयों के लिए हिन्दी का एक प्रमुख 'प्रवेश द्वार' बनकर उभरे हैं। मालवीयजी और गाँधीजी हिन्दी को दक्षिण के दिल में बिठाने में पूरी तरह कभी सफल नहीं हो पाए, पर मुनि श्री तरुणसागरजी की सभाओं में इसके उलट दिखता है। उनकी धर्मसभाओं में बैठे हजारों अहिन्दीभाषी दक्षिण भारतीयों को आनन्द सागर में गोता लगाते देख सहज ही यह अहसास हो जाता है कि एक और क्रांति चल रही है, चुपके-चुपके लेकिन चोरी-चोरी नहीं, बल्कि दिनदहाड़े।

और यह क्रांति है- हिन्दी को दक्षिण में कन्नड़, तेलुगु, तमिल की सौतेली नहीं, छोटी नहीं, बल्कि बड़ी बहन माना जा रहा है। वह भी बिना किसी विरोध के।

जिन कन्नडभाषियों को हिन्दी के चार शब्द समझना मुश्किल होता है वे बिना नागा मुनिश्री की आनंद यात्राओं में लगातार आनंद में डूबते-उतरते देखे जा सकते हैं। यहाँ मंच पर हिन्दी बोलने वाले वक्ता पर टमाटर नहीं बल्कि तालियाँ फेंकी जा रही हैं, तो इसमें इस मुनि के योगदान को कम करके नहीं आँका जा सकता। आचार्य श्री विद्यानंदजी द्वारा दो दशक पहले इस इलाके में नदी के प्रवेश को लेकर बनाई गई पगडंडी को मुनिश्री ने एक लंबे-चौड़े और चमकीले स्वर्णपथ में तब्दील कर दिया है। अब यह हिन्दी वालों पर है कि वे इस 'हाई-वे' का कितना उपयोग कर पाते हैं।

मुनिश्री के प्रवचनों ने दिखा दिया है कि हिन्दी को राष्ट्रभाषा का दर्जा यूँ ही नहीं मिल गया है। उनके प्रवचनों में भाषा का प्रवाह किसी कल-कल बहती नदी की भाँति हर किसी को अपने में समेटता चलता। भाषा नहीं भाव की प्रधानता हो जाती और श्रोतागण उसमें डूबकर यह याद ही नहीं रख पाते कि वे कन्नड़ नहीं बल्कि हिन्दी सुन रहे हैं। दक्षिण कर्नाटक में देवताओं की तरह पूजे जाने वाले धर्मस्थल के धर्माधिकारी श्री वीरेन्द्र हेगड़े भी हिन्दी भाषी के सौंदर्य से खुद को बचा नहीं सके। उन्होंने कहा- हिन्दी में प्रवचन का भाव बिना शक कन्नड से ज़्यादा है। उन्होंने महाराजश्री से धर्मस्थल पर चातुर्मास का निवेदन किया और लगे हाथ यह भी आग्रह कर दिया कि वे प्रतिदिन यदि कन्नड़ का थोड़ा अभ्यास करें तो चातुर्मास तक वे अच्छी-सी कन्नड़ बोलने लगेंगे। महाराजश्री मुस्करा दिए और थोड़ी देर बाद बोले- मैं कन्नड़ सीखूँ न सीखूँ, आप लोगों को हिन्दी ज़रूर सिखा जाऊँगा।

हिन्दी के प्रति इतना निर्भीक आग्रह और बहुत कम मौकों पर देखने को मिलता है। लगता है हिन्दी को दूसरा तारणहार मिल गया है जो उसकी दक्षिण की काँटोंभरी राह बुहार रहा है। उसकी राह में फूल बिछा रहा है। अपनी छोटी बहनों- कन्नड़, तेलुगु, तमिल के दिलों में अपनी बड़ी बहन हिन्दी के लिए घर बना रहा है। ऐसा घर जहाँ वह अनचाहे अतिथि के रूप में नहीं बल्कि खुशियाँ, उम्मीदें लाने वाली बहन के रूप में जानी जा सकती है। मुनिश्री लगे हाथ यह भी आश्वस्त करते चलते रहते हैं कि हिन्दी आपके घर पर क़ब्जा करने नहीं आ रही है, वह तो आपके आँगन में थोड़ा खेलना, थोड़ा फुदकना चाहती है ताकि वह आपके बच्चों की मौसी बन सके और भविष्य में उनकी उत्तर भारत की राह आसान बन सके।

मुनिश्री तरुणसागरजी की चाहत है कि कश्मीर से कन्याकुमारी तक और द्वारिका से दीमापुर तक पूरा भारत एक भाषा, एक बोली में एक-दूसरे को समझ सके। तब जो भारत बनेगा वह आज से अधिक स्नेही, सहिष्णु और उदार भारत होगा... और तब इस मुनि के योगदान को भुलाया नहीं जा सकेगा।

— ० —

महामस्तकाभिषेक लाइव

महामस्तकाभिषेक के अंतिम दिन जब बाहुबली एक के बाद एक पंच-अमृतों से नहा रहे थे, तो उनकी अलग ही आभा खिली हुई थी। जो साक्षात इस दृश्य को देख रहे थे, वे तो भाग्यशाली थे ही, जो आस्था टीवी पर उन दृश्यों को 'लाइव' देख रहे थे, वे भी कम भाग्यशाली नहीं थे। कारण कि इस महामस्तकाभिषेक का आँखों देखा हाल कोई और नहीं, स्वयं तरुणसागरजी सुना रहे थे। इसलिए उनका हर वाक्य दर्शकों के कानों में जैसे माखन-मिश्री घोल रहा था। जिस किसी ने उनकी लाइव कमेंटरी सुनी, वह दंग रह गया। सब जगह से-सराहना मिली। किसी पत्रकार ने कहा- 'अरे आप संतों के खेमे में क्या कर रहे हैं। आपकी असली जगह तो यह (पत्रकारों का) खेमा है।' बाहुबली का पंचामृत शृंगार तो दर्शकों को अभिभूत कर रहा था, पर महामस्तकाभिषेक और बाहुबली का ऐसा शब्द शृंगार पहले कोई नहीं कर पाया। इतना ही नहीं, इस युवा मुनि को अंतिम दिन महामस्तकाभिषेक के मुख्य स्थान से श्रद्धालुओं को संबोधित करने का भी मौक़ा मिला।

उन्होंने कहा 'महामस्तकाभिषेक समारोह' निर्विघ्न संपन्न होने का मतलब बाहुबली हमारी भक्ति पर मुस्कुरा रहे हैं। मस्तकाभिषेक केवल बाहुबली का ही नहीं हुआ है, लाखों मनुष्यों के जीवन इस दृश्य को देखकर शुरू हो गए हैं। यह परिवार, समाज व विश्व को भी शुद्ध करने का अभियान है। स्नान तन को शुद्ध करता है और अभिषेक से मन की शुद्धि होती है। महामस्तकाभिषेक विचारों की शुद्धि का भी अभिषेक है। लाखों श्रद्धालु यहाँ आए और सबने अपनी शक्ति के अनुसार भक्ति की अभिव्यक्ति की। अब जब श्रद्धालु गंतव्य की ओर लौट रहे थे तो उन्हें मेरा एक ही संदेश है कि वे परिवार को आठवाँ वार मानते हुए उसे सँवारें! यहाँ यदि सास आई है और बहू नहीं आ पाई, तो जब सास घर जाए, तो वह बहू को इतना प्यार दे, इतना प्यार दे कि बहू अपने पीहर का फोन नंबर भूल जाए। यदि बहू यहाँ आई और उसकी सास नहीं आ पाई, तो बहू का कर्तव्य है कि वह अपनी सास को इतना सम्मान दे कि सास अपनी बेटी का नाम भी भूल जाए। यदि कोई पिता आया है और उसका बेटा नहीं आ पाया, तो वह लौटकर त्याग का उदाहरण पेश करते हुए अपने बेटे के हाथ में तिज़ोरी की चाबी सौंपकर शेष जीवन साधना में बिता दे। तिजोरी की चाबी के लिए बेटे को पिता की मौत का इंतज़ार न करना पड़े। यदि बेटा आया है और पिता नहीं आ पाए, तो घर लौटकर वह ऐसा सात्विक जीवन जिए कि दुनिया माता-पिता से पूछे कि किस तपस्या से आपको ऐसी संतान मिली है। बाहुबली के दरबार से खाली हाथ न लौटें। यहाँ से छोटी-सी प्रतिज्ञा सँजोकर जरूर जाएँ। भगवान खुले आकाश तले खड़े होकर अपनी झोली फैलाकर आप से एक बुराई का त्याग चाहते हैं। आप कोई न कोई बुराई छोड़ने का संकल्प लेकर ही यहाँ से जाएँ। एक संकल्प यह भी लें कि आप एक बेहतर पुत्र, पति, पिता, भाई-बहन, सास-बहू साबित होंगे। बाहुबली हजार साल से खड़े-खड़े थकने लगे हैं। अब जरा वे भक्तों के दिल में बैठकर थोडा सुस्ताना चाहते हैं। याद रखना बाहुबली उन्हीं के दिल में बैठना पसंद करेंगे, जो अंदर से साफ़-सुथरे और पवित्र हों।'

इस मौके पर मुनिश्री ने महोत्सव समिति के अध्यक्ष एन. के. सेठी (जयपुर) अनथक सेवा करने वाले वीर सेवादल सांगली और वीर सेवा मंडल, जयपुर के स्वयंसेवकों को उनकी उल्लेखनीय सेवाओं के लिए साधुवाद दिया। वहीं भट्टारक श्री चारुकीर्तिजी को महामस्तकाभिषेक की सफलता का श्रेय देते हुए कहा कि अब आप चैन की नींद सो सकते हैं। उन्होंने किसी आर्थिक लाभ की परवाह किए बगैर महामस्तकाभिषेक समारोह का सतत सीधा प्रसारण करने के लिए आस्था चैनल के मुखिया श्री किरीटभाई मेहता को भी विषेश रूप से आशीर्वाद दिया। ... जब मुनिश्री बाहुबली को प्रणाम कर लौट रहे थे तो सीढ़ियाँ उतरते हुए उनका मन एक अलग ही संकल्प बुन रहा था- अब बाहुबली भी उनके एक कथानायक होंगे... तो तैयार रहिए बाहुबली विंध्यगिरि से उतरकर देश और दुनिया के दिल में बसने वाले हैं...!

— ○ —

हम जिएँगे !

वे जीवन के गीत गाते हैं, इसलिए उनकी बातों में सदैव उल्लास उमड़ता रहता है। विपरीत स्थितियों में भी कैसे मुस्कुराते हुए जी लें और कैसे दु ख में भी सुख खोज लें, यह कला वे अपने सुनने वालों को सिखाने की हरदम कोशिश करते रहते हैं। इसलिए जब देश का किसान और देश का नौनिहाल आत्महत्या करता है, तो कोमल हृदय मुनिश्री तरुणसागरजी को यह बात बेहद कचोटती है। उनका दिल दुखता है और वे गहन मौन में चले जाते हैं। वह मौन जब टूटता है तो तरुणसागरजी उन परिस्थितियो का समाधान लेकर हाजिर होते हैं, जिनसे हारकर किसान, व्यवसायी और किशोर आत्महत्या कर लेते हैं।

वे हार का परिहार करने के लिए निराशा से भरे एक मिनट को भी साठ सैंकड़ों की पूरी दूरी तक दौडाकर थका-थका देते हैं और फिर जो दिल, पलभर पहले हताशा से भरे थे, उन्हीं दिलों में आशा महक उठती है। मौत के आलिंगन की चाह जीवन की चुनौतियों का जी भर मुकाबला करने और उनसे जीत जाने की

जिजीविषा में बदल जाती है। आत्महत्या को महापाप का दर्जा देने वाला यह संत महाराष्ट्र में प्रवास के दौरान किसानों की आत्महत्या की ख़बरों को एक कान से सुन दूसरे से निकाल नहीं देता। वे कह उठते हैं 'जीने में तकलीफ आए तो समाधान के लिए आत्महत्या के अंधे कुएँ में छलाँग लगाने की बजाए आत्मचिन्तन की ज्ञान गुफा में उतर जाना। हर समस्या का समाधान मिल जाएगा।' इसलिए वे हर हाल में जीने का संकल्प दिलाते चलते हैं। वे कहते हैं- हमें संकल्प करना होगा कि हम हर हाल में जिएँगे, हर हाल में। और अपने लिए न भी जिएँ तो भी अपने माँ-बाप के लिए जिएँगे। अपने परिवार के लिए, अपने बीवी-बच्चों के लिए जिएँगे। अपने धर्म, समाज और देश के लिए जिएँगे। हर हाल में जिएँगे, और कहेंगे ऊपर वाले से 'जिसमें तेरी रजा, उसी में मुझको रजा।'

तो ऊपर वाले की रजा को अपनी रजा बना लेने की प्रेरणा देने वाला यह संत महाराष्ट्र के मराठवाड़ा से कर्नाटक के धर्मस्थल तक में हताशा को आशा का जामा पहनाता चलता है। नाउम्मीदी की जमीन पर उम्मीद की फसल उगाता चलता है। दु:खों के दरिया को खनकती खुशियों की खदान में बदल देता है। मौत को मिट्टी में मिलाकर जीवन की बगिया को महका देता है। इस बगिया की एक क्यारी में खुशी खेलती है, तो दूसरी में हँसी हिलोरे लेती है। एक क्यारी में उत्साह उग रहा है, तो उसके पड़ोस की क्यारी में सपनों की सुनहरी फसल बस लहलहाने ही वाली है। ... इस बगीचे में कोई प्यारी सी कली अपने खिलने की प्यारी-सी शर्त कान में कह देती है - 'मैं तभी खिलूंगी और ये बगिया भी तभी खिलखिलाएगी, जब तुम अपने पसीने को पानी बनाकर हमें सींचोगे। मेहनत से कभी जी न चुराओगे और मुश्किलों को भी मोहब्बत से गले लगाकर परेशानियों को पसीने की तरह पोंछ डालोगे। दु:खों को दौड़ा-दौडाकर थका दोगे और सुखों को अपनी सहचरी बना लोगे। और हाँ सुखों को सहचरी ही बनाना उसके दास न हो जाना। कभी यह भी कहती है कि कभी नाउम्मीदी में बहुत घिर जाओ तो सारी तकलीफों, मुश्किलों को हमारी जड़ों में डाल जाना, हम उन्हें भी महकना-चहकना सिखा देंगी...!

फिर तरुणसागरजी नन्हे-मुन्ने मानव-पुष्पों को पुचकारते हुए फुसलाते हैं - 'कभी तुम्हारे माता-पिता तुम्हें डाँट दें, तो बुरा न मानना। बल्कि सोचना कि वे मेरे माता-पिता हैं और गलती होने पर वे नहीं डांटेंगे तो फिर कौन डांटेगा ? वे बड़ों को बाकायदा सीख देते हैं - 'कभी छोटों से कोई गलती हो जाए तो उन्हें यह सोचकर माफ कर देना कि गलतियाँ छोटे नहीं करेंगे तो कौन करेगा ? छोटे हों या बड़े, भूल किसी से भी हो सकती है। भूलों से घबराना मत। भूल उन्हीं से होती है, जो कुछ करने की कोशिश करते हैं। मैं तो कहता हूँ कि गलतियाँ करो और सौ बार करो। बस किसी भी गलती को दोहराने की गलती मत करना।'

— o —

बस बोलते ही रहे

सेना को सम्बोधित करना, मुनिश्री तरुणसागरजी के सपनों में से एक था। यह सपना, सपना ही रह जाता, यदि बेलगाम में मराठा लाइट इनफेंट्री के ब्रिगेडियर रणजीत मिश्र, मुनिश्री को बुलाने का साहस नहीं दिखाते। मुनिश्री के प्रवचन से प्रभावित होकर ब्रिगेडियर मिश्र ने जब उन्हें न्योता दिया, तो फिर इतिहास तो बनना ही था। एक तो इसलिए कि पहली बार कोई संत अधिकृत रूप से सेना को सम्बोधित कर रहा था। दूसरा, इसलिए भी कि अपना सपना पूरा होने पर जो प्रवचन होने वाला था, वह निश्चय ही दिल और जुबान के जबर्दस्त मेल की कहानी कहने वाला था। इसलिए 21 सितम्बर, 2005 का दिन मराठा इनफेंट्री और तरुणसागरजी दोनों के दिलों पर एक अमिट इबारत लिख गया। इस इबारत की स्याही, इस संत के अंतरतम में नहाई हुई थी, इसलिए जिस किसी ने भी उस प्रवचन को सुना, वह स्वयं एक चलता-फिरता दस्तावेज बन गया।

प्रवचन से पहले और प्रवचन के दौरान बारिशों के 'बेलगाम दौर' चलते रहे। मगर जो बारिश इस संत

की जुबान से झर रही थी, उसमें नहाकर जवान सारे जमाने को अपने बूटों के नीचे रखने का साहस संजो गए। उनके लिए प्रवचन सुनना गंगा में नहाने जैसा था। जवानों को प्रवचन में धर्मयुद्ध की सीख तो मिली ही, उन्हें उनके सांसारिक कर्तव्यों का पालन भी पूरी शिद्दत से करने के अलिखित आदेश मुनिश्री से मिले। जवानों ने पाया कि यह प्रवचन शब्दों की जुगाली भर नहीं था, बल्कि पल-पल वह प्रवचन जवानों को एक नया संकल्प लेने की प्रेरणा दे रहा था।

'सेना के नाम संदेश' में संत ने शुरुआत ही एक ऐसे वाक्य से की, जिसकी टीका करते हुए पूरा ग्रंथ लिखा जा सकता है। वह वाक्य था - 'संत और सैनिक को सोने मत देना, अगर ये सो गए तो देश और समाज का भाग्य भी सो जाएगा।' पर तरुणसागरजी तो उस दिन मराठा इनफेंट्री का भाग्य जगाने आए थे, इसलिए उनके पूरे उद्बोधन में दिलोदिमाग को बेधने वाले वाक्यों की भरमार थी। वे जवानों को अपनी जिरह से कभी जज्बाती बना देते, तो दूसरे ही पल वे उन्हें उनके सैनिक धर्म का मंत्र भी कान में फूँक देते। 'कभी अपने घर जनरल और कर्नल बनकर मत जाना, बल्कि पिता-पुत्र या पति बनकर जाना' इस बात को सुनकर सैनिकों की आँखों की कोर और दिल का पोर भीगता ही है कि मुनिश्री उसे पोंछने के लिए अनुशासन का अंगोछा लेकर यह कहते हुए हाजिर हो जाते हैं - 'धर्म तो सेना के बिना चल सकता है, मगर सेना बिना धर्म के नहीं चल सकती, अनुशासन ही सेना का सर्वोच्च 'धर्म' है।'

वे सैनिकों को कभी धर्म की धधकती भट्टियों में धकेल देते हैं, तो कभी नदी की कल-कल बहती शीतल जलधारा बन सारे ताप और संताप हर लेते हैं। वे बोल उठे - 'हर सैनिक के एक हाथ में माला और दूसरे हाथ में भाला रहना ही चाहिए। माला इसलिए कि तुम अपनी आत्मा का कल्याण कर सको और भाला इसलिए कि कोई तुम्हारे देश की सरहद, तुम्हारे पवित्र मंदिरों और तीर्थ स्थलों, तुम्हारी बहू-बेटियों पर गलत नजर न डाल पाए। राष्ट्र तिजोरी है तो धर्म सोना है। राष्ट्र की रक्षा ही धर्म की रक्षा है। राष्ट्र सर्वोपरि है। उसके बाद धर्म और आखिर में व्यक्ति का नम्बर आता है। हमें नियंत्रण रेखा को लक्ष्मण रेखा बनाना होगा, ताकि कोई रावण उसे पार करने का दुस्साहस न कर सके।'

संत अपने प्रवचन से जवानों के बाजुओं की रगें फड़काता चलता है और दुश्मन को नेस्तनाबूद करने के लिए हथियार उठाने को हाथ मचल उठते हैं। पर दूसरे ही क्षण वे शांति के पैरोकार बन जाते हैं। उनकी नजर में 'युद्ध किसी समस्या का समाधान नहीं है। युद्ध तो खुद एक समस्या है। देश और दुनिया अपनी सेनाओं पर जितना खर्च करते हैं, अगर वही खर्च शिक्षा, चिकित्सा, रोजगार व गरीबों की सेवा में होने लगे तो दुनिया का

नक्शा ही बदल जाए।' असल में संत वही है, जिसका दिल समाज के लिए धड़कता है। इसलिए तरुणसागरजी शांति की शहनाई छेड़ देते हैं, लेकिन लगे हाथ दिखावटी समझौते करने वाले राष्ट्र प्रमुखों पर कोड़ा फटकारने से भी नहीं चूकते, यह कहते हुए कि 'फासले दुनिया के, एक लम्हें में मिट गए होते/हाथ मिलाने वालों वे गए दिल मिल गए होते।'

यह संत नेता नहीं है इसलिए सांत्वना और आश्वासन से सख्त परहेज करता है। वह पीठ थपथपाने में नहीं, पीठ की धूल झाड़ने में अधिक दिलचस्पी लेता है। घावों की मरहमपट्टी के बजाए वह चीरफाड़ कर बीमारी के मवाद को निकाल फेंकने की महारत दिखाता है। वह हँसाता है और रुलाता भी है। झकझोरता है, तो थामता भी वही है। मझधार में जाकर नाव तूफानों में छोड़ देता है, तो वही उसे किनारे भी लगाता है। यह संत जवानों को गंगोत्री से गंगासागर की बजाए गंगासागर से गंगोत्री की यात्रा का जुनून जगाता है और देश के लिए, ईमान के लिए मर मिटने का जज्बा भी उनके दिलों में जलाता है। यह कहते हुए कि 'दुनिया से जाते वक्त हाथ भले ही खाली हो, पर प्राण-भरे होने चाहिए।' जवानों से विदा लेते हुए उन्होंने फिर जोश का दरिया बहा दिया – यह कहते हुए कि यह बात हर जवान और हर जुबान को याद रखनी चाहिए –

'मौत से डरता नहीं मैं, मौत मुझे से डर चुकी है,
मौत से मरता नहीं मैं, मौत मुझसे मर चुकी है।'

भीगे मौसम में आध्यात्मिक-अनुशासन की बरसात कर मुनिश्री तो बगल में पिच्छी दबाए खुद तो सरपट चले गए, पर भीगे दिल लिए जवानों की बस एक ही चाह थी – यह संत बोलता रहे, बस बोलता ही रहे. . ।

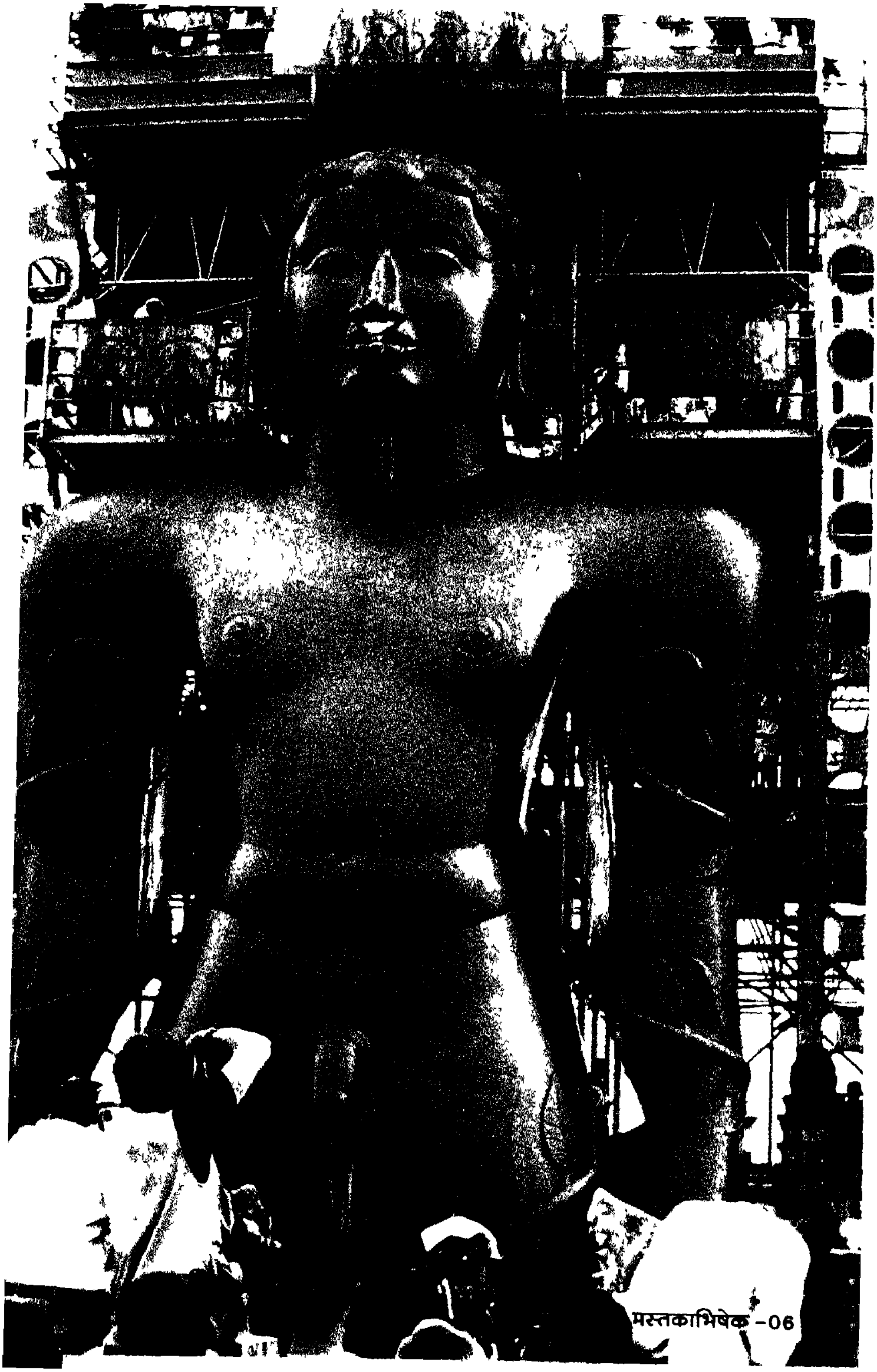
जमाना तो सुन रहा था बहुत शौक से,
तुम्हीं चुप हो गए दास्तां कहते-कहते।

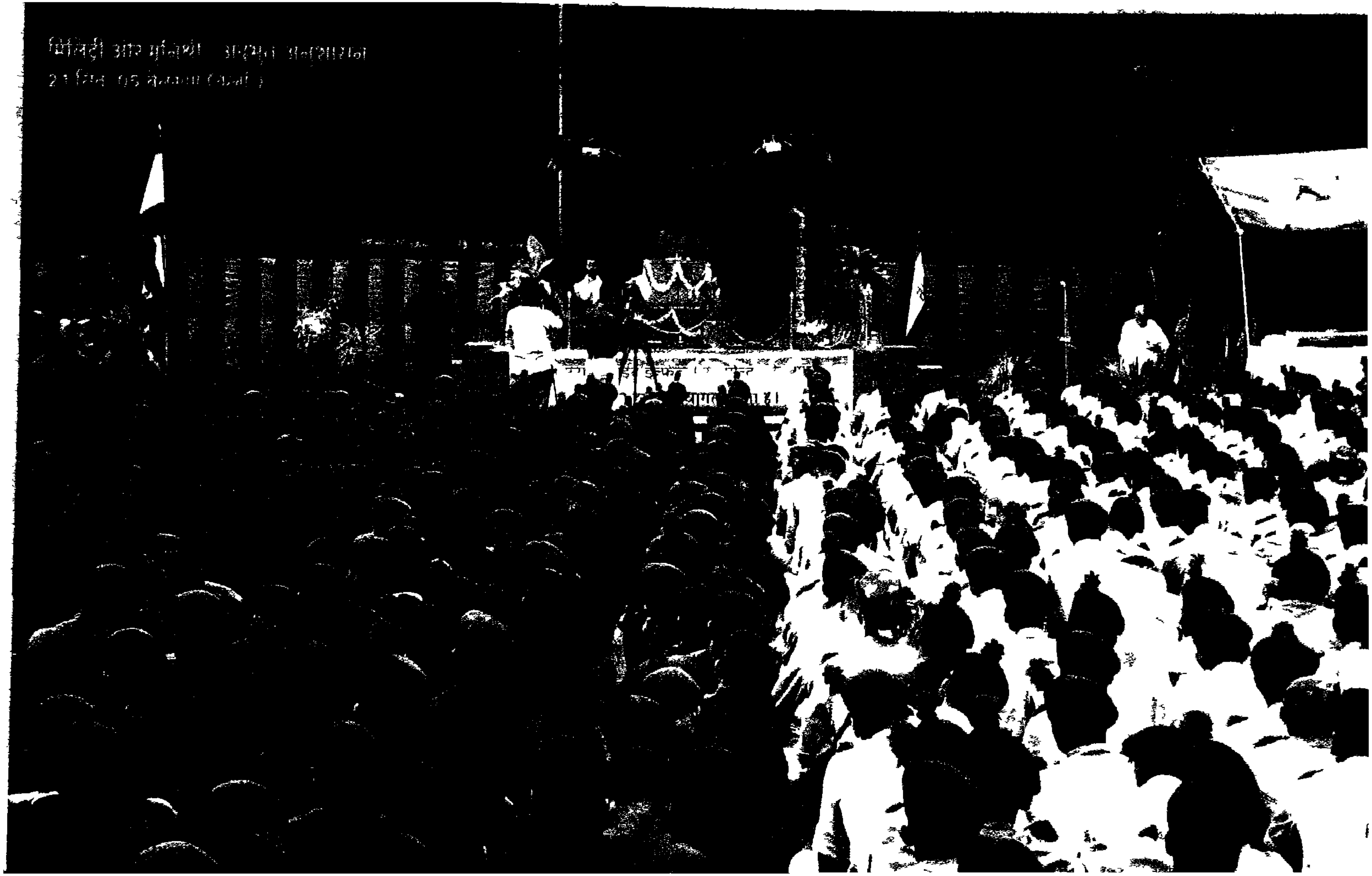
—) —



जीना है तो जीना तो [illegible] ही पड़ेगा




मस्तकाभिषेक -06


अद्भुत अनुशासन
21 दिस. 05 बेलगाम (कर्ना.)

मीडिया से दो-चार

पहले दिन महामस्तकाभिषेक के लिए पहाडी पर चढते तरुणसागरजी की इलेक्ट्रॉनिक मीडिया से 'चलते-चलते' हो रही बातचीत में प्रत्युपन्नमति निश्चित करने वाली थी। एनडीटीवी से बातचीत में मुनिश्री से पूछा 'यहाँ मस्तक का ही अभिषेक क्यों होता है ?' तरुणसागरजी का जवाब था - 'सारी गड़बड़ियाँ मस्तिष्क से ही शुरू होती हैं। यदि मस्तिष्क का सुधार हो, तो बाकी चीजें अपने आप सुधर जायेंगी। मस्तकाभिषेक में यही बात प्रतीक रूप में रहती है।' 'आजतक' संवाददाता पूछ बैठी - 'मुनिश्री, बाहुबली तो तीर्थंकर भी नहीं, फिर इतना बड़ा आयोजन कैसे ?' उसे जवाब मिला - 'अमीर बनने के लिए 5 साल लगते हैं, विद्धान बनने के लिए 10 साल काफी हैं। डॉक्टर, इंजीनियर बनने के लिए 15 साल की साधना चाहिए। डॉ अब्दुल कलाम जैसा वैज्ञानिक बनने के लिए 20 वर्ष की साधना चाहिए। लेकिन बाहुबली जैसा युग-पुरुष बनना है, तो एक हजार वर्ष की साधना चाहिए।' वहीं दूरदर्शन के एक सवाल के जवाब में तरुणसागरजी ने कहा - 'जैन

मुनि और आचार्य अपने कर्तव्य से विमुख हो जाएं तो हो जाएं, श्रावक अपना धर्म भुला दें तो भुला दें, धर्मग्रन्थ नष्ट हो जाएं तो भले हो जाएं, मगर जब तक बाहुबली की प्रतिमा मौजूद है, तब तक दुनिया में जैन धर्म का डंका बजता रहेगा।' और 'सहारा समय' से चर्चा में मुनिश्री ने कहा 'शुद्धि का अभियान ऊपर से नीचे की ओर चलना चाहिए। इसलिए जलधारा बाहुबली के मस्तक से होते हुए पैरों की तरफ जाती है। समाज को यही सीख इससे लेनी होगी। धारा को उलट दो तो राधा हो जाती है। तो यह धारा आत्मा की शुद्धि की राधा बन सकती है।'

'स्टार न्यूज' की आयशा खानम ने सवाल किया कि बाहुबली तो विश्व मानव हैं। फिर उन्हें सिर्फ जैनियों की गिरफ्त में कैद क्यों कर रखा है ? मुनिश्री ने अपने चिरपरिचित अंदाज में मुस्कुराते हुए कहा – कैद कहां हैं ? वे तो खुले आकाश तले खड़े हैं। यहाँ महज जैन नहीं हिन्दू–मुसलमान कोई भी आ सकता है, यहाँ तक कि परिंदे भी। 'जी–न्यूज' के संवाददाता के लिए मुनिश्री बोले – भगवान बाहुबली की विशालकाय मूर्ति महज एक हजार वर्षों का इतिहास ही नहीं है बल्कि अपने पूरे वजूद को देखने के लिए एक आदमकद आईना भी है। ई–टी वी के एक सवाल के जवाब में तरुणसागरजी ने कहा – यह महामस्तकाभिषेक महोत्सव भट्टारक श्री चारुकीर्ति स्वामीजी की 12 वर्षों की तपस्या का फल है। भगवान बाहुबली ने तो मोक्ष के लिए महज 1 वर्ष की तपस्या की थी, लेकिन चारुकीर्तिजी तो इस मस्तकाभिषेक के लिए 12 वर्षों की तपस्या करते हैं।

—) —

तुम फिर आना तरुणसागर

जो कोई उनकी जुबान की जद में आया, उसके दिल में सुधार की क्रान्ति की अलख जगाकर यह संत जब श्रवणबेलगोला से बिदा हुआ तो भी कुछ वैसा ही दृश्य था, जो उनके आगमन के वक्त पैदा हुआ था। महामस्तकाभिषेक समारोह के दौरान आए कई आचार्य, मुनि कब बिदा हो गए, पता ही नहीं चला, मगर जब तरुणसागरजी बिदा हुए तो श्रवणबेलगोला की ऑखें नम थीं। उनकी बिदाई का भी बाकायदा एक समारोह मठ के सम्मुख चामुडराय सभागृह में आयोजित किया गया। उन्हें विनयांजलि अर्पित की गई।

महामस्तकाभिषेक समारोह के प्रमुख भट्टारक श्री चारुकीर्तिजी महास्वामी ने अगले महामस्तकाभिषेक कार्यक्रम में तरुणसागरजी से पुन पधारने का अनुरोध किया। मुनिश्री ने भी अपने उद्‌बोधन में कहा कि श्रवणबेलगोला से काफी कुछ सीखने को मिला है। यहॉ सघ के साथ चर्चा कर, मिलकर बड़ा अनुभव मिला है।

जब तरुणसागरजी मैसूर के लिए चले तो श्रवणबेलगोला थोड़ा उदास था। इस मुनि को थोडा और सुनने की इच्छा हर किसी के मन में थी, चाहे जैन हो या अजैन। आखिर में तरुणसागरजी ने नीचे से ही भगवान बाहुबली को मुडकर देखा, प्रार्थना की और आगे बढ़ने की अनुमति चाही और मुस्कुराकर चल दिए। शायद बाहुबली ने उन्हें आदेश दिया हो – 'तरुणसागर तुम अगली बार भी जरूर आना।'

धर्म वारंटी नहीं, विश्वास से चलता है

प्रश्न– श्रवणबेलगोला के लिए आपका दिल क्या कहता है ?

उत्तर– आपने सुना होगा कि किसी ने कश्मीर की वादियों के बारे में कहा था कि अगर धरती पर कहीं स्वर्ग है तो वह यहीं है, यहीं है, यही है। मुझे लगता है जो श्रद्धालु हजारों किलोमीटर दूर से सफर तय करके श्रवणबेलगोला आते हैं और विन्ध्यगिरि की 620 सीढ़ियाँ चढ़कर जब भगवान बाहुबली के चरणों में माथा टेकते हैं, तो उनके दिल से बस एक ही आवाज निकलती है और वह आवाज है – कि धरती पर कहीं स्वर्ग है, तो यहीं है, यहीं है, बस यहीं है। यही बात मुनियों, आचार्यों के दर्शन में भी लागू होती है।

प्रश्न– श्रवणबेलगोला में आना एक महात्यागी की धरती पर आना है, कैसा लगा ?

उत्तर– बाहुबली के सामने एक वृहद राष्ट्र का राजा

बनने की स्थितियाँ मौजूद थीं लेकिन वे ऐश्वर्य और कुछ सालों का राजपाट मिलाकर युगों-युगों के राजा बन गए। यहाँ आने वाले श्रद्धालुओं को यही संदेश लेना चाहिए कि जिन्दगी में शांति चाहिए तो वह त्याग में ही संभव है। बाहुबली अहिंसा और त्याग की जीती-जागती मूर्ति हैं।

प्रश्न- उत्तर-दक्षिण को एक करने में बाहुबली की बड़ी भूमिका नहीं हो सकती?

उत्तर- बाहुबली की मूर्ति विश्व धरोहर है। हम चाहते हैं कि जब नए सिरे से विश्व के सात आश्चर्यों को चुना जाए तो इस मूर्ति को भी उसमें शामिल किया जाना चाहिए। इसके लिए न केवल कर्नाटक सरकार, बल्कि भारत सरकार के साथ दुनियाभर में रह रहा हर भारतीय जान लगा देगा। दुनिया में मूर्तियाँ तो बहुत हैं पर ऐसी मूर्ति कहीं और नहीं। दुनिया में शिल्पी तो बहुत से मिलेंगे, पर अरिष्टनेमि जैसा कोई और नहीं होगा। सेनापति दुनिया में एक से बढ़कर एक हुए हैं पर चामुंडराय जैसा सेनापति खोजना मुश्किल है, जिसने माँ के सपने को साकार करने के लिए तीर्थ बनाया। फ़र्क यही है कि यहाँ आकर विचारधारा खो जाती है। तेरहपंथी हो या बीसपंथी, बाहुबली के दरबार में आकर सब एक हैं। यहाँ जैन धर्म के अनेकांत का दर्शन साकार दिखाई देता है।

प्रश्न- दिगंबर जैनों के अलावा कोई और यहाँ अभिषेक क्यों नहीं कर सकता? क्या बाहुबली जैसे महान् साधक को जाति में सीमित करना ठीक है?

उत्तर- वह एक पवित्र अधिकार है। अधिकार के लिए पात्रता ज़रूरी है। भगवान बाहुबली की मूर्ति पर जो अभिषेक कर रहा है, वह मन, वचन, कर्म से अहिंसक होना चाहिए। आमतौर पर सब जातियों में ऐसी पात्रता पूरी होते नहीं देखी जाती, इसीलिए इस तरह की शर्तें रखी जाती हैं। कोई हिंसक व्यक्ति मूर्ति का अभिषेक करे यह ठीक नहीं।

प्रश्न- मगर सभी दिगंबर जैन धर्मावलंबी अहिंसक होते हैं, इसकी भी तो गारंटी नहीं होती!

उत्तर- धर्म गारंटी और वारंटी पर नहीं, विश्वास पर चलता है।

प्रश्न- यदि कोई अन्य जाति का व्यक्ति इन सब शर्तों का पालन करता है, तो उसे अभिषेक की मान्यता क्यों नहीं मिलनी चाहिए? क्या आप

इसके लिए कोई पहल करेंगे?

उत्तर– बिल्कुल, मैं इसका पक्षधर हूँ कि कोई व्यक्ति यदि इन शर्तों को पूरा करता है और वह बाहुबली को पूरी श्रद्धा के साथ अभिषेक अर्पित करना चाहता है, तो उसे यह अधिकार दिलाना चाहिए। यदि आयोजन समिति मुझे अगली बार महामस्तकाभिषेक समारोह में बुलाएगी, तो ज़रूर मैं इस बात के लिए पहल करूँगा।

प्रश्न– यहाँ हुए श्रावक सम्मेलन में साधु-साध्वियों की कठिन नियम-चर्या को लेकर चर्चा चली। क्या कुछ नियमों में ढील नहीं दी जानी चाहिए, क्या आप भी नियमों के सख़्ती से पालन के पक्ष में हैं?

उत्तर– परिवर्तन की जब भी बात चलती है, तब हमें याद रखना चाहिए कि दृष्टांत तो बदले भी जा सकते हैं, लेकिन सिद्धांत नहीं। जैन मुनि की अपनी आचार संहिता है, जिसकी वजह से वे जैन मुनि हैं। यदि नियमों की सख़्ती बदल गई, तो फिर दिगंबर जैन और दूसरे साधुओं में क्या फर्क रह जाएगा। जैन मुनियों के मूल सिद्धांत (मूल गुण 28) हैं। उनमें ऋषभदेवजी से लेकर आचार्य शांतिसागरजी तक और आज भी कोई परिवर्तन नहीं हुआ है और नहीं होना चाहिए।

प्रश्न– पर आपको नहीं लगता कि खुले में शौच के लिए जाना स्वास्थ्य के लिए हानिप्रद है और इससे कोई अच्छा संदेश नहीं जाता?

उत्तर– जैन मुनियों के लिए फ्लश टायलेट निषेध है। चूंकि मुनि गर्म पानी इस्तेमाल करते हैं और यदि गर्म पानी सेप्टिक टैंक में जाएगा, तो उससे कितने जीव मरेंगे? अहिंसा व्रत के लिए हम जितना अधिक से अधिक नियमों का पालन कर सकें, करना चाहिए। इसलिए नियमों में बदलाव की कोई गुंजाइश नहीं है।

प्रश्न– अपनी इन्हीं मर्यादाओं के चलते, जिनमें विदेश यात्रा का निषेध भी शामिल है, क्या जैन धर्म बहुत सिमटकर नहीं रह गया है ?

उत्तर– हीरे की दुकानें प्राय: कम ही हुआ करती हैं और उनमें ग्राहक भी बहुत कम ही आते हैं। मुझे लगता है जैन धर्म के बारे में भी यही बात समझनी चाहिए। हीरे की इस दुकान में ग्राहक थोड़े ही होंगे। आर्टिफिशियल ज्वैलरी आजकल बहुत चल रही है पर उसमें ऑरिजनल्टी का अभाव है। शुरू से ही हमारे तीर्थंकरों ने क्वालिटी पर जोर दिया। जो मोक्ष जाने के अभ्यर्थी हैं, वे थोड़े से ही होंगे।

प्रश्न– क्या कोई मुनि चाहे तो फिर से क्षुल्लक दीक्षा ले सकता है?

उत्तर– ऐसी व्यवस्था तो नहीं है, पर कोई रोक भी नहीं है। पुन: क्षुल्लक दीक्षा लेने से मुनि के रूप में की गई साधना ख़त्म हो जाएगी। बहुत बार असाध्य रोगों में उपचार यदि मुमकिन हो तो समाधि की उम्र के मद्देनज़र ऐसी अनुमतियाँ दी जाती हैं।

प्रश्न– क्या आप क्षुल्लक दीक्षा लेकर विदेश जाने वाले हैं?

उत्तर– मुनि तरुणसागर को लेकर बाज़ार में अफ़वाहों का बाजार गर्म रहता है। जब तक मेरी साँस है, तब तक तरुणसागर को मुनि जीवन की साधना है। अब तो साँस टूटने के साथ ही यह साधना टूटेगी। लोग इस बारे में क्या कहते हैं, मुझे उससे कोई लेना-देना नहीं।

प्रश्न– कुछ लोग तो यह भी कहते हैं कि आप केशलोंच के बजाए फ्रेंचकटनुमा दाढ़ी के लिए शेव करते हैं?

उत्तर– इसका जवाब देना मैं जरूरी नहीं समझता। भगवान ने लोगों को कम से कम दो आँखें तो दी हैं। वे आँखें ही निर्णय लें। मैं 13 साल की उम्र से केशलोंच कर रहा हूँ। ब्रह्मचारी और क्षुल्लक अवस्था से केशलोंच कर रहा हूँ, जबकि इस अवस्था में यह करना आवश्यक नहीं होता और उस उम्र में केशलोंच बहुत कष्टप्रद भी होता है। जब मैंने उस उम्र में केशलोंच किया तो अब क्यों नहीं करूँगा। मैं इसमें क्या करूँ कि प्रकृति ने मुझे फ्रेंचकट दाढी दी है। मुझे इसको लेकर किसी को सफाई देने की जरूरत नहीं।

प्रश्न– महान् आचार्य श्री विद्यासागर जी द्वारा कुंडलपुर में पुरातात्विक महत्व की मूर्ति को हटाकर अन्यत्र स्थापित किया गया। इससे तनाव भी पैदा हुआ। क्या आपको लगता है कि इस तरह का काम उचित है?

उत्तर– अच्छे काम के लिए प्रेरणा संत ही दे सकता है। मंदिर निर्माण, जनकल्याण आदि के लिए श्रावक को प्रोत्साहित करना मुनि, आचार्य का फर्ज होता है। जैन परंपरा में इसे 'शुभराग' माना जाता है।

प्रश्न– मगर यहाँ हुए श्रावक सम्मेलन में हज़ारों श्रावकों की मौजूदगी में आचार्य श्री वर्धमानसागरजी ने इस कार्य की तीखी आलोचना की है?

उत्तर– आचार्य श्री विद्यासागर जी जैन परंपरा के प्रबुद्ध आचार्य हैं। वे कोई भी क़दम उठाते हैं, तो उसमें बहुत दूरदृष्टि होती है। वे सोच–समझकर ही कुछ करते हैं। बेशक, मैं भी इस पक्ष में हूँ कि पुरातात्विक महत्व की चीज़ों से छेड़छाड़ नहीं होनी चाहिए, फिर भी आचार्य श्री विद्यासागरजी ने यह क़दम उठाया है तो यह उनकी दूरदर्शिता ही रही होगी।

प्रश्न– आप वक्ता हैं या दृष्टा? मुनि हैं या कवि?

उत्तर– कवि मुनि हो यह ज़रूरी नहीं, पर मुझे लगता है कि मुनि ज़रूर कवि होता है। जो अनुभवी है, वह कवि है और मुनि अनुभवी होता है। जो मौन हो गया वह मुनि हो गया। जो मुनि हो गया, वह मुखर हो गया। 'दिखता है वह मुखर, मगर लगता है मानो मौन है।' यदि आप मेरे शब्दों पर ग़ौर करें या प्रवचनों का प्रवाह देखें, तो काव्य को साफ़–साफ़ महसूस किया जा सकता है। हमारे मुनियों ने स्वाध्याय तो जारी रखा, पर जुगाली करना बंद कर दिया। इसलिए समाज व नई पीढ़ी उनकी ओर उतनी आकर्षित नहीं होती, जिसके वे हक़दार हैं। मैं स्वाध्याय कम करता हूँ और गाय की तरह जुगाली अधिक करता हूँ। मुनि तो गाय की तरह होता है सरल–सहज। राजनेता भैंस की तरह जुगाली करते हैं।

प्रश्न– आप राजनेता होते तो शायद देश का ज़्यादा भला कर पाते?

उत्तर– दस दिन पहले भट्टारक श्री चारुकीर्तिजी सहज ही बोले कि आपको जल्दी दीक्षा नहीं लेनी चाहिए थी। यदि ऐसा होता तो आप पहले व्यक्ति होते जो जैन धर्म को पूरी दुनिया में ले जाते। असल बात यह है कि राजनेताओं पर समाज को भरोसा नहीं रहा, भले ही वे सच कह रहे हों। परिवर्तन के लिए तो धर्म और अध्यात्म ही कारगर हो सकता है। आज महात्मा गाँधी भी हों तो भी लोग उस पर यक़ीन नहीं करते, तो मेरी क्या बिसात है। नेता देश के चेहरे को भले ही बदल सकते हैं, पर समय के चेहरे को बदलने में तो संत ही सफल हो सकते हैं।

प्रश्न– मगर आज तो संतों के बीच भी भारी राजनीति हो रही है?

उत्तर– देश और समाज को आज दयनीय स्थिति में पहुँचाने के पीछे दो ही मुख्य कारण हैं। पहला राजनीति में अपराधीकरण का और दूसरा धर्म का व्यवसायीकरण। हम इन दो चीज़ों को सुधार दें तो समाज व राष्ट्र स्वतः सुधर जाएगा।

प्रश्न- कभी-कभी लगता है कि आप भी धर्म का व्यवसायीकरण कर रहे हैं?

उत्तर- कैसे ?

प्रश्न- अपनी गुरु-दीक्षा की फीस लेकर व पुस्तक से लेकर पेंडल तक बेचकर?

उत्तर- नहीं, ऐसा नहीं है। गुरु-दीक्षा के लिए जितनी फीस ली जाती है, उतने का सामान दीक्षार्थी को उपलब्ध करा दिया जाता है। यहाँ फीस केवल इसलिए रखी जाती है कि भीड़ न हो जाए। यदि सौ दीक्षार्थियों में से मैं एक में भी सुधार की आग जला सकूँ तो मैं संतुष्ट हूँ। हजारों की भीड़ इकट्ठी कर कुछ भी सार्थक नहीं कर पाना मेरी नजर में निरर्थक है। फिर दीक्षार्थी को दीक्षा देकर छोड़ नहीं देना, बल्कि उससे जीवनभर का संपर्क बनाना होगा। ऐसे में चयन का यह सबसे सीधा उपाय है, जिसका उद्देश्य धन कमाना नहीं बल्कि धर्म को पुष्ट करना है।

प्रश्न- आपने एक प्रवचन में कहा कि श्रावकों के आचार-विचार के लिए मुनियों-आचार्यों को उनके घर पर छापामार कार्यवाही करनी चाहिए?

उत्तर- वर्तमान में श्रावक के आचार-विचार में तेजी से ह्रास हो रहा है। खान-पान में, घर-परिवार में जो शुचिता और पवित्रता होनी चाहिए, वह प्रभावित हो रही है। रिश्ते भी ख़तरे में पड़ते नजर आ रहे हैं। कई बार रिश्ते ख़ुद के निकट के लोगों के कारण ही ख़तरे में पड़ रहे हैं। जब श्रावक मुनियों के आहार-विहार पर नजर रखता है, तो श्रावकों के आचरण में आ रही गिरावट के मद्देनजर संत संसद में यह प्रस्ताव पास होना चाहिए कि संत भी श्रावक पर नजर रखे। उस श्रावक पर जो मुनि को आहार देता है, जप-तप करता है, उसका कमंडल पकड़ता है। ऐसे श्रावक के घर मुनि बिना किसी पूर्व सूचना के जा धमके और देखे कि उसकी सेवा करने वाले श्रावक का अंदर का जीवन कैसा है? श्रावक को इस बात का भय रहेगा और इसके चलते श्रावक के आचरण की शुद्धि हो जाएगी।

प्रश्न- पर इस वक़्त तो दिगंबर समाज भी एक नहीं है? इतना छोटा समाज होते हुए भी एक न रह पाने की क्या वजह है?

उत्तर- यह सही है कि आत्मानुशासन कम हो रहा है। अनुशासन में हम दो तरफ से मात खा रहे हैं। एक तो आचार्यों का अनुशासन उतना कारगर नहीं रह गया है।

दूसरा आत्मानुशासन भी कमज़ोर पड़ता जा रहा है। जब यह होता है, तो समाज में स्वेच्छाचार बढ़ता है। जब संत, मुनि, आचार्य एक अनुशासन में नहीं हैं तो समाज के लोग कैसे एक रह पाएँगे। इसका जवाब तो एक-एक संत से लेना होगा। वैसे दिगंबर जैन समाज इतना भी अधिक विभाजित नहीं है, जितना श्वेतांबर जैन समाज है। ख़ासकर आप स्थानकवासी और मूर्तिपूजक को देखें, तो उनके हर आचार्य और मुनि के नाम पर समाज बँटा हुआ है। जैन समाज में जो चार सम्प्रदाय हैं उनमें सबसे अच्छा अनुशासन तेरहपंथी समाज में देखने को मिलता है, जिसके प्रमुख आचार्य श्री महाप्रज्ञजी हैं। उसके साधु-साध्वियों का अनुशासन देखते बनता है। वह समाज तेजी से उभर रहा है, क्योंकि उसमें अनुशासन है। उसके बाद दिगंबर जैन समाज का अनुशासन है। हमारे यहाँ (दिगंबर समाज में) आचार्यों, मुनियों को लेकर समाज बँटा हुआ नहीं है।

प्रश्न- श्रवणबेलगोला से क्या सीख लेकर जा रहे हैं?

उत्तर- एक तो जिन बहुत सारे आचार्यों-मुनियों के साथ मैं उठा-बैठा, उससे बहुत से अनुभव मिले। पूरा देश ही यहाँ मौजूद था। लोगों की बातें सुनीं, समझीं, देखीं। अब मेरा मिशन है कि बाहुबली का जीवन भी दुनिया के सामने रखूँ महावीर के साथ-साथ। अब यहाँ के बाद से बाहुबली भी मेरे कथानायक होंगे।

प्रश्न- और आपने श्रवणबेलगोला को क्या दिया?

उत्तर- कुछ नहीं दिया, पर दूँगा - बाहुबली को कथानायक बनाकर।

प्रश्न- आपको मुनि-जीवन की इस अवस्था में आकर कभी कोई अफ़सोस नहीं होता?

उत्तर- पिछले 25 साल में मैंने जो भी निर्णय लिए उनके लिए मुझे कभी पश्चाताप नहीं करना पडा। मेरे सभी निर्णय ठीक रहे। शायद मैं पिछले जन्मों में प्रोफेसर, पॉलिटिशियन आदि की भूमिका निभा चुका हूँ। अब मैं अपनी सही भूमिका में हूँ।

प्रश्न- आपने सांसारिक मोह दो दशकों से छोड़ा हुआ है। फिर भी अपने प्रवचनों से कैसे महीन से महीन सांसारिक तारों को झनझना पाते हैं?

उत्तर- मैंने संसार त्यागा है, समाज नहीं। अभी भी मैं समाज में ही उठता-बैठता हूँ। समाज का ही दिया खाता हूँ। समाज से लेता हूँ और समाज को लौटा देता हूँ।

इसलिए मैं 'आह' की ज़िन्दगी को 'वाह' की ज़िन्दगी में बदलने की कोशिश करता हूँ। ज़िन्दगी को आह और वाह दोनों के साथ जिया जा सकता है। आह के साथ जीना मजबूरी है। वाह के साथ जीना ज़िन्दगी का उत्सव बन जाता है। सात वारों के अलावा परिवार हमारा आठवाँ वार है। सात दिन मिलते हैं, तो सप्ताह बनता है, सप्ताह से महीने और महीने से साल बनते हैं। भाई-बहन, माता-पिता से मिलकर परिवार, परिवार से समाज, फिर देश और विश्व बनता है। अगर हम इस एक वार को सुधार लें तो ज़िन्दगी संभल ही नहीं सँवर भी जाएगी। इसलिए मेरा नया नारा है - 'आठवाँ वार - परिवार।'

प्रश्न- आपने अपने एक प्रवचन में भ्रूण में अथवा पैदा होने के बाद मार दी जाने वाली अनचाही कन्याओं को गोद लेने की बात फिर दोहराई है। क्या कोई ख़ास योजना है आपके पास?

उत्तर- देश में सैकड़ों दंपति हैं जिनको संतान चाहिए। वे संतान के लिए तरसते हैं। मैं फिर कहता हूँ कि ऐसी अनचाही संतानें मेरे दरवाज़े मुँह अँधेरे डाल जाएँ, मैं उसे माँ-बाप दूँगा। रतलाम में ऐसा ही हुआ जब एक नवजात शिशु मुझे मेरे दरवाज़े पर रोता मिला। सुबह मैं पसोपेश में था कि अब इसका क्या करूँ और शाम को पसोपेश इस बात के लिए थे कि इसे किसे दूँ क्योंकि दर्जनों लोगों की लाइन लगी हुई थी।

— ◌ —

पल-दो-पल

नब्ज़ पर हाथ

मुनिश्री तरुणसागरजी अपने श्रवणबेलगोला प्रवास के दौरान कभी कभी अन्य संतों से भेंट करने के लिए निकल पड़ते। ऐसे ही एक दिन वे आचार्य श्री पदमनंदीजी से मुलाक़ात करने त्यागी निवास जा पहुँचे। वहाँ 35-40 साधु पहले से ही मौजूद थे। बातचीत शुरू हुई और कई मुद्दों पर आचार्यवर व मुनिश्री के बीच मंत्रणा हुई। यह क्रम जारी था ही कि वहाँ मौजूद एक अन्य आचार्य श्री कुमुदनंदीजी ने तरुणसागरजी से पूछा - 'आपकी सभाओं में 50-50 हजार श्रोता कैसे जुट जाते हैं?' यह सुनते ही आचार्य श्री पदमनंदीजी ने कुमुदनंदीजी को यह कहते हुए चुप कराने की कोशिश की कि - 'अभी यह सवाल करने का वक़्त नहीं है।' कुमुदनंदीजी चुप नहीं हुए और उन्होंने कहा - 'अरे कैसे नहीं पूछे? यहाँ दिन भर में पाँच लोग नहीं आते तो वहाँ पचास हज़ार लोग कैसे पहुँच जाते हैं?' शांत भाव से बैठे मुनिश्री तरुणसागरजी ने कुमुदनंदीजी की जिज्ञासा शांत करते हुए कहा कि - 'मैं बस इतना करता हूँ कि मैं लोगों की नब्ज़ पर हाथ रख देता हूँ। ज़माना अपने-आप मेरी सभा में अपने कान रख देता है। आप भी यह कर सकते हैं, बशर्ते आप भी लोगों की नब्ज़ पकड़ लें।'

पल-दो-पल

इनसे मिलिए

ये श्री बाहुबली हैं। विंध्यगिरि वाले नहीं ये पुलिसवाले हैं। पूरा नाम है- बाहुबली सिद्धरायमकानी। वे बेलगाम से आए हैं कि तरुणसागरजी के मुनि-निवास पर मिल गए। क्या ड्यूटी पर आए हैं ? यह पूछे जाने पर वे बोले - 'नहीं, ड्यूटी पर नहीं आया, महाराज के दर्शन के लिए आया हूँ।' मजा यह है कि बाहुबली तरुणसागरजी के दर्शन के बाद भी श्रवणबेलगोला में डटे रहे तो फिर पूछने से रहा नहीं गया - दर्शन हुए नहीं अभी? कब तक यहाँ रुकने का इरादा है? जवाब आया - 'मैं यहाँ महीने भर की छुट्टी लेकर आया हूँ। महाराज की सेवा करूँगा और उनके सान्निध्य में ज्ञान की चार बातें सीखूंगा।' आपने किसी पुलिसवाले को महीनेभर की छुट्टी मिलते देखा है? बाहुबली को भी नहीं मिल रही थी। उनके अधिकारी ने बहुत मिन्नतों के बावजूद केवल 15 दिन की छुट्टी मंजूर की। तब बाहुबली ने अपने अधिकारी

पर अमोघ अस्त्र चलाते हुए कहा- मैं तो पूरे महीने की छुट्टी पर जाऊँगा, चाहे नौकरी चली जाए। आख़िर यह मेरे गुरु के दर्शन का सवाल है। बाहुबली के इस भाव पर मुनि सेवा में मौजूद बुंदेलखंड निवासी लक्ष्मी साहू ने कहा- 'धन्य हो भइया और धन्य तुम्हारे भाग। तुम महीना भर की छुट्टी लेकर इहाँ आ गए हो।' बेशक बाहुबली ने पूरे एक माह तक महाराज की सेवा की और छुट्टी ख़त्म होने पर बेलगाम जाते हुए उनकी आँखों में आस्था और तृप्ति के भाव साफ पढ़े जा सकते थे।

— ●●● —

तरुणसागरजी के प्रवचन 'इंस्टेंट फूड'

वे मंजुनाथ स्वामी के प्रतिनिधि माने जाते हैं। दक्षिण कर्नाटक में वे एक देवता की तरह पूजे जाते हैं। उनकी मान्यता किसी न्यायाधीश की-सी है। उनकी जुबान से निकला हर निर्णय समाज को शिरोधार्य होता है। लोग उनके सामने अपने अपराधों, पापों, गलतियों को स्वीकार करते हैं और जो भी दंड वे निर्धारित कर देते हैं लोग अक्षरश: स्वीकार भी कर लेते हैं। लोग उन्हें धर्माधिकारी कहते हैं। वे धर्मस्थल के धर्माधिकारी हैं भी। हेगडे उनकी पदवी है और पूरे कर्नाटक में एक नाम हर जगह पूजा जाता है वह है - श्री वीरेन्द्र हेगड़े।

श्री हेगडे महामस्तकाभिषेक समारोह के दौरान दो बार मुनिश्री तरुणसागरजी से मिले। दोनों ही बार उन्होंने मुनिश्री से अनुरोध किया कि वे धर्मस्थल पधारें और अपनी पुण्य वाणी से क्षेत्र की जनता को कृतार्थ करें। मुनिश्री ने उनके अनुरोध पर विचार के लिए आश्वस्त भी किया और उनके द्वारा शिक्षा, धर्म व समाज सुधार के क्षेत्र में किए जा रहे कार्यों के लिए उनकी सराहना भी की। मुनिश्री यह जानकर बहुत प्रभावित हुए कि उनके यहाँ प्रतिदिन दस हजार से भी ज्यादा लोग अन्नदान पाते हैं।

श्री हेगड़े बताते भी हैं कि धर्मस्थल में विराजित चारों देवताओं का उन्हें स्पष्ट निर्देश है कि - अन्नदान करो। किसी को ना न करो। आज तुम्हारा है और कल हमारा। इसलिए कभी भी कल की चिंता मत करो। यह भी सच है कि धर्मस्थल से कोई ख़ाली लौट के नहीं जाता।

श्री हेगड़े के मुताबिक 1981 में आचार्य श्री विद्यानंदजी के क्षेत्र में आगमन से जैन धर्म का प्रचार-प्रसार काफी तेजी से हुआ है। साथ ही महामस्तकाभिषेक समारोह को भी उनके आने से नई प्रतिष्ठा प्राप्त हुई है। धर्माधिकारी श्री हेगड़े तरुणसागरजी से ख़ासे

प्रभावित हैं और वे कहते हैं कि उन्होंने श्रवणबेलगोला में सबके दिल जीत लिए हैं। श्री हेगड़े ने कहा कि उनके प्रवचन युवा पीढ़ी के लिए 'इंस्टेंट फूड' की तरह है। धर्म का सार वे सरल शब्दों मे परोसते हैं जिसे हर उम्र के लोग समान ढंग से ग्रहण करते हैं। उनके प्रवचन समाज के लिए रेडिमेड ज्यूस की तरह हैं।

— ●●● —

जानी-मानी गायिका अनुराधा पौडवाल 16 फ़रवरी को श्रवणबेलगोला पहुंची और उन्होंने अपने भजनों व गीतों से हज़ारों लोगों का मन मोह लिया। कार्यक्रम से पहले अनुराधा जी मुनिश्री तरुणसागरजी से आशीर्वाद लेने पहुँचीं और उनकी आनन्द यात्रा में शामिल हुईं। आनन्द यात्रा में अनुराधा जी ने मुनिश्री के मंच से नवकार मंत्र भी पेश कर बाहुबली और मुनिश्री के प्रति अपनी आस्था प्रकट की। उन्होंने कहा कि मुनिश्री तरुणसागरजी के प्रवचनों से मैं बहुत प्रभावित हूँ और उनके द्वारा समाज सुधार के लिए किए जा रहे प्रयास निश्चय ही प्रशंसनीय हैं।

— ●●● —

महामस्तकाभिषेक समारोह शुरू होने के दो दिन पहले उपराष्ट्रपति श्री भैरोंसिंह शेखावत भी श्रवणबेलगोला पहुँचे। उनके साथ नवनियुक्त मुख्यमंत्री श्री एच.डी. कुमारसामी के अलावा राज्यपाल श्री टी.एन. चतुर्वेदी व अन्य नेता भी थे। उपराष्ट्रपति ने आचार्य श्री वर्धमानसागरजी एवं मुनिश्री तरुणसागरजी से आशीर्वाद भी लिया। राज्यपाल श्री चतुर्वेदी ने उपराष्ट्रपति से तरुणसागरजी का परिचय क्रांतिकारी संत के रूप में कराया, तो श्री शेखावत बोले- 'मैं इन्हें जानता और मानता भी हूँ। इन्हें कौन नहीं जानता भई !' इस मौके पर अपने संबोधन में तरुणसागरजी ने कहा कि जब तक भगवान बाहुबली के विंध्यगिरि पर होने से हमेशा हासन ज़िले पर उनकी विशेष कृपा बनी रहेगी। उन्होंने कहा कि 'मुनि, आचार्य बदल जाएँ, तो भले ही बदल जाएँ, ग्रंथ भी नष्ट हो जाएँ, पर जब तक यह मूर्ति मौजूद है, दुनिया में जैन धर्म का डंका बजता रहेगा।'

— ●●● —

महामस्तकाभिषेक कमेटी 2006 के महामंत्री श्री अरविंद राव दोशी (मुंबई) ने शोलापुर में आचार्य श्री वर्धमानसागरजी और मुनिश्री तरुणसागरजी का मिलन देखा तो उस सुखद अहसास को वे अब भी दिल से लगाए बैठे हैं। महामस्तकाभिषेक आयोजन समिति के सबसे व्यस्त पदाधिकारियों में से एक श्री दोशी

ने तमाम व्यस्तताओं के बावजूद कई बार मुनिश्री से मिलने का वक्त निकाला और उनसे मार्गदर्शन लेते रहे। वे कहते हैं मुनिश्री तरुणसागरजी ने श्रवणबेलगोला में अपने प्रवेश के वक्त दिए गए प्रवचन से ख़ासी लोकप्रियता अर्जित कर ली और उसके बाद तो वे हर दिन अधिक से अधिक दिलों पर राज करने लगे। उन्हें लगता है कि मुनिश्री युवा पीढ़ी को आध्यात्मिक रूप से अधिक समृद्ध बना रहे हैं क्योंकि उनके प्रवचनों में जैनधर्म के जटिल सिद्धान्त भी अत्यन्त व्यावहारिक अंदाज में उजागर होते हैं।

— ●●● —

विद्वान लेखक और गोमटेश गाथा से चर्चित साहित्यकार श्री नीरज जैन (सतना) का कहना है कि बाहुबली की इस भूमि पर कोई साधु बड़ा-छोटा, कम या ज्यादा लोकप्रिय नहीं। साधु ही नहीं, हर कोई यहाँ बाहुबली की आराधना के लिए आता है, उपदेश देने नहीं। उन्होंने तरुणसागरजी की प्रवचन शैली की प्रशंसा करते हुए कहा कि वे भगवान महावीर के सिद्धांतों के प्रचार-प्रसार के लिए बड़ा काम कर रहे हैं। वे उम्र से तो तरुण हैं ही, विचारों से भी तरुण हैं। उनके गुरु आचार्य श्री पुष्पदंत सागर जी ने उनका बडा सार्थक नाम दिया है। नीरजजी के मुताबिक कुछ संत तपस्या में आगे होते हैं और कुछ ज्ञान की साधना में आगे बढ़ जाते हैं तो कोई अपनी प्रवचन शैली में बाजी मार ले जाता है। पर उपयोगी सब साधु हैं। ठीक उस गुलदस्ते की तरह जो अलग-अलग किस्म के रंग-बिरंगे फूलों से सजा है। हर फूल की अपनी खुशबू है।

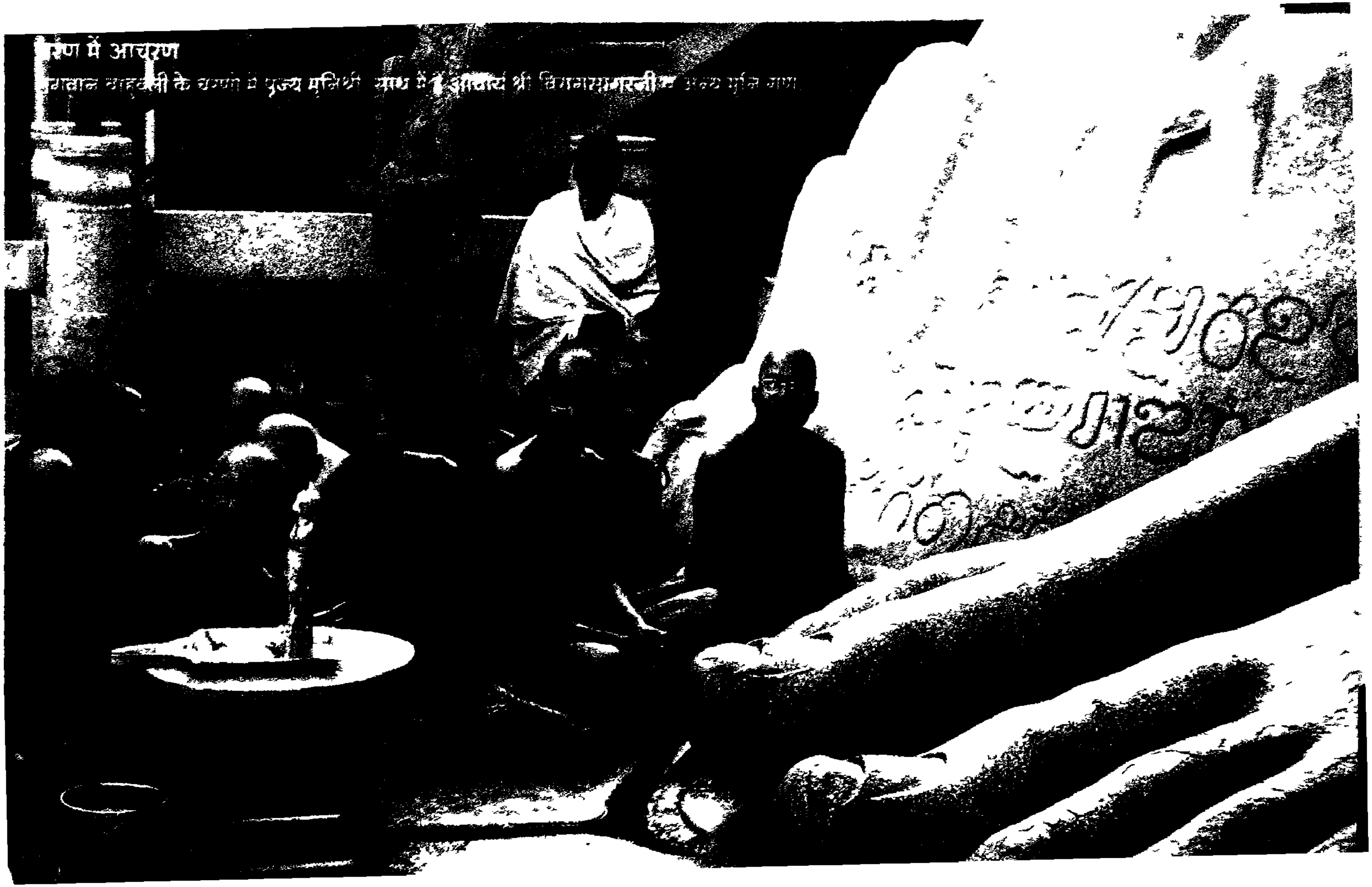
— ●●● —

महामस्तकाभिषेक कमेटी के कार्यकारी अध्यक्ष व बंगलोर के जाने-माने उद्योगपति श्री ए.आर. निर्मलकुमार ने पूरे डेढ माह तक श्रवणबेलगोला में डेरा डाला और व्यवस्थाओं को अंजाम देने में अलसुबह से देर रात तक डटे रहे। उनकी राय में इस बार महामस्तकाभिषेक को लेकर हुए जबर्दस्त प्रचार ने इस देश ही नहीं, पूरी दुनिया की एक बड़ी घटना बना दिया। व्यवस्थाएँ इतनी नियोजित थीं कि लाखों लोग आए-गए, पर कहीं कोई छोटी-सी दुर्घटना नहीं घटी। हालाँकि श्री निर्मलकुमार को लगता है कि महामस्तकाभिषेक के महान् दृश्य को श्रवणबेलगोला पहुँचे कई धर्मालु, चश्मदीद नहीं देख सके, इसका उन्हें भी अफसोस है। पहाडी पर इंच-इंच जगह को उपयोग में लाकर इंजीनियरों ने 5-6 हजार लोगों के एक साथ बैठने की व्यवस्था जुटाई। वे चाहते हैं कि अगले महामस्तकाभिषेक समारोह में और अधिक श्रद्धालुओं को अभिषेक देखने की व्यवस्था मुहैया हो।

— ●●● —



चरणों में पहुंचने की जद्दोजहद.



रण में आचरण

वान बाहुबली के चरणों में पूज्य मुनिश्री साथ में आचार्य श्री विरागसागरजी व अन्य मुनि गण



गुरु परिवार के सदस्यों के साथ पूज्यश्री



बाहुबली के चरण कमल में मुनि संघ. 10 फर., 06

देश के सबसे बड़े संघों में से एक का नेतृत्व करने वाले बुंदेलखंड के आचार्यश्री विरागसागरजी ने तरुणसागरजी के लिए ख़ास राग दिखाया। उन्होंने हमेशा मुनिश्री को स्नेह दिया और दो-एक बार वे अपने संघ के 40 से अधिक साधु-साध्वियों के साथ तरुणसागरजी से मिलने मुनि निवास भी पहुँचे। कुशलक्षेम के बाद उन्होंने तरुणसागरजी से कहा – 'आप हैं तो मुनि, पर आपकी प्रतिष्ठा आचार्यों जैसी है। आप उनसे भी बढकर काम कर रहें हैं और जाहिर रूप से उनसे भी ज्यादा सम्मान भी पा रहे हैं।' विरागसागरजी का कहना था कि – 'आज तरुणसागरजी मुनियों के लिए प्रेरणा हैं। उन्हें दीक्षा लिए 25 साल हो गए पर आचार्य, उपाध्याय जैसे पद के लिए कभी मोह नहीं दिखाया। ये पद उनके लिए महत्व भी नहीं रखते। व्यक्ति पद से नहीं प्रतिभा से पूजा जाता है। तरुणसागरजी ने इस बात को सिद्ध कर दिखाया।' जब आचार्य अपने संघ के साथ बिदा हुए तो तरुणसागरजी उनके सम्मान में उनके शिविर तक उन्हें छोड़ने गए।

— ●●● —

तरुणसागरजी की जिस दिन श्रवणबेलगोला में ऐतिहासिक अगवानी हुई, उसी दिन उनकी अपनी 20-22 साल पुराने साथी से यकायक मुलाकत भी हो गई। मुनिश्री अमितसागरजी और तरुणसागरजी ब्रह्मचारी अवस्था में एक साथ रहे थे। इतने सालों के बाद जब दोनों गले मिले तो उनकी आँखें भर आईं। रुँधे गले से अमितसागरजी ने तरुणसागरजी से कहा-'क्या रे तरुणसागरा' तुम तो कृष्ण हो गए। दुनिया भर में तुम्हारा नाम हो गया और अपने दास सुदामा को भुला दिया।' भावुक तरुणसागरजी बोले-'तुम्हें कैसे भूल सकता हूँ। तुम्हारी याद मेरे दिल में हमेशा बनी रहेगी।'

— ●●● —

त्यागी सेवा समिति के प्रमुख श्रीपाल गंगवाल ने दो सौ से अधिक साधु साध्वियों की सेवा में कोई कसर नहीं छोड रखी। साधुओं के मुँह पर महावीर और बाहुबली के साथ सबसे ज्यादा किसी का नाम आया, तो वे श्री पालजी ही थे, क्योंकि साधुओं की हर जरूरत की पूर्ति का पर्याय वे ही थे। श्रीपालजी, तरुणसागरजी के संबोधित करने की शैली के कायल हैं। उनका कहना है – 'मुनिश्री की अभिव्यक्ति जादू जैसा काम करती है। इतनी राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय कीर्ति हासिल करने के बाद भी वे काफी विनयशील हैं। अपने आचार्यों और मुनियों के प्रति उनकी विनय देखते ही बनती है। दरअसल उनका नाम वात्सल्यसागर होना चाहिए था।

आध्यात्मिक आकाश में जगमगाता नक्षत्र

सन् 2003 का साल था और जनवरी का महीना। अच्छी तरह याद कड़कड़ाती सर्दी के जब इंदौर के दशहरा मैदान पर आग बरसने का अहसास हजारों लोगों ने किया। यहाँ मुनिश्री तरुणसागरजी आए हुए थे और हर दिन सुबह की सर्द हवाओं को चीरती उनकी वाणी को सुनने शहरभर के लोग दौड़ आते थे। अकेले इंदौर ही नहीं पूरे मध्यप्रदेश और आसपास के अन्य प्रांतों के भी सैकड़ों श्रद्धालु यहाँ डेरा डाले हुए थे।

मैं उन दिनों 'नई दुनिया' में हुआ करता था, जो मध्यप्रदेश का प्रतिष्ठित हिन्दी अखबार है। इस अख़बार में मैं नौ साल रहा और इस दौरान देश के कई संतों, धार्मिक नेताओं और शंकराचार्यों से मेल-मुलाकातें कीं। कुछ अपनी निजी दिलचस्पी से तो कुछ अख़बार कवरेज के मकसद से। लेकिन 2003 के साल के जनवरी महीने की कुछ स्मृतियाँ दिमाग में आजतक अंकित है, जब पहले तो तरुणसागरजी को दूर से सुना और फिर जब रहा न गया तो एक दिन उस जगह गया, जहाँ वे ठहरे थे। मुझसे एक बार किसी दफ्तर के क्लर्क

ने एक फॉर्म भरवाते समय पूछा था – 'श्रीमान आपका स्थायी पता क्या है?' मैं कोई संत या दार्शनिक नहीं हूँ। पता नहीं उस सवाल पर कैसे मुँह से निकल गया – 'आदरणीय ! इस संसार में कोई है जिसका कोई स्थायी पता हो?' ऐसे जवाब की उस क्लर्क को भी मुझसे उम्मीद नहीं होगी, लेकिन पहले तो वो चौंका और फिर मेरी बात का मतलब उसे समझ में आया और मुस्कुराकर बोला– 'आप सही कहते हैं.... किसी का कोई पता स्थायी नहीं है।'

उन दिनों इंदौर के केशरबाग रोड की ही किसी कॉलोनी के एक आलीशान मकान में तरुणसागरजी का अस्थायी पता था, जहाँ मैं उनसे मिला। मुझे यह कहने में कोई संकोच नहीं है कि अपने पत्रकारीय जीवन में अलग-अलग जिन क्षेत्रों की नामचीन विभूतियों से मैंने मुलाक़ातें कीं, उनमें से कुछ गिने-चुने ही ऐसे हैं, जिन्होंने वैचारिक धरातल पर मेरे भीतर हलचल पैदा की हो और कोई अमिट छाप छोड़ी हो। मैं गर्व से कहता हूँ कि मुनिश्री तरुणसागरजी उनमें अग्रणी हैं। कुछ बातें और कुछ अनुभव होते हैं, जो शब्दों की सीमा के परे होते हैं। तरुणसागरजी के सान्निध्य का अनुभव कुछ ऐसा ही है।

वे भारत की दस हजार साल पुरानी उस सांस्कृतिक और आध्यात्मिक परम्परा के समकालीन प्रतिनिधि हैं, जिसने इस देश को ज्ञान के क्षेत्र में विश्व-गुरु का रुतबा दिलाया है। आप उनके विचार-वृत्त में आकर तीर्थंकरों का तेज, बुद्ध के वैराग्य का वैभव, आदि शंकराचार्य की साधना और विवेकानन्द के तर्कों की ताजगी का अहसास कर सकते है। यह वजह है कि बहुत कम उम्र में वे न केवल राष्ट्रव्यापी प्रसिद्धि हासिल कर सके, बल्कि अपने चाहने वालों में स्थायी छाप भी उन्होंने छोड़ी। दिगम्बर जैन मुनियों की कठिनतम जीवनचर्या और महावीर की दुर्गम मर्यादाओं के बीच रहकर उन्होंने जो ऊर्जा पैदा की है, वो किसी शोध के विषय से कम नहीं है। वरन्, हो सकता है कि मुनिश्री तरुणसागरजी जिस आध्यात्मिक मार्ग पर निकले, वे स्वयं तो जीवन की नश्वरता और समाधि के गहरे अनुभव प्राप्त कर मोक्ष पा जाते और किसी को कानोंकान पता भी न चलता। लेकिन अगर ऐसा नहीं हो सका और पूरी दुनिया को ये ख़बर हो गई कि बुंदेलखंड की मिट्टी से कोई शख़्स निकला है, जिसने अपने जीवन में वर्द्धमान की प्रतिज्ञा को शिरोधार्य किया है, जो संसार के समस्त ऐश्वर्य के असर के परे नंगे पाँव पैदल घूमता है, जो वर्षाकाल में पूरे चार महीने तक एक ही जगह ठौर बनाता है और कहीं भी रहे, दुनियाभर के विचारशील को आंदोलित करता रहता है। जैसे चेता रहा हो – 'कब तक सोते रहोगे? हम जागे हैं, तुम भी जागो। जागरण का अनुभव लो।'

अहम बात यह है कि वे अपने प्रवचनों में किसी को नहीं बख़्शते। कभी-कभी

लगता है कि वे एक ऐसा आईना लिए घूम रहे हैं जो सामने वाले को उसकी असलियत दिखाता है। वे नेताओं पर बुरी तरह बरसते हैं और राजनीति की बदहाली के लिए उन्हें लताड़ने की हिम्मत रखते हैं। उनकी सभाओं में आए नेता बगलें झाँकते हैं और सुधरने की सीख लेकर जब लौटते हैं तो कहते हैं - 'कुछ भी हो बाबा बात पते की कहता है।' अख़बार वालों को धार्मिक प्रवचन करते समय सबसे बडी मुश्किल यह होती है कि घंटे-डेढ़ घंटे के प्रवचन में हैडिंग क्या बनाएँ, लीड क्या लिखें और पूरी खबर क्या लिखें? क्योंकि आमतौर पर धर्मसभाओं में पहले भी हजार बार दोहराए जा चुके बासी दृष्टांत, पौराणिक कथाएँ और किताबी बातें ज्यादा होती हैं लेकिन मुनिश्री मीडिया वालों के लिए ख़बरों की खान हैं इसलिए हर बात हैडिंग में लेने लायक होती है। इसी मौलिकता ने उन्हें जैन समाज के बाहर भी अपार जनप्रियता प्रदान की है, उनकी सभाओं में जितने जैन होते हैं, उससे कहीं ज्यादा अजैन होते हैं। यह बात उनकी व्यापक पहुँच का सबूत है।

मैंने मुनिश्री से पूछा था कि ये हजारों की भीड सुनने आती है लेकिन बदलता क्या है? हर बार लोग सुनते हैं और अपनी दुनिया में लौटकर वही सब करने लग जाते हैं, जिससे परेशान होकर सुनने-समझने, रोशनी और रास्ते की तलाश में आते हैं। क्या वाकई लोग बदलते हैं ? मुनिश्री का कहना था कि कथा-प्रवचन परिवर्तन के माध्यम हैं। सुनने वालों के भी अपने दायित्व हैं। केवल सुनना ही पर्याप्त नहीं है। लेकिन हजार के हज़ार कभी बदलना संभव नहीं हुआ। हजार सुनेंगे, सौ गुनेंगे, दस चुनेंगे और एक ही बदलेगा। शाश्वत सत्य तक पहुँचने वालों का यह आँकडा शुरू से अब तक इतना ही रहा है।

इस तरह सच को स्वीकार करना हर किसी के बूते की बात नहीं है। वरन् हजारों भावुक श्रोताओं को सामने पाकर कोई भी अहंकार से भर सकता है। लेकिन ये विश्लेषण कि सुनेंगे हजारों, बदलेगा एक ही, इस बात का भी परिचायक है कि तरुणसागरजी की तलाश उसी आदमी की है, और वो ये अच्छी तरह जानते हैं कि भीड कभी एक साथ बदलाव की चुनौती स्वीकार नहीं कर सकती। चिंगारी कोई एक ही होगी। वही लपट पैदा करेगी। मुनिश्री एक कुशल मनोवैज्ञानिक की तरह सत्य की तलाश में आए उस अकेले आदमी और उसके आसपास नजर आती हजारों की भीड के मनोविज्ञान को ख़ूब समझते हैं। इसलिए न तो ख़ुद किसी भ्रम में रहते और न ही सामने वालों को मुगालते में छोड़कर जाते। सबको धूल समान रूप से झाड़ते हैं और मुझे लगता है कि ये काम कोई अदृश्य शक्ति ही कराती है।

जनता के साथ संवाद के लिए उन्होंने जनभाषा को ही अपनाया है और यही वजह

है कि एक साथ हजारों लोग उनके विचारों को सुन-समझ पाते हैं। उन्होंने व्यर्थ विद्वत्ता प्रकट करने और शास्त्रों के गहन गूढ़ किस्से-कथाओं को बाँचने की बजाय रोजमर्रा की जिन्दगी के अनुभवों, विरोधाभासों और आम आदमी की मुश्किलों के बीच से अपनी अभिव्यक्ति का रास्ता निकाला है।

इसलिए जब वे बोलते हैं तो हर आदमी को यह लगता है जैसे उसी की बात कर रहे हों, उसी से बात कर रहे हों, उनकी अभिव्यक्ति को एक अलग आभा प्रदान करता है। मुझे लगता है विदूषकों की तरह मचों पर फूहड़ कविताएँ पढ़ने वाले आज के नामी-गिरामी कवियों के लिए सत्य की ख़ातिर न सही, शब्द की ख़ातिर ही तरुणसागरजी की सभाओं में आना चाहिए। शायद इससे उनकी कविता का शुद्धिकरण सभव हो।

मुनिश्री की उम्र चालीस पार नहीं है। हालाँकि उनकी आयु को इस तरह आँकना ठीक नहीं है, क्योंकि वे शरीर मात्र नहीं हैं, वे एक विचार हैं, एक ऊर्जा-पुज हैं। शरीर की नश्वर सीमाएँ हो सकती हैं, लेकिन विचार शाश्वत और कालजयी होते हैं। हम कामना करते हैं कि ये कृशकाय शरीर भी स्वस्थ और दीर्घायु हो और उनके विचारों का प्रकाश भी भारत के आध्यात्मिक आकाश में एक जगमगाते नक्षत्र की तरह अपना स्थान बनाए, युगों के लिए।

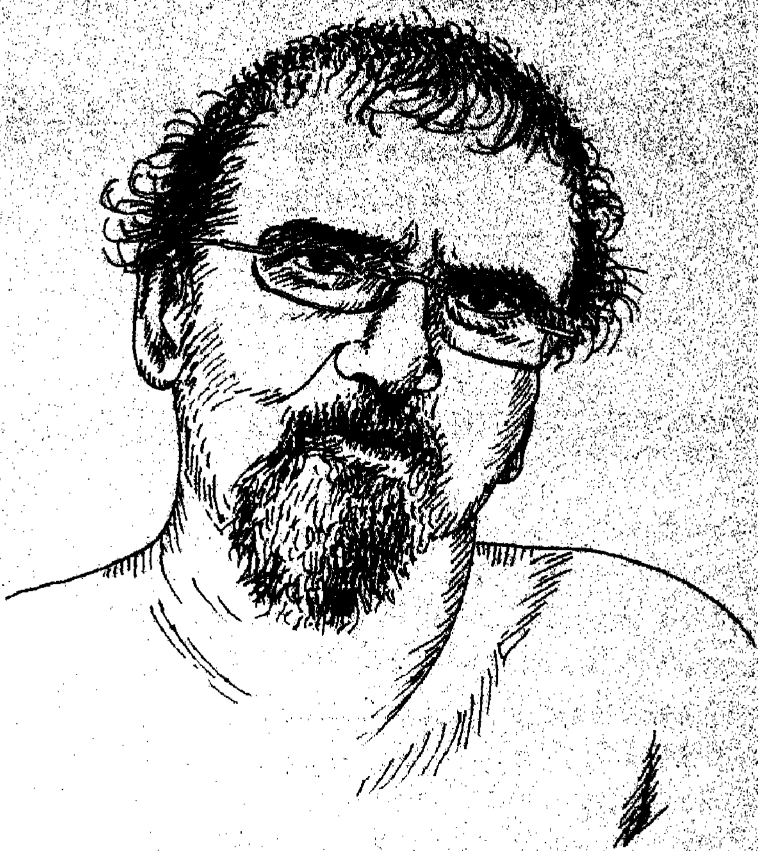
– विजयमनोहर तिवारी

विशेष सवाददाता, दैनिक भास्कर, भोपाल

क्रांतिकारी संत मुनिश्री तरुणसागरजी

एक परिचय

सबसे खास	:	कई किताबें लिखी, जिनमें सबसे मशहूर 'कड़वे प्रवचन (भाग 1, 2, 3)' रही। अब तक इसका 6 भाषाओं में अनुवाद हो चुका है और 3,00,000 प्रतियां बिक चुकी हैं।
पूर्वनाम	:	पवन कुमार जैन
जन्म	:	26 जून, 1967 को दमोह जिले (म.प्र.) के गुहंची गांव में
माता-पिता	:	महिलारत्न श्रीमती शांतिबाई जैन एवं श्रेष्ठ श्रावक श्री प्रतापचन्द्र जैन
तन	:	दुबला-पतला। चेहरे पर हरदम मुस्कान और शरीर हमेशा ऊर्जावान
मन	:	पवित्र और निर्मल। महावीर वाणी के विश्वव्यापी प्रचार-प्रसार के लिए समर्पित।
मुनि दीक्षा	:	20 जुलाई, 1988, बागीदौरा (राज.)
जीवन	:	13 वर्ष की उम्र में संन्यास, 20 वर्ष में दिगम्बर मुनि दीक्षा, 33 वर्ष में लाल किले से राष्ट्र को सम्बोधन एवं 35 वर्ष में 'राष्ट्रसंत' की पदवी से नवाजे गये। 37 वर्ष में गुरुमंत्र दीक्षा देने की नई परम्परा की शुरुआत।
कीर्तिमान	:	आचार्य कुन्दकुन्द के पश्चात् गत दो हजार वर्षों के इतिहास में मात्र 13 वर्ष की वय में जैन संन्यास धारण करने वाले प्रथम योगी।
	:	राष्ट्र के प्रथम मुनि जिन्होंने लाल किले (दिल्ली) से संबोधा।
	:	जी.टी.वी. के माध्यम से भारत सहित 122 देशों में 'महावीर-वाणी' के विश्वव्यापी प्रसारण की ऐतिहासिक शुरुआत करने का प्रथम श्रेय।
	:	भारतीय सेना को सम्बोधित करने वाले देश के पहले संत।
प्रख्याति	·	क्रान्तिकारी संत के रूप में।
भारत पदयात्रा	:	नई सदी की पहली सुबह 1 जनवरी, 2000 को मांस-निर्यात और पशु-हत्या के खिलाफ राष्ट्रीय अहिंसात्मक आन्दोलन का नेतृत्व करते हुए लाल किले पर ऐतिहासिक 'अहिंसा-महाकुंभ' सम्पन्न किया और फिर अहिंसा, शांति, देशप्रेम, अध्यात्म और सामाजिक सद्भाव के लिए भारत-भ्रमण यात्रा शुरू की। यात्रा के चरण – हरियाणा-2000, राजस्थान-2001, म.प्र.-2002, गुजरात-2003, महाराष्ट्र-2004 और अब 12 जून, 2005 से कर्नाटक राज्य में।
साहित्य	.	तीन दर्जन से अधिक पुस्तकें उपलब्ध और उनकी अब तक 10,00,000 से अधिक प्रतियां बिक चुकी हैं।
सम्मान	:	चार राज्यों (म.प्र., गुजरात, महाराष्ट्र, कर्नाटक) की सरकार द्वारा 'राजकीय अतिथि' का सम्मान।
प्रमुख वक्ता	:	अंतरराष्ट्र स्तरीय भगवान बाहुबली के महामस्तकाभिषेक महोत्सव-06 में।
राष्ट्रसंत	:	म.प्र. शासन द्वारा 26 फरवरी, 2003 को दशहरा मैदान, इंदौर में।
पहचान	:	देश में सर्वाधिक सुने और पढ़े जाने वाले तथा दिल और दिमाग को झकझोर देने वाले अद्भुत प्रवचन। अपनी नायाब प्रवचन शैली के लिए देशभर में विख्यात जैन मुनि के रूप में पहचान।



शब्दों का शहंशाह

खण्ड – 2

क्रांतिकारी संत मुनि श्री तरुणसागरजी भगवान बाहुबली के महामस्तकाभिषेक महोत्सव के हर खास कार्यक्रम में 'मुख्य वक्ता' के रूप में अमृत वाणी से श्रद्धालुओं को सम्बोधित करते थे। वे महज 10-15 मिनिट ही बोलते थे मगर गागर में सागर भर देते थे। पूज्य श्री के द्वारा महामस्तकाभिषेक – महोत्सव, 06 श्रवणबेलगोला में प्रदत्त खास प्रवचन यहाँ प्रस्तुत है।

अनुक्रमणिका

खण्ड - 2

कड़वे प्रवचनों में छिपी हैं लड्डू की मिठास



स्वस्तिश्री भट्टारक चारुकीर्ति जी

बहुत दिनों से जिनके लिए हम प्रतीक्षा कर रहे थे और जिनकी चर्चा हम कर्नाटक के पत्र-पत्रिकाओं में, टी वी के जरिए सुन रहे थे, वो पूज्य मुनिश्री तरुणसागर जी महाराज आज हमारे बीच में हैं। मुनिश्री के प्रवचनों को सुनने के लिए लाखों की सख्या में श्रद्धालुओं की उपस्थिति होती है और वो क्रान्तिकारी के नाम से जाने जाते हैं, लेकिन हमारा विश्वास है कि वे 'शातिकारी' हैं। मुनिश्री अपने आपको इस दिगम्बर मुनि अवस्था में सम्मिलित करके जिन शासन की महती प्रभावना कर रहे हैं, करोडों-करोडों लोगों को सन्मार्ग पर लाने का प्रयास कर रहे हैं।

मैंने स्वय देखा है कि जैन धर्म की प्रभावना करने के लिए परम पूज्य राष्ट्रसत आचार्य श्री विद्यानंदजी महाराज की जो विशाल सभाए होती थीं, उनमें लाखों की संख्या में लोग प्रवचन सुनने के लिए जाते थे। मुनिश्री विद्यानंदजी की इसी परम्परा और उत्तरदायित्व को आज अगर कोई निभा रहा है तो हम समझते हैं कि

स्वागत भाषण

मुनिश्री के आगमन पर भावपूर्ण उद्‌गार
15 जनवरी 2006

वह हैं क्रान्तिकारी संत मुनिश्री तरुणसागरजी महाराज। उनकी सभा में आना, उनके साथ उठना-बैठना, उनके साथ चर्चा करना लोग अपना सौभाग्य मानते हैं। इसी कारण आज हम भी अपने आप को सौभाग्यशाली मानते हैं।

परमपूज्य तरुणसागरजी महाराज वैसे मध्यप्रदेश के हैं और आपने बहुत छोटी-सी उम्र में दीक्षा ली। 12 वर्ष की छोटी सी उम्र में ही दीक्षा के लिए उत्सुक हो गए थे तरुणसागरजी और क्षुल्लक दीक्षा ले ली थी। उसके बाद मुनि दीक्षा हुई - 1982 में। आपने 20 जुलाई, 1988 को बागीदौरा (राज.) में मुनि दीक्षा ली और उसके बाद इनके प्रवचनों का तेज शुरू हुआ। पिछले कुछ वर्षों में सभी जगह आपके प्रवचन, 'कड़वे प्रवचन' के रूप में बहुत विख्यात हुए। 'कड़वे प्रवचन' सुनने में कुछ अजीब सा लगता है। लेकिन मुनिश्री के इन कड़वे प्रवचनों में ही मिठाई छिपी हुई है। पूरा देश जिस महामस्तकाभिषेक महोत्सव के लिए यहां श्रवणबेलगोला में उपस्थित हुआ है, यहां भी पूज्य मुनिश्री सभी श्रद्धालुओं को 'कड़वे-प्रवचन' के रूप में मिठास के लड्डू बांटेंगे।

परम पूज्य आचार्य श्री वर्धमान सागरजी महाराज के पावन सान्निध्य में सन् 1993 में महामस्तकाभिषेक सम्पन्न हुआ था, उस समय आप गुजरात से विहार करते-करते यहां पधारे। तभी हमने निवेदन किया था कि अगले महामस्तकाभिषेक में भी आपका सान्निध्य मिलना चाहिए और आज यहां पर आचार्य श्री शांति सागरजी महाराज की परम्परा के आचार्य श्री वर्धमान सागर जी का पावन सान्निध्य इस महामस्तकाभिषेक महोत्सव में बहुत महत्वपूर्ण है। यहां पर उनका चातुर्मास सम्पन्न हुआ और उनके पश्चात् अनेक त्यागीगण, आचार्यगण यहां पर आए और अभी तक श्रवणबेलगोला में लगभग 133 त्यागियों का आगमन हो चुका है।

10 आचार्य, 1 उपाध्याय, 40 मुनि, 2 गणिनी माताजी, 46 आर्यिका, 6 ऐलक, 16 क्षुल्लक एवं 12 क्षुल्लिका माताजी हैं। कुल मिलाकर 133 हैं। आज मुनिश्री तरुणसागरजी के आते ही लगने लगा है कि आज से ही महामस्तकाभिषेक महोत्सव शुरू हो गया है, सभी के अन्दर 'तरुणाई' आ गई है। ऐसा लगता है कि महामस्तकाभिषेक महोत्सव में सभी त्यागीजन पूरे विश्व के लिए अपना संदेश, अपनी श्रद्धा, अपने दिव्य ज्ञान, अपनी दृष्टि-चारित्र से रत्नत्रय प्रभावना करते हुए अपना संदेश देंगे। भगवान बाहुबली का जीवन अनुष्ठान करने के लिए इतने सभी त्यागी परम पूज्य आचार्य श्री शांतिसागरजी महाराज के जीवन से प्रेरणा लेकर यहां एकत्र हुए हैं। इससे महामस्तकाभिषेक समिति गौरवान्वित हुई है। एक जमाना था जब श्रद्धालु त्यागियों को देखने के लिए तरसते थे लेकिन आचार्य श्री शांतिसागरजी की कृपा है कि आज हम

भगवान बाहुबली और भगवान महावीर जैसे दिगम्बर मुनियों के दर्शन कर रहे हैं। पूज्यपाद स्वामी कहते हैं – वपुषा मोक्षमार्ग निरूपयंतम्। यह दिगम्बर अवस्था दिव्य और मोक्ष मार्ग का उपदेश देती है, जहां वचन की आवश्यकता नहीं है।

पूज्य आचार्य श्री वर्धमानसागरजी ने भी हमें पूज्य मुनिश्री तरुणसागरजी को लाने के लिए प्रेरणा दी। आचार्यश्री वर्धमानसागरजी के पावन सान्निध्य में जो भी कार्यक्रम होगा उसमें हर खास कार्यक्रम में मुनिश्री के विशेष मंगल प्रवचन भी हों, यही भावना है।

— ○ —

बेलगाम से बेलगोला तक, 65 दिन की पदयात्रा



आज पैंसठ दिन की पदयात्रा के पश्चात् यहा पहुँचा हूँ। बेलगाम से श्रवणबेलगोला तक की यह पदयात्रा आज अपने मुकाम पर है, सच कहूँ तो श्रवणबेलगोला आने का मेरा कोई कार्यक्रम नहीं था। मैंने कभी सोचा न था कि मैं कभी साउथ' को अपना 'माउथ' दिखाऊगा। (हसी) बावजूद इसके आज मै साउथ प्रवास पर हूँ और श्रवणबेलगोला की इस पुण्य भूमि पर आपके-बीच मौजूद हूँ। मैं श्रवणबेलगोला आया हूँ तो यह मत समझना कि अकारण आया हूँ, मैं अकारण नहीं, सकारण आया हूँ। चार कारण है - जिनकी वजह से आज मैं आपके बीच मौजूद हू। पहला कारण एक 'आदेश' दूसरा कारण एक 'आग्रह', तीसरा कारण एक 'आस्था और चौथा कारण एक 'आकर्षण'। आचार्य श्री वर्धमानसागरजी का आदेश था कि मैं यहा आऊ इसलिए मैं यहा आया हूँ। 'भट्टारक श्री चारूकीर्ति जी का आग्रह था कि मैं यहॉ आऊँ इसलिए मैं यहा आया हूँ।' मेरे दिल की आस्था थी कि मैं यहा आऊ इसलिए मैं यहा आया हूँ और भ गोमटेश बाहुबली का

मगल आगमन

श्रवणवेलगोला प्रवेश पर प्रदत्त प्रवचन
15 जनवरी 2006

आकर्षण था कि मैं यहां आऊं इसलिए मैं यहां आया हूँ। (तालियां) इन चार कारणों का एक उदाहरण है कि मुझ जैसा साधारण मुनि इन असाधारण मुनि-आचार्यों के बीच आज मौजूद है। ये (मंच पर मौजूद 13 आचार्यों की ओर इशारा करते हुए) असाधारण है, मैं 'साधारण' हूँ। साधारण के आगे 'अ' जोडने से असाधारण होता है, ये असाधारण इसलिए हैं क्योंकि इनमें आचार्य का 'आ' है और मैं साधारण इसलिए हूँ कि मैं आचार्य नहीं हूँ सिर्फ साधु हूँ, साधु के 'सा' से साधारण हूँ तो याद रखिए ये असाधारण हैं। मैं साधारण हूँ और आप (श्रावकों की ओर इशारा) तो सिर्फ 'धारण' है और जो यहां नहीं है वे केवल 'रण' हैं, और वे लड़ने झगड़ने में ही मग्न हैं।

मैं उत्तर से चलकर दक्षिण आया हूँ, मैं ही नहीं वरन् मंच पर मौजूद सभी मुनि-आचार्य उत्तर से दक्षिण आये हैं तो आपको क्या लगता है कि हम साउथ-इंडिया के 'इटली-डोसा' खाने आये हैं, जी नहीं, आप यकीन करें हम साउथ के इटली डोसा खाने नहीं बल्कि साउथ के लोकप्रिय लोक-देवता गोमटेश बाहुबली को सिर झुकाने आए हैं, उनकी प्रदक्षिणा देने आए हैं, उनके चरणों में भावना का अर्घ्य चढाकर 'तं गोम्मटेशं पणमामिणिच्चं' बोलने आए हैं।

बाहुबली का जीवन बडा विलक्षण है, उन जैसा एक भी लक्षण अगर हमारे जीवन में प्रगट हो जाये तो मोक्ष का न सही तो न सही, पर स्वर्ग जाने का सर्टिफिकेट तो पक्का समझ लेना। बाहुबली स्वामी की विशालकाय मंगल मूर्ति महान मात्र हजार वर्षों का इतिहास नहीं है वरन् अपने पूरे वजूद को देखने के लिए एक आदम कद आईना है। बाहुबली जी का जीवन महान है - उन्होंने कितनी ऊंचाइयाँ अर्जित कीं हम कल्पना भी नहीं कर सकते हैं।

कितना सुखद वातावरण है, पिछले एक माह से हर रोज नये-नये मुनि संघ का नगर आगमन हो रहा है, एक दिन में दो-दो, तीन-तीन बार मुनि-आचार्यों का नगर प्रवेश हो रहा है। चारों दिशाओं से रोज-ब-रोज मुनि-आचार्य चले आ रहे हैं। क्यों ? क्योंकि हर नदी को सागर में मिलना होता है, या यों कहो कि हर नदी को सागर में मिलने की तमन्ना होती है, हर नदी की नियति है सागर में मिलना।

हम मुनि-आचार्यों के नाम के पीछे 'सागर' शब्द जरूर लगा है, मगर मैं यहां आकर महसूस करता हूँ कि हम सागर नहीं हैं, हम तो सिर्फ छोटी-बडी नदियां हैं, सागर तो गोम्मटेश बाहुबली हैं, जिनमें सैकडों नदियां मिलने को आतुर हैं। यहां आकर ये मुनि-आचार्य, साधु-साध्वियां रूपी नदियां बाहुबली रूपी सागर में मिलती जा रही हैं और ये सागर भी सब नदियों को अपने में समाता जा रहा है। जरा इधर (मंच पर) नजर डालिए

और देखिए यहां गंगा, जमुना, सरस्वती, नर्मदा, क्षिप्रा, ब्रह्मपुत्र, सरयू, कावेरी, कृष्णा, गोदावरी जैसी सभी पवित्र नदियां मौजूद हैं। आचार्य श्री वर्धमानसागर गंगा जैसी पवित्र नदी हैं, आचार्य श्री विरागसागर जमुना नदी हैं, आचार्य श्री पद्मनंदी नर्मदा नदी हैं शेष आचार्य क्षिप्रा, ब्रह्मपुत्र, कावेरी, गोदावरी जैसे हैं। उधर मंच पर जो धवल वस्त्र धारिणी साध्वियां बैठी हैं वे तुंगा, भद्रा, वेदगंगा, दूधगंगा, बाणगंगा जैसी छोटी-छोटी नदियां हैं और I am Kaveri (जोरदार हँसी)।

अब सवाल उठता है - सरस्वती कहाँ है ? इधर देखिए (चारूकीर्तिजी की ओर इशारा करते हुए) ये सरस्वती हैं (पूरी सभा तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठी) इलाहाबाद में जहां गंगा, जमुना और सरस्वती का मिलन होता है वहां गंगा और जमुना की धाराएं तो स्पष्ट दिखाई देती हैं लेकिन सरस्वती अदृश्य होती है, हमारे भट्टारकजी भी सरस्वती की तरह अदृश्य हैं। वे मुनि नहीं हैं फिर भी उनका जीवन साधु जैसा है। जहां गंगा, जमुना, सरस्वती का संगम होता है वह स्थान तीर्थराज प्रयाग हो जाता है और यहां इन तमाम नदियों के मिलने से यह स्थान तीर्थराज श्रवणबेलगोला होता है।

जैसे हर एक मुसलमान के लिए मक्का और मदीना का महत्व है। हर एक हिन्दू के लिए मथुरा और काशी का महत्व है। हर एक सिक्ख के लिए अमृतसर और स्वर्ण मंदिर का महत्व है। हर एक ईसाई के लिए जैरुसलम और वेतुलहम का महत्व है। वैसे ही हर एक जैन के लिए सम्मेद शिखर और श्रवणबेलगोला का महत्व है। श्रवणबेलगोला सम्मेद शिखर की तरह अनेक तीर्थंकरों और मुनियों की निर्माण भूमि भले ही न हो, लेकिन आचार्य भद्रबाहु और महामुनि चन्द्रगुप्त मौर्य की समाधि भूमि होने के कारण किसी निर्वाण भूमि से कम नहीं है, श्रवणबेलगोला जैनों की सांस्कृतिक व आध्यात्मिक राजधानी है।

महामस्तकाभिषेक अपने आप में एक आह्वान है कि जीवन, परिवार, समाज व देश में सुधार और शुद्धि की प्रक्रिया नीचे से ऊपर की ओर नहीं, बल्कि ऊपर से नीचे की ओर होना चाहिए। बाहुबली के अभिषेक की जलधारा सिर से गिरती है और सर्वांग को अभिसिंचित करती हुई चरणों तक आ पहुँचती है। मस्तकाभिषेक की यह जलधारा हमें संदेश देती है कि यदि धर्म, समाज व राजनीति में शीर्षस्थ पदों पर आसीन लोग सुधर जाएं, शुद्ध हो जाएं तो देश की सौ करोड़ आम जनता स्वतः ही पाक-साफ हो जाएगी। पानी ऊपर से नीचे गिरे तो 'धारा' है और नीचे से ऊपर चढ़े तो 'राधा' है। आज हमें राधा की नहीं, धारा की जरूरत है। एक ऐसी धारा जो हमारा तन-मन जीवन सब कुछ शुद्ध कर दे।

'बाहुबली' और 'मस्तकाभिषेक' ये दो शब्द हमारे लिए मंत्र स्वरूप हैं।' शब्द मंत्र

हैं और मंत्रों में अनंत शक्ति होती है। गोमटेश बाहुबली और महामस्तकाभिषेक महोत्सव ये दो शब्द हमारे कानों में पड़ते हैं तो मन आनंद से झूम उठता है। शब्द में अद्भुत शक्ति है, जैसे अग्निशामक घंटियां बजती हैं तो भय फैल जाता है। मंदिर की घंटियां बजती हैं तो बड़ा आनंद होता है, एम्बुलेंस की घंटियां बजती हैं तो सड़क क्लीयर हो जाती है। भीड़ छंट जाती है, रेल्वे-स्टेशन की घंटिया बजती हैं तो मुसाफिर सावधान हो जाते हैं, स्कूल की घंटियां बजती हैं तो बच्चे घर की ओर दौड़ पड़ते हैं, दिल की घंटी बजती है तो अपने दिलबर से मिलने को चल पड़ते हैं, सच मानिए, मेरी बात पर यकीन करिए। इसी तरह जब महामस्तकाभिषेक महोत्सव की घंटियां बजेंगी तो पूरा हिन्दुस्तान भगवान बाहुबली की भक्ति भाव में झूम उठेगा।

आज यहां आकर मैं अभिभूत हूँ। आचार्यों और मुनि संघों ने जिस प्रेम और हार्दिकता से मेरा स्वागत और अगवानी की वह मेरे लिए एक यादगार क्षण है। हम सब भगवान बाहुबली के जीवन और आदर्शों को पूरे मन से सुनेंगे/गुनेंगे और महामस्तकाभिषेक महोत्सव में साक्षी नहीं बल्कि सक्रिय बनकर सफल बनायेंगे।

— ० —



16 जनवरी को मुनिश्री बाहुबली स्वामी की वदना के लिए विन्ध्यगिरि पर चढ़े। आचार्यश्री विरागसागरजी भी अपने विशाल सघ के साथ थे। जब मुनिश्री बाहुबली के चरणों में बैठे थे तभी विरागसागरजी ने मुनिश्री से आग्रह किया कि हम सब आज बाहुबली पर कुछ खास सुनना चाहते हैं। बस फिर क्या था मुनिश्री ने आँखे बद कीं और बाहुबली के ध्यान में खो गये। और जब ध्यान से उठे तो यह सद्य प्रसूत अद्भुत कविता उनकी जुबान पर थी। यह भगवान बाहुबली का कमाल था कि अपने प्रवचनों में हमेशा आग उगलने वाला मुनि आज चन्दन-सी शीतलता देने वाली काव्य की भाषा में काव्य-पुष्प की पखुरिया बिखेर रहा था। 13 फरवरी को गुरु-दीक्षा कार्यक्रम में जब मुनिश्री ने इस कविता को पढ़ा तो न सिर्फ पाडाल में मौजूद हजारों लोग झूम उठे बल्कि देशभर में आस्था व सस्कार चैनल पर कार्यक्रम का सीधा प्रसारण देख रहे लाखों लोग भी वाह-वाह कह उठे।

पाठकों के लिए मुनिश्री की यह खास कविता यहा अक्षरश प्रस्तुत है।

वह कौन है ?

सदियों से है खड़ा हुआ, पर थका नहीं वह कौन है ?
मान भग कर दिया भरत का, झुका नहीं वह कौन है ?
चल दिया मुक्ति के पथ पर तो, रुका नहीं वह कौन है ?
कर दिया दिगम्बर तन-मन, कुछ रखा नहीं वह कौन है ?
एक बार बस बोलो प्यारे।
वह बाहुबली भगवान हैं, गोम्मटेश भगवान हैं।
जैनों के अभिमान हैं, कर्नाटक की शान हैं।।
पूरा हिन्दुस्तान हैं।

काललदेवी के सपनों में, दिखता है वह कौन है ?
चामुण्डराय के प्राणों में जो, रमता है वह कौन है ?
नेमिचन्द्र के मत्रो में जो सजता है वह कौन है ?
चारूकीर्ति की श्वास-श्वास में, बसता है वह कौन है ?
एक बार बस बोलो प्यारे।
वह बाहुबली भगवान हैं गोम्मटेश भगवान हैं।
जैनो के अभिमान है कर्नाटक की शान हैं।।
पूरा हिन्दुस्तान हैं।

बिन तीर्थंकर के तीर्थंकर सा पुजता है वह कौन है ?
नग-धड़ग खड़ा हुआ पर चक्रवर्ती लगता है वह कौन है?
कामदेव होकर भी जो निष्काम बना वह कौन है ?
ऋषभदेव की वाणी का पैगाम बना वह कौन है ?
एक बार बस बोलो प्यारे।
वह बाहुबली भगवान हैं, गोम्मटेश भगवान है।
जैनों के अभिमान हैं, कर्नाटक की शान हैं।।
पूरा हिन्दुस्तान हैं।

पैरों से कधो तक लिपटी बेल लताए कौन हैं ?
है एकदम वो मुखर, मगर लगता है मानो मौन है ?
चामुण्डराय के अहकार को, तोड़ गिराता कौन है ?
और गुल्लिका-अज्जी को भी, अमर बनाता वह कौन है?

एक बार बस बोलो प्यारे !
वह बाहुबली भगवान हैं, गोम्मटेश भगवान हैं।
जैनों के अभिमान हैं, कर्नाटक की शान हैं।।
पूरा हिन्दुस्तान हैं।

महामहिम खुद महिमा गाते, बोलो तो वह कौन है ?
नेहरूजी विस्मय हो जाते, बोलो तो वह कौन है ?
इंदिरा खुद को जैन बताती, बोलो तो वह कौन है ?
वर्धमान दौड़े चले आते, बोलो तो वह कौन है ?
एक बार बस बोलो प्यारे !
वह बाहुबली भगवान हैं, गोम्मटेश भगवान हैं।
जैनों के अभिमान हैं, कर्नाटक की शान हैं।।
पूरा हिन्दुस्तान हैं।

भू-अंबर को एक कर दिया, बोलो तो वह कौन है ?
उत्तर-दक्षिण एक कर दिया, बोलो तो वह कौन है ?
सुनंदा को आनंद कर दिया, बोलो तो वह कौन है ?
कर्नाटक को धन्य कर दिया, बोलो तो वह कौन है ?
एक बार बस बोलो प्यारे !
वह बाहुबली भगवान हैं, गोम्मटेश भगवान हैं।
जैनों के अभिमान हैं, कर्नाटक की शान हैं।।
पूरा हिन्दुस्तान हैं।

दुनिया का आश्चर्य आठवां, बोलो तो वह कौन है ?
बेलगोल में किया करिश्मा, बोलो तो वह कौन है ?
उस जैसी दूजी न प्रतिमा, बोलो तो वह कौन है ?
झुक कर करे सलाम आसमां, बोलो तो वह कौन है ?
एक बार बस बोलो प्यारे !
वह बाहुबली भगवान हैं, गोम्मटेश भगवान हैं।
जैनों के अभिमान हैं, कर्नाटक की शान हैं।।
पूरा हिन्दुस्तान हैं।

मुनियों का संगम हो रहा, बोलो तो वह कौन है ?
जैनों का है कुंभ हो रहा, बोलो तो वह कौन है ?
दुनिया में जय घोष हो रहा, बोलो तो वह कौन है ?
मस्तक का अभिषेक हो रहा, बोलो तो वह कौन है ?
एक बार बस बोलो प्यारे !
वह बाहुबली भगवान हैं, गोम्मटेश भगवान हैं।
जैनों के अभिमान हैं, कर्नाटक की शान हैं।।
पूरा हिन्दुस्तान हैं।

— o —

21वीं सदी जानवरों की हो, मुनिश्री का आह्वान्



इस सहस्राब्दि का प्रथम 'महामस्तकाभिषेक6' महोत्सव का आज उद्घाटन सत्र है। देश के राष्ट्रपति महामहिम डॉ ए पी.जे. अब्दुल कलाम के कर-कमलों से अभी-अभी महोत्सव का शुभारम्भ हुआ। अगले एक माह तक श्रवणबेलगोला की तपोभूमि पर धर्म, अध्यात्म और आनंद की अविरल वर्षा होगी। श्रवणबेलगोला ही नहीं पूरा कर्नाटक और देश गोम्मटेश बाहुबली के जीवन और चरित्र को सुनेगा/गुनेगा।

गोम्मटेश बाहुबली की विशालकाय मूर्ति महज एक इतिहास नहीं है बल्कि अपने पूरे वजूद को देखने के लिए एक आदमकद आईना है। हम मूर्ति को देखें, साथ ही उन मूल्यों को भी देखें जिन्हें बाहुबली ने स्थापित किया और पूरी निष्ठा से जिया। हम बाहुबली के सिर्फ चेहरे को न देखें वरन् चेहरे के पीछे जो चरित्र है उसे भी देखें क्योंकि चरित्र ही व्यक्ति को ऊंचा उठाता है। गोम्मटेश बाहुबली के सिर्फ दर्शन न करें बल्कि उनके आदर्शों पर भी चलने का सार्थक प्रयास करें।

राष्ट्रपति द्वारा महोत्सव के उद्घाटन
अवसर पर प्रदत्त प्रवचन
22 जनवरी, 2006

आज सुबह बम्बई के एक सज्जन पूछ रहे थे, मुनिश्री आपने भ.बाहुबली की मूर्ति के दर्शन किए। क्या महसूस किया? बाहुबली की क्या महिमा है ? मैंने कहा, महिमा ! अरे जिनकी महिमा को गाने के लिए दिल्ली से चलकर खुद 'महामहिम' यहां आ रहे हैं, उनकी महिमा का क्या कहना। बाहुबली स्वामी की महिमा अपरम्पार है, एक प्राचीन वक्तव्य है कि मूर्ति बहुत ऊंची हो तो सुन्दर नहीं होती। ऊंची हो और सुन्दर भी तो उसमें अतिशय और देवी बल नहीं होता। लेकिन यहां श्रवणबेलगोला में स्थित विश्व विख्यात भगवान बाहुबली की मूर्ति इसलिए बेजोड़ है क्योंकि इसमें ऊंचाई भी है, सुन्दरता भी है और अतिशय भी है।

यहां पिछले 1024 वर्षों से बाहुबली शांति, अहिंसा, निशस्त्रीकरण, त्याग और साधना का संदेश समाज, देश और दुनिया को दे रहे हैं। सरकार चाहे दिल्ली की हो या बैंगलोर की सरकार आती है जाती है लेकिन बाहुबली की सरकार पिछले एक हजार चौबीस साल से निर्बाध रूप से चल रही है। बाहुबली की सरकार को कभी कहीं किसी से कोई खतरा नहीं है।

बाहुबली का जीवन आदर्श है। खास करके उस युग में जिसमें लोगों के जीने का लक्ष्य सिर्फ बढ़िया खाना-पीना, मौज मस्ती करना और मर जाना हो। बाहुबली साधना के जीवंत प्रतीक हैं, जीवन की सबसे बड़ी साधना है स्वयं को बदलना, अपने मन और इन्द्रियों को जीतना।

एक सवाल है, दुनिया का सबसे सरल और कठिन काम कौनसा है ? श्वास लेना दुनिया का सबसे सरल काम है और स्वयं को बदलना, अपने मन और इन्द्रियों को जीतना सबसे कठिन काम है। आप में से कोई कह सकता है कि अमीर होना कठिन है, डॉक्टर-इंजीनियर होना कठिन है, विद्वान होना कठिन है, वैज्ञानिक होना कठिन है, निःसंदेह ये सब होना कठिन है।

अमीर होना कठिन है लेकिन सबसे कठिन नहीं। पांच साल की साधना (मेहनत) से कोई भी व्यक्ति अमीर हो सकता है। तकदीर साथ दे और आप अमिताभ बच्चन के साथ बैठकर उनके 13 सवालों का सही जवाब दे सकें तो एक घंटे में करोड़पति बन सकते हैं। अमीर बनने के लिए 5 वर्ष की साधना चाहिए। विद्वान बनने के लिए 10 वर्ष की साधना चाहिए। डॉक्टर व इंजीनियर बनने के लिए 15 वर्ष की साधना चाहिए। राष्ट्रपति डॉ. कलाम साहब जैसा वैज्ञानिक बनने के लिए 20 वर्ष की साधना चाहिए लेकिन भगवान बाहुबली जैसा युग पुरुष बनना है तो जिन्दगी भर की साधना चाहिए।

अहिंसा, अपरिग्रह और अनेकांत जैन धर्म के सार तत्व हैं। अहिंसा व शाकाहार जैन जीवन शैली है। जैन होने के लिए शाकाहारी होना उतना ही जरूरी है जितना कि जिन्दा रहने के लिए श्वास जरूरी है। किसी को मुसलमान होना है तो शाकाहारी होना

जरूरी नहीं है। बगैर शाकाहारी हुए भी आप मुसलमान हो सकते हैं। आपको हिन्दू होना है तो शाकाहारी होना जरूरी नहीं है। बगैर शाकाहारी हुए भी आप हिन्दू हो सकते हैं। सिक्ख, ईसाई, बौद्ध होना हो तो शाकाहारी होना जरूरी नहीं है बगैर शाकाहारी हुए भी आप सिक्ख, ईसाई, बौद्ध हो सकते हैं लेकिन अगर आपको जैन होना है तो शाकाहारी होना उतना ही जरूरी है जितना कि जिन्दा रहने के लिए सांस लेना जरूरी है।

राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम आज यहाँ मौजूद हैं। राष्ट्रपति जी जैन धर्म के सिद्धान्तों के कितने करीब हैं इसका अंदाज आप इसी बात से लगा सकते हैं कि वे मुसलमान होते हुए भी शुद्ध शाकाहारी हैं। इतना ही नहीं, 'सादा जीवन-उच्च विचार' उनकी जीवन शैली है। वे महान वैज्ञानिक तो हैं ही, स्वप्नदर्शी और उदारवादी भी हैं। एक शाकाहारी और वैज्ञानिक व्यक्ति के कर-कमलों से बाहुबली स्वामी के महामस्तकाभिषेक महोत्सव का शुभारम्भ होना अहिंसा प्रेमियों और खासकर जैन समाज के लिए एक सुखद घटना है।

भगवान महावीर की वाणी है - हर जीव को जीने का अधिकार है और वह इस अधिकार के साथ ही जन्म लेता है। हम इंसान दिन रात अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करते हैं तो जानवरों को भी जीने का हक मिलना चाहिए। 18वीं सदी में इंसानों को अधिकार की बात समझ में आई। 19वीं सदी में गुलामों को अधिकार मिले। 20वीं सदी में महिलाओं को अधिकार मिले तो अब 21वीं सदी में जानवरों को उनके अधिकार मिलने चाहिए ताकि भगवान महावीर के जियो और जीने दो का सिद्धान्त सार्थक हो सके। यदि ऐसा होता है तो 21वीं सदी का यह पहला महामस्तकाभिषेक महोत्सव मानवता की जीत और देश में शांति की स्थापना में कारण होगा।

किसी भी पेड की जड दिखाई नहीं देती फिर भी सींचना जड को ही पडता है। फल, फूल पत्ते आदि को सींचने का कोई अर्थ नहीं होता। हमारी जडें भी हमें दिखाई नहीं देतीं किन्तु सिंचाई मांगती हैं। खाद-पानी मांगती हैं। अहिंसा, करुणा, प्रेम, भाईचारा, सेवा, अतिथि-सत्कार और देश प्रेम ये हमारी जडें हैं। इनको पानी देना है। अगर आज हमने इनको पानी नहीं दिया तो कल हमें कोई पानी के लिए पूछने वाला नहीं मिलेगा।

आचार्य श्री वर्धमानसागरजी के पुनीत सान्निध्य व भट्टारक स्वस्ति श्री चारुकीर्ति जी के समर्थ्य नेतृत्व में यह महोत्सव जैन धर्म के सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार व मानवीय मूल्यों की स्थापना में कारण बनेगा तथा हम सब संकल्प करें कि राष्ट्रपति के मिशन - 2020 को सफल बनाने के लिए धर्म, समाज व राष्ट्र के लिए उनके साथ कदम से कदम मिलाकर चलेंगे।

— 0 —

पंथवादी संत से बड़ा कोई आतंकवादी नहीं



सर्वधर्म सम्मेलन
में प्रदत्त प्रवचन
27 जनवरी, 2006

हिन्दू और मुसलमान इस देश की दो आँखें हैं और ये दोनों कौमें खूब प्यार और मुहब्बत के साथ सदियों से कंधे से कंधा और कदम से कदम मिलाकर रहती आ रही हैं। साम्प्रदायिकता इस देश के मिजाज में नहीं है और हो भी कैसे ? जरा गौर फरमाईये कि जब आप Ramzan लिखते हैं तो Ram से शुरुआत करते हैं और जब आप Deewali लिखते हैं तो Ali से समाप्त करते हैं। यों रमजान में बसे राम और दिवाली में छिपे अली हमें मुहब्बत से रहने का पैगाम देते हैं। अगर राम के भक्त और रहीम के बंदे थोड़ी अक्ल से काम लें तो यह मुल्क स्वर्ग से भी सुन्दर है।

कोई धर्म बुरा नहीं है, बल्कि सभी धर्मों में कुछ बुरे लोग जरूर हैं जो अपने स्वार्थों की खातिर धर्म की आड़ में अपने गोरख-धंधे और नापाक इरादे जाहिर करते रहते हैं। अगर हम इन थोड़े से बुरे लोगों के दिलों को बदल सकें, उन्हें सही राह पर चला सकें और नेक इंसान बनाकर जीना सिखा सकें तो यकीनन सच

मानिए यह पूरी पृथ्वी स्वर्ग में तब्दील हो जाएगी। धर्म मरहम नहीं, बल्कि टॉनिक है। इसे बाहर मलना नहीं, बल्कि पी जाना है। कितना बड़ा आश्चर्य है कि हम धर्म के लिए लड़ेंगे-मरेंगे, लेकिन उसे जीयेंगे नहीं।

धर्म पगड़ी नहीं, जिसे घर से दुकान के लिए चले तो पहन लिया और दुकान पर जाकर उतार कर रख दिया। धर्म तो चमड़ी है; जिसे अपने से अलग नहीं किया जा सकता। धर्म आत्मा का स्वभाव है। धर्म के माने प्रेम, करुणा और सद्भावना है। उसका प्रतीक फिर चाहे राम हो या रहीम, बुद्ध हो या महावीर, कृष्ण हो या करीम, सबकी आत्मा में धर्म की एक ही आवाज होगी। धर्म दीवार नहीं, द्वार है। लेकिन दीवार जब धर्म बन जाती है तो अन्याय और अत्याचार को खुलकर खेलने का अवसर मिल जाता है। फिर चाहे वह दीवार मंदिर की या मस्जिद की ही क्यों न हो ?

आज कुछ लोगों के द्वारा धर्म और मजहब के नाम पर, जाति और भाषा के नाम पर; देश और दुनिया को बाँटा जा रहा है। ऐसे बाँटने वालों को मैं मुनि तरुणसागर चुनौती देता हूँ कि ऐ बांटने वाले इंसानों ! तुमने लकीर खींच कर जमीन को तो बांट दिया लेकिन मैं तुम्हारी शक्ति उस दिन मानूँगा जिस दिन तुम आसमान में लकीर खींच कर दिखाओगे। जिस दिन तुम हवा को बाँटकर दिखाओगे कि यह हिन्दू की हवा है और यह मुसलमान की हवा है। अगर तुममें ताकत है तो जरा समय को हिन्दु और मुसलमान के बीच बाँटकर दिखाओ।

यदि हम संत मुनि होकर एकजुट नहीं रह सकते तो समाज को एकजुट रहने की प्रेरणा कैसे दे सकते हैं अलग-अलग गिरोहों के दो डाकू एक साथ रह सकते हैं तो हम दो विचार धाराओं के संत एक साथ क्यों नहीं रह सकते ? 18 राजनीतिक दल विभिन्न विचारधाराओं के बावजूद एक साथ रहकर सरकार चला सकते हैं तो हम विभिन्न धर्मों के संत-मुनि एक साथ रहकर समाज को क्यों नहीं चला सकते ? यदि हम एक साथ नहीं रह सकते तो पंथवादी संतों से बडा आतंकवादी कोई नहीं है।

आज समाज की मांग है कि सभी धर्म और मजहब के संत मुनि समाज सुधार, राष्ट्र निर्माण और मानवीय मूल्यों की स्थापना के लिए सामूहिक प्रयास करें। हमें माली की भांति मानवता के लिए काम करना है। संत मुनियों का काम समाज को बाँटने का, लोगों की श्रद्धा को तोड़ने का और सामाजिक समरसता को मरोड़ने का नहीं है। 60 लाख साधु-सन्यासियों के बावजूद समाज में बुराई, हिंसा, भय, आतंक, बलात्कार और भ्रष्टाचार व्याप्त है- यह दुर्भाग्यपूर्ण है।

सर्वधर्म समन्वय का सूत्र है - अनेकांत दृष्टि। भगवान महावीर ने कहा सत्य का

आग्रह मत करिए। सत्य के खोजी को अपने दिल और दिमाग के दरवाजे व खिड़कियाँ खुली रखनी चाहिए। सत्य कहीं से मिले बे झिझक ले लो। कोहिनूर कीचड़ में ही क्यों न पड़ा हो झटपट उठा लो। महावीर वाणी है – जो खरा है वह मेरा है लेकिन आज इससे उलट हो रहा है – जो मेरा है वह खरा है। मम् सत्यम् – यह युद्ध का पर्याय है, संघर्ष का कारण है। पारिवारिक व सामाजिक सौहार्द के लिए यह जरूरी है कि हम इस सच को स्वीकार करें कि औरों में भी सत्य की गुंजाइश है। सत्य के खोजी को यह बात स्वीकार करनी ही होगी कि सत्य की संभावना हर जगह है। आज हमने अपने जो आग्रह पाल रखे हैं हम उन्हीं पर चलते हैं, उन्हीं ही जीते हैं। हम सामने वाले की सुनने को राजी ही नहीं हैं। सवाल कुछ भी हो हमारे जवाब रेडिमेड है।

हुआ यों कि बड़े भाई ने अपने छोटे भाई से कहा : मेरे ससुराल जाकर अपनी भाभी को लिवा ला। भाई भाभी को लेने चलने लगा तो बड़े भाई ने कहा – सुन ! वहाँ ससुराल में कोई कुछ भी पूछे तो जवाब जरा सोच-समझकर देना। कहाँ 'हाँ' और कहाँ 'ना' कहना इसका ख्याल रखना। छोटा भाई चला। रास्ते में सोचता है इस हाँ-ना में कुछ चक्कर जरूर है। कहीं ऐसा ना हो कि वहाँ कुछ गड़बड हो जाए। इसलिए उसने तय किया कि कोई कुछ भी पूछे बस हर सवाल के जवाब में एक बार हाँ और दूसरी बार ना कहना है।

छोटा भाई ससुराल पहुँचा। स्वागत-सत्कार, भोजन-पानी हुआ। गाँव के सब लोग बैठे। ससुर ने पूछा – गाँव में सब आनंद मंगल है ? इसने कहा – हाँ। फिर पूछा – और तुम्हारे बड़े भाई ठीक हैं ? वह बोला – ना। तो क्या बीमार हैं ? इसने कहा – हाँ। दवा वगैरह कुछ देते हो ? बोला – ना। तो क्या ज्यादा बीमार है ? बोला – हाँ। पर बचने की उम्मीद तो है ? इसने कहा –ना। अरे तो क्या इतने अधिक बीमार हैं ? इसने कहा – हाँ। पर हैं तो अभी जिन्दा ना। इसने कहा – ना। तो क्या मर गए हैं ? बोला – हाँ। इसके बाद क्या हुआ मुझे नहीं पता। वैसे भी अब होने को बचा ही क्या ? लगभग यही हाल हमारा है। हम भी अपनी निजी मान्यताओं पर अडिग हैं और सब कुछ पहले से ही तय कर रखा है। हम किसी की सुनने को राजी ही नहीं हैं। हमारी यही धारणा सामाजिक संघर्ष में कारण है।

आज महावीर के अनेकांत, अहिंसा और अपरिग्रह के सिद्धान्त की सख्त जरूरत है। अहिंसा जीवन शैली है। आज से 25 वर्ष पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने भगवान बाहुबली के महामस्तकाभिषेक महोत्सव में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया था, यहां आकर गोमटेश के चरणों में उन्होंने अपनी भावना का अर्घ्य समर्पण किया और दिल्ली पहुँची तो उनके कुछ साथियों ने मजाक में कहा – लगता है अब आप तो जैन हो गई ? तब श्रीमती

गाँधी ने कहा था – मैं ही नहीं, पूरा राष्ट्र जैन है। जो महावीर, बुद्ध और गाँधी की तरह अहिंसा पर अटल है, वह जैन है।

इस सर्व धर्म सम्मेलन में विविध धर्मों के संत–मुनि–मनीषी मौजूद हैं। सबका एक ही मिशन है व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र का कल्याण। सबका एक ही वक्तव्य है – अहिंसा परमो धर्म:। जिओ और जीने दो। सर्वे भवन्तु सुखिन सर्वे सन्तु निरामय: सबकी एक ही मंशा है समाज आगे बढ़े, देश आगे बढ़े, धर्म आगे बढ़े।

— o —

जीवन में तीन आशीर्वाद जरूरी माँ, महात्मा, परमात्मा



मातृ-वंदना महोत्सव
में प्रदत्त प्रवचन
29 जनवरी, 2006

आज बाहुबली स्वामी के महामस्तकाभिषेक महोत्सव-06 में मातृवंदना का दिन है। हमें माँ की वंदना करनी है। जिन्दगी में तीन वंदना जरूरी हैं। एक - माँ की वंदना, दो - महात्मा की वन्दना, तीन - परमात्मा की वंदना। जिन्दगी में माँ, महात्मा और परमात्मा से बढ़कर और कुछ भी नहीं है। जीवन में तीन आशीर्वाद जरूरी हैं - बचपन में माँ का, जवानी में महात्मा का और बुढ़ापे में परमात्मा का। माँ बचपन को सभाल लेती है, जवानी में नियत बिगड़े तो उपदेश देकर महात्मा सुधार देता है और बुढ़ापे में मौत बिगड़े तो परमात्मा संभाल लेता है। माँ, महात्मा और परमात्मा बस यही जिन्दगी है।

आज मातृ वंदना का दिन है। माँ जीवन की धुरी है, इसलिए माँ ही 'मा-धुरी' है। दुनिया में तीन देव है - ब्रह्मा, विष्णु और महेश। ब्रह्मा जन्मदाता है इसलिए लोग उन्हें पूजते हैं, विष्णु पालक हैं इसलिए लोग उन्हें सिर झुकाते हैं और महेश संहारक हैं इसलिए लोग उन्हें मानते हैं। ब्रह्मा में विष्णु और विष्णु में महेश

नहीं समा सकते लेकिन दुनिया में माँ एक ऐसा तत्व है जिसमें ब्रह्मा भी है, विष्णु भी है और महेश भी है। माँ जन्म देती है इसलिए ब्रह्मा है। संतान को पालती है इसलिए विष्णु है और संस्कार देकर संतान का उद्धार करती है इसलिए महेश भी है। माँ त्रिदेव है।

आज मातृ वंदना का दिन है। नौ घंटे पांच किलो का पत्थर पेट पर बांधकर रखो तो समझ में आ जाएगा कि माँ क्या होती है। माँ की गोद दुनिया का सबसे पहला तीर्थ है क्योंकि इस गोद में खुद तीर्थंकर खेले हैं। माँ की गोद दुनिया की सबसे बड़ी पाठशाला है। क्योंकि जो इस पाठशाला में बैठकर सीख सकते हैं वह दुनिया के बड़े से बड़े किसी विश्वविद्यालय में भी नहीं सीख सकते हैं। माँ ममता की मूरत है, समता की मूरत है, क्षमता की इमारत है। माँ नहीं तो जहाँ नहीं। माँ से मायका है, माँ से हर चीज का जायका है।

आज मातृ वंदना का दिन है। माँ का मिलना भाग्य है। सुशिक्षित माँ का मिलना सौभाग्य है। सुसंस्कारित माँ का मिलना अहोभाग्य है। मरुदेवी और त्रिशला जैसी माँ का मिलना तो महाभाग्य है। जन्मदाता माँ-बाप तो कुत्ते के पिल्ले को और गधे के बच्चों को भी मिल जाते हैं लेकिन संस्कारदाता माँ-बाप तो किसी खुशनसीब औलाद को ही मिलते हैं। वे पुत्र-पुत्रियां बड़े खुशनसीब हैं जिन्हें बचपन में माँ-बाप ने उनकी अंगुली पकड़कर सिर्फ चलना नहीं सिखाया बल्कि मंदिर ले जाना भी सिखाया। धर्म की पाठशाला में बैठना भी सिखाया। माँ आदि गुरु है क्योंकि वह अपनी औलाद को संस्कार-दीक्षा देती है। अगर बेटा शराबी-कबाबी है, चोर-उचक्का है तो इसके लिए 50 फीसदी दोषी माँ-बाप हैं, क्योंकि उन्होंने संस्कार नहीं दिये।

संस्कार... ! संस्कार माँ की कोख और गोद से मिलते हैं। आज की दुनिया में संस्कारों की बड़ी किल्लत है। कल तक बेटा पैदा होता था तो उसके नाक-नक्शे को देखकर कहा जाता था - यह बच्चा अपनी माँ पर गया है, यह बाप पर गया है और यह अपने दादा या दादी पर गया है। मगर आज जिस तरह से देशी-विदेशी टी.वी. चैनल हिंसा और अश्लीलता परोस रहे हैं उसे देखकर लगता है कि कल यह कहा जाएगा कि यह बच्चा सोनी टी.वी. पर गया है, यह स्टार टी.वी.पर गया है और यह जो निघट्टु है न ! यह तो एम.टी.वी. पर गया है। आज के बच्चे माँ से कम मीडिया से ज्यादा प्रभावित हो रहे हैं। एक बच्चा 18 साल की उम्र तक आते आते दो लाख से ज्यादा हिंसा के दृश्य, पचास हजार से ज्यादा बलात्कार, सेक्स और अपहरण से जुडे दृश्य देख चुका होता है। हम कल्पना करें अब यह बच्चा कैसे संस्कारित और सुरक्षित रहेगा।

आज संस्कारों का बड़ा टोटा है। हमारे यहाँ जन्म से मृत्यु तक 16 संस्कारों की बात कही गई है। लेकिन मुझे लगता है आज सब संस्कार खत्म हो गये हैं। अब तो बस

एक ही संस्कार रह गया है – अंतिम संस्कार। और अन्तिम संस्कार जिन्दा आदमी का नहीं, मुर्दा का होता है। कमाल है मुर्दे पर संस्कार की क्या जरूरत है। जिन्दा आदमी की तो हमें फिक्र ही नहीं है। देश की माँ-बहनों का मैं आह्वान करता हूँ कि वे परिवार को सम्पन्न बनाने के लिए लक्ष्मी का रूप धारण करें, संतान को शिक्षित करने के लिए सरस्वती बन दिखाएं तथा सामाजिक बुराइयों को ध्वस्त करने के लिए सिंह पर आरूढ़ दुर्गा की भूमिका निभाएं। बस यही मातृ-वंदना है।

आज महामस्तकाभिषेक में मातृ वंदना का दिन है। मैं देश की नारी से कहूंगा कि हे माता! अगर तू इस धरती को बच्चा अर्पित करना चाहती है तो ऐसा बच्चा पैदा करना जो भक्त हो, जो चामुण्डराय और श्रवणकुमार जैसा मातृ भक्त हो। प्रह्लाद और ध्रुव जैसा प्रभु भक्त हो। ऐसा बेटा पैदा करना जिसे देखते ही दुनिया के लोगों के पाप, ताप, संताप सब धुल जाएं। हे माँ! तू अपनी कोख से ऐसा दाता पुत्र पैदा करना जो न्याय और नीति से खूब कमाये और जरूरतमंद लोगों के लिए दान की नदियां बहा दे। हे माँ! तू अपनी कोख से ऐसा शूरवीर बेटा पैदा करना जो धर्म, समाज और देश की आन-बान व शान के लिए अपनी जान भी कुर्बान कर दे। हे माँ! ऐसा बेटा पैदा कर सके तो ही पैदा करना वरना बांझ ही रह जाना। धरती का बोझ बढाने से क्या फायदा ? अपना सौन्दर्य गंवाने से क्या फायदा ?

माँ के दूध में बड़ी ताकत होती है। 'नारी कल भी भारी थी, आज भी भारी है और पुरुष कल भी आभारी था आज भी आभारी है।' कहने को भले यह समाज पुरुष प्रधान है लेकिन देवियों बोलबोला तो आपका ही है। कहने को देश के प्रधानमंत्री भले ही मनमोहन सिंह हो मगर दुनिया जानती है सरकार कौन चला रहा है। (जोरदार हँसी व तालियॉं)। देवियों! सर्वत्र आपकी ही पूजा है। पैसा चाहिए तो लक्ष्मी जी के पास जाओ, शक्ति चाहिए तो दुर्गा जी के पास जाओ, बुद्धि चाहिए तो सरस्वती के पास जाओ अब और मांगने के लिए क्या बचा जो कोई झक मारने के लिए ब्रह्मा, विष्णु, महेश के पास जाएगा। (हँसी)। राम का नाम लेना है तो पहले सीता का नाम लेना पड़ता है, (सीताराम) कृष्ण का नाम लेना है तो पहले राधा का नाम लेना पड़ता है। (राधा-श्याम) वह तो भला हो शंकरजी का जो उन्होंने पार्वती को पीछे बैठाया (शिव-पार्वती) वरना इन भाइयों का क्या होता ? मुझे नहीं पता।

अभी चारुकीर्ति जी कह रहे थे, वर्धमानसागर जी हमारे लिए सुप्रीम कोर्ट है। वर्धमानसागरजी तो हम साधु-साध्वियों का सुप्रीम कोर्ट हो गये लेकिन (पुरुषों की ओर इशारा करते हुए) तुम्हारा सुप्रीम कोर्ट कौन है ? मैं बताऊँ ? मैं बताता हूँ -

एक बेटे को माँ ने मारा
बेटे का गुस्से से चढ़ गया पारा
गया पापा के पास
और कहा -
माँ ने मुझे बहुत मारा है
बाप ने एक चाँटा और लगाया
और यों समझाया
अरे वकील का बेटा है
तुम्हें इतनी भी अक्ल नहीं आती,
कि 'सुप्रीम-कोर्ट' की सजा की अपील
'हाईकोर्ट' में नहीं की जाती। (तालियां और हँसी)

हम आप सब भगवान बाहुबली के महामस्तकाभिषेक महोत्सव के साक्षी बनने के लिए यहाँ मौजूद हैं। यह प्रतिमा जो दुनिया के लिए एक अजूबा है। किसने बनवाई? सेनापति चामुण्ड राय ने। चामुण्ड राय को प्रतिमा के निर्माण की प्रेरणा किससे मिली? अपनी माँ से, कालल देवी से। चामुण्डाराय ने अपनी माँ के सपने को साकार किया है। यही मातृवन्दना है। हमें भी अपनी माँ के सपनों को साकार करना है, उनकी दिली इच्छाओं को पूरा करना है उनके मनोरथों को पूर्ण करना है मगर दुर्भाग्य देखिए, पढ़-लिख जाने के बाद शिष्य गुरु को भूल जाता है और शादी हो जाने के बाद बेटा माँ-बाप को भूल जाता है। सच है -

पराठे मिलने के बाद चपातियों को कौन पूछता है ?
फेरे होने के बाद बारातियों को कौन पूछता है ?
तुम मानो या न मानो दुनिया का यही रिवाज है।
काम हो जाने के बाद साथियों को कौन पूछता है।

इधर इस मुनि-मंडली को देखिए। अब जरा उधर साध्वी मण्डली को भी देखिए। ये मुनि मंडली तो सिर्फ 'लोकसभा' है लेकिन उधर जो साध्वी मंडली है वह तो 'त्रिलोक सभा' है। त्रिलोक सभा इसलिए कि क्योंकि त्रिलोक नाथ तीर्थंकर का जन्म इसी माँ की कोख से होता है, यही मातृवंदना है। जैन धर्म में नारी को पुरुष के समकक्ष स्थान दिया गया है। भगवान महावीर इस युग के प्रथम क्रान्तिकारी पुरुष हैं, जिन्होंने अपने संघ में नारी को दीक्षित करके पुरुषों के समतुल्य प्रतिष्ठा दी। बुद्ध इतनी हिम्मत नहीं जुटा पाये। महासती चंदेनबाला नारी उद्धार का एक सशक्त उदाहरण है।

इस देश की नारी पर परिवार को संस्कारित करने की एक बड़ी अहम जिम्मेदारी है। धर्म को महिलाओं ने ही संभालकर रखा है। अगर इस देश की माँ-बहनें हाथ खड़े कर दें तो मुझ मुनि तरुणसागर जैसों को एक बार का आहार मिलना भी मुश्किल हो जाये। हे माँ! तू अपने संतान को ऐसे संस्कार दे जो उसे भवसागर से तार दे। अपने पिल्ले के सुख की चिन्ता तो कुतिया भी कर लेती है। माँ तो वह है जो अपनी संतान के सुख के साथ अच्छे संस्कारों की भी चिन्ता करती है। बच्चों के लिए सिर्फ पैसा ही खर्च न करें उन पर अपने समय का भी निवेश करें। पुत्र के लिए बैंक में रुपये न रख सकें तो अपराध नहीं है, पर पुत्र को अच्छे संस्कार न दे सकें तो अपराध है।

— ○ —

मन-मस्तिष्क की शुद्धि का आह्वान मस्तकाभिषेक



जिस क्षण का हमें बेसब्री से इन्तजार है वह क्षण अब हमारे अत्यन्त निकट है। केवल एक दिन बीच में है। 8 फरवरी को भगवान बाहुबली के सिर पर कलश की पहली जलधार गिरते ही महामस्तकाभिषेक महोत्सव 2006 का मुख्य समारोह शुरू हो जाएगा। कुल 12 दिनों के मस्तकाभिषेक में लाखों श्रद्धालु अपने आपको कृतार्थ करेंगे। मस्तकाभिषेक का कुल मतलब इतना है कि हम अपना दिमाग ठंडा रखें। क्रोध अंगारा है। हम जलधार बनें। मस्तकाभिषेक का मतलब सिर्फ बाहुबली को स्नान (अभिषेक) कराना नहीं है बल्कि अपने विचारों और भावों को भी स्नान कराना है। मन-मस्तिष्क की शुद्धि करना है।

सभी गड़बड़ियां मस्तिष्क से शुरू होती हैं। अगर मस्तिष्क शुद्ध हो गया तो कई गड़बड़ियों से निजात मिल जाएगी। इसलिए यह मस्तकाभिषेक है। गाँधीजी ने अपने तीन बंदरों के माध्यम से कभी कहा था – बुरा मत सुनो, बुरा मत देखो, बुरा मत कहो। आपके सामने

उपराष्ट्रपति द्वारा
ऋषभदेव के राज्याभिषेक पर
प्रदत्त प्रवचन
6 फरवरी 2006

मौजूद मैं मुनि तरुणसागर इसमें एक बंदर और जोड़ना चाहता हूँ जो हृदय पर हाथ रखकर बैठा हो और कह रहा हो बुरा मत सोचो। हम मजबूरन किसी का ज्यादा बुरा तो नहीं कर पाते हैं लेकिन औरों का बुरा सोच-सोचकर अपना बहुत बुरा कर लेते हैं। सोच की शुद्धि का अनुष्ठान ही मस्तकाभिषेक महोत्सव है।

इतिहास में बड़ी ताकत है। इतिहास सोते हुए को जगा सकता है। जागे हुए को पैरों पर खड़ा कर सकता है और खड़े हुए की नसों में खून दौडा सकता है। मुर्दे को खड़ा करना या तो अमृत (यदि अमृत कोई वस्तु है तो) का काम है या फिर इतिहास का। भगवान बाहुबली प्रागऐतिहासिक महापुरुष हैं। बाहुबली ऋषभदेव के पुत्र हैं। ऋषभदेव को आदिनाथ भी कहा जाता है। ऋषभदेव जैन परम्परा के प्रथम तीर्थंकर थे। ऋषभदेव की दो रानियां थीं, जिनमें से बडी रानी यशस्वती के भरत समेत 99 पुत्र थे और छोटी रानी सुनंदा के अकेले पुत्र बाहुबुली थे।

सत्ता को लेकर भरत और बाहुबली में युद्ध हुआ और उसमें भरत की हार ने बाहुबली का ध्यान सांसारिक मोहमाया से हटा दिया। बाहुबली राज्य छोड़कर मुनि की दीक्षा अंगिकार कर तपस्या में लीन हो गये। उन्होंने खड़े होकर बारह माह तक बगैर हिले-डुले कठोर तपस्या कर कैवल्य को पाया और पोदनपुर से मुक्त हुए। बाद में भरत ने पोदनपुर में उनकी विशालकाय मूर्ति की स्थापना कराई। यह तो हुआ बाहुबली का इतिहास जो कि करोड़ों साल पहले हुए। कालान्तर में मूर्ति के चारों तरफ कुक्कुट सर्पों ने घर कर लिया और मूर्ति इस तरह से दबती चली गई। फिर इसका दर्शन दुर्लभ हो गया। चामुण्डराय की माता काललदेवी ने जब इस मूर्ति के बारे में सुना तो उनकी इच्छा हुई कि वे पोदनपुर स्थित बाहुबली के दर्शन करे और प्रतिमा का पुनरुद्धार करें। कालल देवी चामुण्डराय के साथ इस उद्देश्य से निकली लेकिन रास्ते में आने वाली बाधाओं के कारण श्रवणबेलगोला से आगे पहुँच नहीं पाई।

इस बीच चामुण्डराय ने एक स्वप्न देखा जिसमें कोई कहता नजर आया कि भक्त और भगवान के बीच में दूरी नहीं होती है। उन्हीं का नाम लेकर बाण चलाओ और विन्ध्यागिरी पर देखो वहां बाहुबली मिलेंगे। इस स्वप्न का जिक्र अपने गुरु से करने के बाद उन्होंने चन्द्रगिरी पर खड़े होकर तीर मारा जो कि विन्ध्यागिरी की उसी चट्टान पर जाकर गिरा, जिसको तराशकर बाहुबली की 57 फीट ऊंची मूर्ति बनाई गई। यह हुआ मूर्ति का इतिहास जो 1025 वर्ष पुराना है।

दुनिया में मूर्तियां बहुत हैं लेकिन बाहुबली जैसी कोई मूर्ति नहीं है। दुनिया में मूर्तिकार भी बहुत हैं लेकिन अरिष्टनेमी जैसा कोई मूर्तिकार नहीं। दुनिया में सेनापति

बहुत हुए लेकिन चामुण्डराय जैसा कोई नहीं हुआ। यह मूर्ति क्या है ? जैन धर्म की जय पताका है। हमारे मुनि और आचार्य अपने आचरण से विचलित हो जाए तो भले ही हो जाए, जैन श्रावक और श्राविकाएं अपने धर्म से विमुख हो जाए तो भले ही हो जाए, जैन ग्रंथ और पुराण नष्ट-भ्रष्ट हो जाये तो भले ही हो जाए लेकिन मेरा विश्वास है कि जब तक विन्ध्यगिरी पर भगवान बाहुबली की यह मूर्ति अपना दिगम्बर रूप को लेकर सीना तानकर खड़ी रहेगी तब तक देश और दुनिया में जैनधर्म का डंका बजता रहेगा। विश्व में 'जीओ और जीने दो' संदेश गूंजता रहेगा। ''अहिंसा परमो धर्म'' का जयघोष सुनाई देता रहेगा।

बाहुबली क्या है ? एक कल्पवृक्ष है। बाहुबली की नजर जिस पर भी पड़ गई वह निहाल हो गया। हमारे चारुकीर्ति जी को देखिए। हम मुनि-आचार्य तो गुरु ही रहे ये जगद्गुरु हो गए। यह बाहुबली का इन पर आशीर्वाद का फल है। अभी-अभी स्वामी जी कह रहे थे कि कल यहां रेल्वे स्टेशन का उद्घाटन है। पहली बार श्रवणबेलगोला में रेल आ रही है। श्रवणबेलगोला पर बाहुबली की कृपा दृष्टि है। एक छोटे से गांव के लिए स्पेशल रेल लाईन डाली गई है। यहां नव-निर्वाचित मुख्यमंत्री कुमार स्वामी मौजूद है। वे इसी हासन जिले से हैं। श्रवणबेलगोला भी हासन जिले में ही है। हासन पर बाहुबली स्वामी की कितनी बड़ी कृपा दृष्टि है - इस जिले में एक व्यक्ति देश का प्रधानमंत्री (श्री एच.डी. देवगौडा) बना और उसका बेटा (एच. डी. कुमारा स्वामी) अभी-अभी राज्य का मुख्यमंत्री बना। पिता-पुत्र पर बाहुबली की अद्भुत दया दृष्टि है। कर्नाटक के राज्यपाल श्री टी.एन. चतुर्वेदी भी यहां मौजूद हैं। उन पर भी बाहुबली की बड़ी कृपा दृष्टि है। यही कारण है कि एन.डी.ए. सरकार द्वारा नियुक्त किये गये सभी राज्यपालों को यू.पी.ए. सरकार ने मुक्त करके हटा दिया। सिर्फ अकेले चतुर्ववदी जी हैं जो अभी कर्नाटक के राजभवन में राज्यपाल की हैसियत से डटे हुए हैं। बाबा ! इन चरणों की महिमा अपरंपार है। बस एक बार श्रद्धा से सिर झुकाने की और दिल से पुकारने की जरूरत है।

दुनिया में भारत है, भारत में कर्नाटक है, कर्नाटक में हासन है, हासन में श्रवणबेलगोला है, बेलगोला में विन्ध्यागिरी है, विन्ध्यगिरी के शिखर पर बाहुबली है। बाहुबली सर्वोच्च है। बाहुबली के ऊपर कुछ नहीं है, एक चीज है जो बाहुबली से भी ऊपर है वह है महामस्तकाभिषेक की जलधारा। जलधारा बाहुबली से भी ऊपर है। दरअसल वह जलधारा नहीं वरन् जीवन की राधा है। हमें अभिषेक की धारा को जीवन की राधा बनाना है।

अभी यहां पंकल्याणक महोत्सव के तहत भगवान ऋषभदेव का राज्याभिषेक किया जाना है। ऋषभदेव के इस राज्याभिषेक में जहां कई देशों के राजा महाराजा सम्मिलित

होंगे वहीं भारत के उपराष्ट्रपति श्री भैरोंसिंह शेखावत भी विशेष रूप से मौजूद हैं। श्री शेखावत का जीवन सादगी से भरा हुआ है। उनका जैन समाज व जैन मुनियों से गहरा लगाव रहा है। भगवान ऋषभदेव जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर हैं। वे युग के आदि में हुए इसलिए उन्हें आदिनाथ भी कहा जाता है। उन्होंने असि, मसि, कृषि, शिल्प, कला और वाणिज्य इन षट्कर्मों का तत्कालीन प्रजा को उपदेश दिया था। भरत ऋषभदेव के ज्येष्ठ पुत्र थे और भरत के नाम पर ही इस देश का नाम भारत वर्ष पड़ा। ऋषभदेव एक बड़े सम्राट थे। लेकिन यह कोई बड़ी बात नहीं है, बड़ी बात तो वह है कि वे एक दिन राजपाट छोड़कर दीक्षा लेते हैं, कठोर तपस्या करके कैवल्य को पाते हैं, धर्म चक्र का प्रवर्तन करते हैं और अन्ततः मुक्त (मोक्ष) होते हैं। जैन धर्म में सत्ताधारियों की नहीं, त्यागियों की पूजा होती है। राजाओं-महाराजाओं की नहीं तपस्वी मुनिराजों की पूजा होती है।

अन्त में मैं यही कहूंगा - जिन्दगी को जीना है मगर 'आह' के साथ नहीं बल्कि 'वाह' के साथ। आह के साथ जिन्दगी जीने में बोझिलता है वाह के साथ जिन्दगी जीने में जिन्दादिली है। जीवन में यदि सकारात्मक नजरिया विकसित हो जाए तो आह - जिन्दगी की पीड़ा भी अहा ! जिन्दगी के सुख संगीत में बदल सकती है। अहा जिन्दगी ! वाह जिन्दगी ! जय जिन्दगी ! जय जिन्दादिली !!

— ○ —

दीक्षा: लाइन ऑफ कन्ट्रोल



दीक्षा समारोह
36 मुनि-आर्यिका की दीक्षाओं पर प्रदत्त प्रवचन
प्रात, 13 फरवरी 2006

महामस्तकाभिषेक महोत्सव में आज का दिन दीक्षाओं का दिन है। अभी यहाँ 36 मुनि आर्यिकाओं की दीक्षाएं हो रही हैं। दोपहर में भी गुरु दीक्षा का कार्यक्रम है। जिन्दगी के लिए पांच शब्द अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं - शिक्षा, दीक्षा, भिक्षा, परीक्षा और मोक्ष। जरा इन दीक्षार्थियों को देखिए। कल इन्हें शिक्षा दी गयी थी, आज इन्हें दीक्षा दी जा रही है, कल इन्हें भिक्षा दी जाएगी, परसों इनकी परीक्षा होगी और फिर तब कहीं जाकर इन्हें मोक्ष मिलेगा। एक बात तो तय है कि दीक्षा के पहले शिक्षा जरूरी है। बगैर शिक्षा के दीक्षा आधी है, अधूरी है।

अभी पिछले साल भारत सरकार के सर्वे के अनुसार जैन समाज देश का सर्वाधिक शिक्षित समाज माना गया है। मगर यह कैसी विडम्बना है कि जैन समाज जितना अधिक शिक्षित है इस समाज का साधू उतना ही अधिक अशिक्षित है। शिक्षा चाहे भौतिक हो या आध्यात्मिक जीवन के लिए हर हाल में जरूरी है। शिक्षा जीवन के स्तर को ही ऊंचा नहीं उठाती है, वरन् धर्म, समाज व देश के स्तर को भी ऊंचा उठने की

सामर्थ्य देती है। समाज का गुरु हर दृष्टि से समर्थ हो यह जरूरी है। उसमें नेतृत्व की शक्ति हो यह आवश्यक है।

दीक्षा क्या है ? लाइन ऑफ कन्ट्रोल है। दीक्षा क्या है – तेज रफ्तार की गाडी में ब्रेक। भोजन में सब कुछ हो सिर्फ नमक न हो तो भोजन बेकार है। अस्पताल में सब कुछ हो सिर्फ डॉक्टर न हो तो अस्पताल बेकार है, मंदिर में सब कुछ हो सिर्फ मूर्ति न हो तो मंदिर बेकार है, गाड़ी में सब कुछ हो सिर्फ ब्रेक न हो तो गाड़ी बेकार है। जिन्दगी में सब कुछ हो सिर्फ संयम की साधना न हो, मन की मर्यादा न हो, दीक्षा की शिक्षा न हो तो जीवन बेकार है।

इन दीक्षार्थियों के दृढ़ संकल्पों को देखिए। ये किस तरह से अपने सिर के काले-काले केश बेरहमी से उखाड़ कर फेंक रहे हैं। शरीर के वस्त्राभूषण उतार फेंक रहे हैं। यहां संसार, शरीर और भोगों से विरक्ति का दिग्दर्शन हो रहा है। केशलोंच महज बालों को उखाड़ फेंकना नहीं है। बल्कि एक कसौटी है। दुकान पर कलर टी.वी. लेने जाओ तो दुकानदार कहता है पहले कैश लाओ। दीक्षा के लिए आचार्य से प्रार्थना करो तो आचार्य भी कहते हैं – पहले केश लाओ – यही केशलोंच का मतलब है। संसार, शरीर और भोगों के प्रति वैराग्य हुआ है या नहीं यह केश लोंच से ही मालूम पडता है।

मंच, प्रपंच, प्रश्न मंच और लंच करना है तो दुनिया भर की चीजों की जरूरत है लेकिन दीक्षा लेनी है तो सबसे पहले सिर्फ 'केशलोंच' की जरूरत है। पर अकेले केशलोंच से काम नहीं चलेगा। महावीर वाणी है कि – सिर मुंडन के साथ मन का मुंडन भी जरूरी है। महावीर कहते हैं – श्रमण होकर कोई सिर मुंडा ले यह तो हो सकता है लेकिन सिर मुंडा लेने से कोई श्रमण नहीं हो सकता है। इस कलयुग में दिगम्बर मुनि होना आश्चर्यों में आश्चर्य है। दिगम्बर मुनि का तप पूर्ण जीवन किसी अजूबे से कम नहीं है।

दिगम्बर मुनि का त्याग सर्वोच्च है। वह समाज की नग्नता को ढकने के लिए अपने तन के वस्त्र तक छोड देता है। जो अकेले में नग्न रहता है वह संसारी है, जो समाज में नग्न रहता है वह संन्यासी (दिगम्बर मुनि) है। अकेले में नग्न रहना वासना है, वासना का फल है, तथा दुनिया के सामने नग्न रहना साधना है, साधना का फल है। दिगम्बर मुनि वासना को मारकर साधना का ध्वज दंड लेकर दुनिया के सामने बच्चे की तरह निर्विकार भाव से खडा हो जाता है इसलिए सारी दुनिया उसके सामने झुक जाती है। जो वासना को मारकर नग्नता को प्राप्त करता है, ऐसा नंगा खुदा से भी बड़ा होता है। दिगम्बर मुनि की नग्नता परम पवित्र है। क्योंकि वह साधना की चरमोत्कर्ष स्थिति है। एक सज्जन मुझसे कह रहे थे कि ''तुम बने मुनि महाराज और हो गये नंगे। मैंने कहा, फिर क्या हुआ ?

वह बोला - बस हो गया। अब और क्या होना बाकी है। मैंने कहा - नहीं, अभी बहुत कुछ बाकी है। उन्होंने पूछाः क्या ? मैंने कहा - 'हम बन गये मुनि महाराज और हो गये नंगे, पर जहां चरण धर दिये वहीं हर-हर गंगे।' (तालियां)। दिगम्बर मुनि की ऐसी साधना होती है कि वह जहां भी अपने चरण रख देता है, वही गंगा स्नान हो जाता है।

मुझे कोई लम्बा चौड़ा वक्तव्य नहीं देना है, क्योंकि न तो इतना समय है और न ही इसकी जरूरत है। यहां सिखाकर नहीं सिखाया जा रहा है बल्कि यहां दिखाकर सिखाया जा रहा है। इन दीक्षार्थियों को देखिए और सीखिए त्याग के मार्ग पर चलना, मोक्ष मार्ग पर चलना। जैन धर्म में तो त्याग और वैराग्य की पूजा है, राग और उसके ठाठ-बाट की नहीं। आचार्य श्री विरागसागरजी व अन्य आचार्यों और आर्यिकाओं द्वारा दी जाने वाली दीक्षा प्रसंग पर मैं मुनि तरुणसागर अपने श्रोताओं से सिर्फ यही आग्रह करूंगा कि आप भी अपने मन में संयम के भाव जगाएं। वासना के बिस्तर पर पैदा हुए, वासना के बिस्तर पर जिएं और एक दिन वासना के ही बिस्तर पर मर गये तो यह जीवन की कोई उपलब्धि नहीं है। हम भले ही वासना के बिस्तर पर पैदा हुए हों लेकिन हमारी मृत्यु साधना के सस्तर पर होनी चाहिए - बस यही जिन्दगी की साधना है। यही सबक, यही सीख और यही पाठ इस दीक्षा कार्यक्रम को देखकर पढ़ना है।

महाव्रत न सही अणुव्रत तो ग्रहण करें। घर का त्याग न सही, रात्रि भोजन त्याग तो करें, देव दर्शन का संकल्प तो करें, स्वाध्याय करने की प्रतिज्ञा तो करें, णमोकार मंत्र की जाप की प्रतिज्ञा तो करें, मद्य, मांस, मधु के त्याग का नियम तो करें, अष्टमी-चतुर्दशी को ब्रह्मचर्य का पालन तो करें; बाजार और होटल का भोजन तो छोड़ें, पानी छानकर तो पियें। ये छोटी-छोटी त्याग की पगडंडियां हैं। अणुव्रत की पगडंडियों पर चलकर ही महाव्रत के राजपथ तक पहुँचा जा सकता है। मोक्ष के लिए तो इस राजपथ पर चलना ही होगा, आज नहीं तो कल चलना तो है ही।

एक छोटी-सी भी प्रतिज्ञा और संकल्प जिन्दगी को संवार देता है। जैन शास्त्रों को पढ़िए और देखिए एक छोटे से संकल्प का कमाल। मृगसेन धीवर ने यही तो संकल्प लिया था कि जाल में आई पहली मछली नहीं मारूंगा। सिर्फ इसी एक छोटे से संकल्प से उसका उद्धार हो गया। पुरुरवा भील ने बस इतना-सा ही तो संकल्प किया था कि कौए का मांस नहीं खाऊंगा। बस इसी एक छोटे से संकल्प से उसका कल्याण हो गया। हम सब यथाशक्ति, यथा संभव और यथा शीघ्र अपने आपको संयम की डोर से बांधे। व्रत नियम ग्रहण करें। पर हां, नियम ऐसा लें जिससे आत्म कल्याण होता हो। ऐसा नहीं कि जिससे आदमी खुद अपने को धोखा देता हो।

मैं दिल्ली में था। मैंने एक युवक से कहा – आज चातुर्मास शुरू हो रहा है, सबने कुछ न कुछ व्रत–नियम लिए हैं। तुम भी कोई नियम करो। वह बोला – मैंने भी आपकी प्रेरणा से आज चार नियम लिए हैं। मुझे उसकी बात सुनकर ताज्जुब हुआ कि यह व्यक्ति और नियम ले, वह भी चार–चार। मैंने पूछा – क्या आप बताओगे कि आपने चार नियम कौन–कौन से लिए हैं ? वह बोला – मैं सबके सामने नहीं बता सकता। मैंने सबको बाहर जाने का इशारा किया। वह बोला, मुनिश्री ! माफ करना, मेरा पहला नियम है कि मैं किसी राजा की लड़की से हाथ नहीं मिलाऊंगा। मैंने कहा – वाह ! क्या बात है। वह फिर बोला – मेरा दूसरा नियम है कि मरने के बाद मैं हाथ–पैर नहीं हिलाऊंगा। मैंने कहा – शाबास बेटे। मुझे पक्का भरोसा था कि तू कुछ न कुछ गड़बड़ जरूर करेगा। मैंने पूछा – तीसरा नियम ? वह बोलाः मेरा तीसरा नियम है – मैं जीते जी अपनी पत्नी को विधवा नहीं देखूंगा। (हँसी) और चौथा ? मेरा चौथा नियम है कि अब मैं जिन्दगी में कोई भी नियम नहीं लूंगा। मैंने कहा – जय हो पंचम काल के कम्बख्तों की। (तालियां) यह भी कोई नियम है ? यह नियम नहीं आत्म वंचना है, खुद को धोखा देना है। नियम अच्छे कार्यों का होता है, बुरे का नहीं।

आप सब मुनियों के दर्शन कर रहे हैं। मुनियों की दीक्षाओं को देख रहे हैं – हमें प्रेरणा लेनी है कि अगर हम मुनि ना बन सके तो एक श्रावक तो बनना ही है। श्रावक भी ना बन सके तो एक अच्छा नागरिक तो बनना ही है। मुनि बनकर पिच्छी ना पकड़ सके तो मुनि का कमंडलु पकड़कर मुनि के साथ चल सके – इतनी पात्रता तो जीवन में पैदा करनी ही है। बस मेरे हाथ में कहना था सो कह दिया अब करना ना करना तुम्हारे हाथ में है। करो या मरो – तुम्हारी मर्जी।

आपने मुझे शांति और प्रेम से सुना इसके लिए मैं....

—) —



13 फरवरी, 2006 को श्रवणबेलगोला में एक नया इतिहास रचा गया। 250 आचार्यों मुनियों और आर्यिकाओं के बीच क्रान्तिकारी संत मुनिश्री तरुणसागरजी ने अपने अनेक शिष्यों को गुरु-मंत्र दीक्षा दी और एक खास समारोह मे घूमते हुए कमलासन पर बैठकर शिष्यों द्वारा पूछे गये प्रश्नों के जो जवाब दिए वे कितने सटीक व मार्मिक थे इस बात का अंदाज मंच पर मौजूद जैन परम्परा के प्रमुख आचार्य वर्धमान सागरजी सहित अन्य सभी मुनि आर्यिकाओं व महामस्तकाभिषेक के मुख्य सूत्रधार भट्टारक श्री चारूकीर्ति जी के चेहरे की प्रसन्नता व निश्छल हंसी को देखकर लगाया जा सकता था। पाठकों के लिए मुनिश्री से पूछे गए सभी प्रश्न व उनके द्वारा दिए गए उत्तर अक्षरश यहाँ प्रस्तुत हैं।

– सम्पादक

सवाल-जवाब

समवशरण में पूज्यश्री द्वारा जिज्ञासाओं का समाधान
दोपहर, 13 फरवरी, 2006

प्रश्न – प्रार्थना क्यों जरूरी है ?

उत्तर – प्रार्थना प्राण है, प्रार्थना में बहुत शक्ति है, जिसने भोजन किया है, उसे चार-पांच घंटे भूख नहीं लगती। इसी प्रकार जिसने सच्ची प्रार्थना की है उसका मन चार-पांच घंटे पाप में नहीं जा सकता।

प्रश्न – संसार का सबसे सरल काम क्या है ?

उत्तर – साँस लेना। साँस लेते-लते कभी नहीं थकते।

प्रश्न – दीक्षा के बाद व्यक्ति का पुराना नाम क्यों बदल दिया जाता है ?

उत्तर – पुराना नाम व्यक्ति को पुराने संसार की याद दिलाता है, पुराना नाम रहेगा तो पुराना संसार भी पीछा करेगा। दीक्षा दूसरा जन्म है। जीवन नया है तो नाम भी नया होना चाहिए।

प्रश्न – राजा श्रेणिक ने महावीर से 60 हजार प्रश्न पूछे थे। हम आपसे कितने प्रश्न पूछ सकते हैं ?

उत्तर – सिर्फ एक। और वह आप पूछ चुके हैं।

प्रश्न – सुषुप्ति और समाधि में क्या अन्तर है ?

उत्तर – सुषुप्ति में मूर्च्छा होती है और समाधि में जागृति। सुषुप्ति में सिर नीचे हो जाएगा, समाधि में नहीं। सुषुप्ति में इतनी ताकत नहीं कि सिर का भार उठा सके।

प्रश्न – जीवन में धर्म क्यों जरूरी है ?

उत्तर – भोजन में और सब कुछ हो लेकिन नमक न हो तो भोजन बेकार है। मंदिर में और सब कुछ हो लेकिन मूर्ति न हो तो मंदिर बेकार है। अस्पताल में और सब कुछ हो लेकिन डॉक्टर न हो तो अस्पताल बेकार है। गाडी में और सब कुछ हो लेकिन ब्रेक न हो तो गाडी बेकार है। जीवन में और सब कुछ तो हो लेकिन धर्म न हो तो जीवन बेकार है।

प्रश्न – आज की दो बड़ी परेशानियां कौनसी हैं ?

उत्तर – मच्छर और मोबाइल। मच्छर आदमी को रात में सोने नहीं देता और मोबाइल दिन में शांति से बैठने नहीं देता।

प्रश्न – मैं पिछले आठ दिनों से यहाँ आ रहा हूँ और मैं देख रहा हूँ कि आप सभी मुनि-आचार्य, साधु-साध्वियां कितने प्रेम से मिल-जुलकर रहते हैं। एक-दूसरे के साथ उठते-बैठते हैं। आप लोग इतने प्रेम से कैसे रह लेते हैं ?

उत्तर – यह सब हमारे हैडमास्टर का करिश्मा है। हम सब तो सिर्फ मास्टर हैं। आचार्य श्री वर्धमानसागरजी हमारे हैडमास्टर हैं। हैडमास्टर कुशल और सक्षम हो तो फिर मास्टर को कोई हैडिक नहीं रहता। महावीर ने वात्सल्य की बात कही है। हम सब में एक-दूसरे के प्रति है वात्सल्य और हमारे मन में नहीं है कोई शल्य। इसलिए हम प्रेम से रहते हैं।

प्रश्न – शास्त्र पढ़ते हैं, लेकिन कुछ समझ में नहीं आता। क्या करें ?

उत्तर – दही को एक बार बिलोने से मक्खन नहीं निकलता। बार-बार बिलोने से ही मक्खन निकलता है। इसी प्रकार तत्व को समझना है तो बार-बार अभ्यास करना पड़ता है। कबीर ने कहा है – 'करत-करत अभ्यास के जड मति होत सुजान।' अभ्यास से जड मति भी सुजान हो जाता है, फिर आप तो सन्मति हैं।

प्रश्न – आजकल चरित्र पर ज्यादा जोर देने की बात कही जाती है। क्यों ?

उत्तर – अपने विचारों पर ध्यान दीजिए, ये आपके शब्द बन जाते हैं। अपने शब्दों पर ध्यान दीजिए, ये आपके एक्शन बन जाते हैं। अपने एक्शन पर ध्यान दीजिए,

ये आपकी आदत बन जाते हैं। अपनी आदतों पर ध्यान दीजिए ये आपका चरित्र बन जाती हैं। अपने चरित्र पर ध्यान दीजिए, यह आपका जीवन बन जाता है।

प्रश्न – महामस्तकाभिषेक 12 वर्षों में ही क्यों होता है ?

उत्तर – 12 वर्ष का एक युग होता है। युग परिवर्तन के साथ ही मस्तकाभिषेक होना जरूरी है। आचार्य भद्रबाहु 12 हजार मुनियों के संघ के साथ यहां आये थे और उन्होंने 12 वर्ष का सल्लेखना व्रत लिया था। इसलिए.... ।12 वर्ष की उम्र के बाद टीन-एज शुरू होती है। यह एक तरह से व्यक्ति का नया जन्म होता है। नये जन्म के साथ ही मस्तकाभिषेक जरूरी है। बाहुबली की इस मूर्ति को बनने में 12 वर्ष लगे थे। इसलिए मस्तकाभिषेक 12 वर्ष में होता है और कहा भी है कि 12 वर्षों में तो घूरे के दिन भी फिर जाते हैं। पुरुषार्थ करते रहिए, सफलता जरूर मिलेगी और फिर अगर हर साल मस्तकाभिषेक होने लगे तो उसका महत्व नहीं रहेगा। मस्तकाभिषेक की 2 साल पहले से तैयारियां शुरू करनी पड़ती हैं। अगर हर साल हो तो फिर एक अभिषेक पूरा भी नहीं हो पाएगा और दूसरे अभिषेक की तैयारी शुरू करनी पडेगी, जो कि प्रेक्टिकल में संभव नहीं है।

प्रश्न – मस्तकाभिषेक क्यों किया जाता है ?

उत्तर – सभी गड़बडियां मस्तिष्क से शुरू होती हैं। अगर आदमी का मन-मस्तिष्क शुद्ध हो जाए तो पूरा जीवन शुद्ध हो जाता है। बाहुबली के मस्तकाभिषेक को देखें और अपने मन-मस्तिष्क को शुद्ध रखें। बाहुबली के मस्तकाभिषेक के पीछे यही प्रेरणा है।

प्रश्न – गरीब आदमी श्रवणबेलगोला की यात्रा नहीं कर सकता है, तो उसे बाहुबली के दर्शन कैसे होंगे ?

उत्तर – भाव तेरे अच्छे हैं, तो भाग्य भी अलबेला है। श्रद्धा ।दिल में है तो घर भी श्रवणबेलगोला है।

प्रश्न – सभी मंदिरों और तीर्थों पर भगवान बाहुबली की मूर्ति हमेशा खड़ी मिलती है। क्या कोई ऐसी भी जगह है जहां बाहुबली बैठे हुए हों ?

उत्तर – आपने ठीक कहा। कोई भी मंदिर हो या तीर्थ, हर जगह बाहुबली खडे ही मिलेंगे। पूरे हिन्दुस्तान के जैन तीर्थों की परिक्रमा कर आइए, सब जगह बाहुबली के दर्शन खड्गासन मुद्रा में ही होंगे। हां, पूरी दुनिया में एक जगह है जहां बाहुबली

बैठे हुए मिलेंगे और वह है भक्त का दिल। बाहर की दुनिया में बाहुबली भले ही खड़े दिखें लेकिन भक्तों के दिलों में तो बैठे ही मिलेंगे।

प्रश्न - कोई संदेश, लेकिन काव्य में ?

उत्तर - कुछ सारहीन बेगारों को, श्रमदान नहीं कहते।
बंजर भूमि देने को, भूदान नहीं कहते।
चोरी करके जेल जाने को, बलिदान नहीं कहते।
कुछ जोड-तोड़ करने को, निर्माण नहीं कहते।
उठ-उठ कर गिर पड़ने को, उत्थान नहीं कहते।
दो-चार कदम चलने को, अभियान नहीं कहते।
सागर में तिरते तिनके को, जलयान नहीं कहते।
हर पद लिख जाने वाले को, विद्धान नहीं कहते।
एक नजर मिल जाने को, पहचान नहीं कहते।
चिकनी-चुपडी बातों को, गुणगान नहीं कहते।
हर चलने-फिरने वाले को, इंसान नहीं कहते।
मंदिर के हर पत्थर को, भगवान नहीं कहते।

प्रश्न - क्या जैने होने के लिए शाकाहारी होना जरूरी है। अगर जरूरी है तो कितना ?

उत्तर - जैन होने के लिए शाकाहारी होना जरूरी है और उतना ही जरूरी है जितना जिन्दा रहने के लिए सांस लेना।

प्रश्न - सम्यक्दर्शन की महिमा क्या है ?

उत्तर - संसार-समुद्र से पार उतरने के लिए सम्यक्दर्शन जहाज के समान है। लोहे से पीतल महंगा होता है, पीतल से तांबा महंगा होता है। तांबे से चांदी महंगी होती है। चांदी से सोना महंगा होता है। सोने से हीरा महंगा होता है। लेकिन इससे भी बहुमूल्य हीरा है - सम्यक्दर्शन।

प्रश्न - हरिद्धार में हिन्दुओं का कुंभ मेला लगता है। उसमें कई अखाड़े के साधु-संत आते हैं। यहां मस्तकाभिषेक में भी अनेक मुनि-आचार्य आए हैं। तो ये मुनि-आचार्य किस-किस अखाड़े से हैं ?

उत्तर - (हँसी) जैन धर्म में मुनियों के कोई अखाड़े नहीं होते। हम सब मुनि-आचार्य किसी अखाड़े से नहीं हैं, फिर भी तुम्हारे समझने के लिए मैं कहूंगा कि हम सब मुनि एक ही अखाड़े के हैं और उस अखाड़े का नाम है - चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागरजी महाराज।

प्रश्न – महामस्तकाभिषेक महोत्सव के निमित्त देशभर से यहां सैकड़ों की संख्या में मुनि-आचार्य आते हैं। हमने तो यहां तक सुना है कि एक दिन में तीन-तीन, चार-चार बार मुनि संघों का अलग-अलग समय में नगर-प्रवेश होता है। मेरा सवाल यह है कि उनका स्वागत और अगवानी कौन करता होगा ?

उत्तर – अरे बाबा ! मुनि-आचार्यों का जैसा स्वागत यहां (श्रवणबेलगोला) होता है, वैसा पूरे हिन्दुस्तान में नहीं होता होगा। पूछो कैसे ? अगर किसी नगर/शहर में मुनि-आचार्य आते होंगे तो उनके स्वागत में कोई विधायक-सांसद खड़ा रहता होगा, मुनि प्रभावशाली रहा तो स्वागत में कोई कलेक्टर, एस.पी. खड़ा रहता होगा और भी अधिक प्रभावशाली साधु रहा हो तो कोई मंत्री, मुख्यमंत्री खड़ा रहता होगा। लेकिन यहां तो मुनि-आचार्यों के स्वागत के लिए खुद भगवान बाहुबली खडे हैं। मुनियों का इससे बेहतर स्वागत और क्या होगा। (तालियाँ)

प्रश्न – दुनिया के सात आश्चर्य जग-जाहिर हैं। आठवां आश्चर्य भगवान बाहुबली की मूर्ति है। क्या इसके अलावा भी कोई आश्चर्य है ?

उत्तर – जी हाँ ! इसके अलावा भी कुछ आश्चर्य हैं। आठवां आश्चर्य भगवान बाहुबली की मूर्ति है। नौवां आश्चर्य इस कलियुग में दिगम्बर मुनि होना है और दसवां आश्चर्य चारूकीर्तिजी हैं, जो इतनी बडी जिम्मेदारी को निभाते हुए भी सहज व शांत बने रहते हैं। मैंने इस आदमी के चेहरे पर कभी तनाव और क्रोध नहीं देखा, यह दसवां आश्चर्य है। और दस के बाद बस !

प्रश्न – भरत-बाहुबली दोनों भाई थे। दोनों में सत्ता को लेकर तकरार हुई। तो क्या ये दोनों भाइयों के जीवन हमारे लिए आदर्श हैं ? क्या हम अपने बच्चों को सिखा सकते हैं कि हमें भरत-बाहुबली जैसा भाई चाहिए ?

उत्तर – बेशक ! भरत-बाहुबली दोनों का जीवन आदर्श है। दोनों भाई थे। दोनों में युद्ध हुआ। लेकिन फिर दोनों तपस्वी हुए और मोक्ष गये। अपने बच्चों को अच्छी तरह समझा दें कि इस देश को भरत-बाहुबली जैसा भाई चाहिए, राम-लक्ष्मण जैसा भाई चाहिए, अकलंक-निकलंक जैसा भाई चाहिए और देशभूषण-कुलभूषण जैसा भाई चाहिए। कम से कम मुन्नभाई जैसा भाई तो नहीं चाहिए।

प्रश्न – क्या हम भी बाहुबली बन सकते हैं ?

उत्तर – बिल्कुल ! पर पहले 'बाहुबली सागर' बन जाइए, फिर बाहुबली भी बन सकते हो। 22 जनवरी को जब राष्ट्रपति जी इस कार्यक्रम का उद्‌घाटन कर रहे थे, उस समय मैंने कहा था कि अमीर बनना है तो 5 साल की साधना चाहिए।

विद्वान बनना है तो 10 वर्ष की साधना चाहिए। डॉक्टर-इंजीनियर बनना है तो 15 साल की साधना चाहिए। वैज्ञानिक बनना है तो 20 वर्ष की साधना चाहिए। लेकिन बाहुबली जैसा युग-पुरुष बनना है तो 1000 वर्ष की साधना चाहिए। बोलो, अब क्या ख्याल है ?

प्रश्न – कोई संदेश जो शॉर्ट एंड स्वीट हो ?

उत्तर – *अहिंसा से सुख, त्याग से शांति, मैत्री से प्रगति और ध्यान से सिद्धि।* यही है बाहुबली का संदेश।

प्रश्न – संत-मुनि कहते हैं, संतोष रखिए, संतोष रखिए। पर हर बात में तो संतोष नहीं रखा जा सकता। इस सम्बन्ध में आपका क्या कहना है ?

उत्तर – भोग में संतोष रखिए। भोजन में संतोष रखिए। संसार-सुख में संतोष रखिए। सम्पत्ति में संतोष रखिए। लेकिन अगर गोम्मटेश बाहुबली जैसे महापुरुष की भक्ति और भजन करने का सौभाग्य मिल जाए तो उसमें संतोष नहीं, लोभ रखिए। जिसे भक्ति में संतोष हो जाए तो समझना अभी उसकी भक्ति कच्ची है, बच्ची है। भक्ति में लोभ हो तो भक्ति सच्ची है, अच्छी है।

प्रश्न – माफ करियेगा, मेरा प्रश्न जरा अटपटा है। यह बीवी और टीवी का युग है। आप बीवी और टीवी में क्या फर्क समझते हैं ?

उत्तर – प्रश्न अटपटा है तो उत्तर भी चटपटा है। सुनियेगा – टीवी और बीवी में सिर्फ इतना ही फर्क है कि टीवी पहले ब्लैक एण्ड व्हाइट होता है और बाद में कलर्ड हो जाता है जबकि बीवी पहले कलर्ड होती है और बाद में ब्लैक एण्ड व्हाइट हो जाती है।

प्रश्न – हम भगवान बाहुबली और आचार्य भद्रबाहुजी की वंदना के लिए विन्ध्यगिरि और चन्द्रगिरि पहाड़ों पर जाते हैं। ये पहाड़ हम से क्या कहते हैं ?

उत्तर – चन्द्रगिरि कहता है – चमचागिरि करना छोड़ दो। विन्ध्यगिरि कहता है – दादागिरि करना छोड़ दो।

प्रश्न – क्या कामयाबी किसी पेड़ पर उगती है ?

उत्तर – *जी नहीं! कामयाबी पेड़ पर नहीं, दिमाग और भाग्य में उगती है।* बाहुबली के जीवन में एक राष्ट्र के राजा बनने की स्थितियां मौजूद थीं, मगर वे ऐश्वर्य का त्याग कर गए तो युगों के राजा बन गये।

प्रश्न – क्या आपको भी सपने आते हैं ?

उत्तर – **मुझे सपने आते नहीं हैं, मैं सपने देखता हूँ। और सपने रात में नहीं, दिन में देखता हूँ। अभी भी मैं एक सपना देख रहा हूँ।.... कितना अच्छा होगा कि चारूकीर्तिजी जैसे दस भट्टारक इस देश को मिल जाएं। जैन समाज का तो कायाकल्प हो जाएगा। मैंने जिन्दगी में चार बड़े सपने देखे थे। पहला सपना था – मैं महावीर को मंदिरों और जैनियों के कब्जे से छुड़ाऊं और उन्हें चौराहे पर खड़ा करूं। यह सपना मेरा पूरा हुआ। दूसरा सपना था – मैं लालकिले से राष्ट्र को सम्बोधित करूं। मेरा यह सपना भी पूरा हुआ। तीसरा सपना था – भारतीय सेना को सम्बोधित करूं। मेरा यह सपना भी पूरा हुआ। चौथा सपना है – जो अभी अधूरा है, लेकिन मुझे विश्वास है कि वह एक न एक दिन पूरा जरूर होगा।** आप जानना चाहेंगे मेरा चौथा सपना ? मेरा चौथा सपना है – मैं लोकसभा और विधानसभा में जाकर वहाँ जो दस हजार खतरनाक लोग मौजूद हैं, उन्हें सम्बोधित करूं।

प्रश्न – सुखी दाम्पत्य जीवन के लिए दो कौन-सी चीजें जरूरी हैं ?

उत्तर – चरित्र और सच्चा प्रेम। पंडित लड़के-लड़की की कुंडली मिलाते हैं। 36 गुण मिलाकर शादी करवाते हैं। फिर भी दोनों में 36 का आंकड़ा बना रहता है। कमाल है। अरे! 36 गुण मिलाकर शादी हुई। 7 जन्म की गारंटी होनी चाहिए थी। लेकिन 7 जन्म तो दूर हैं, 7 साल भी पूरे नहीं होते और 'कहानी घर-घर की' हो जाती है। अलबत्ता समर्पण और त्याग हर रिश्ते की गारंटी है।

प्रश्न – रिश्तों का आधार क्या होता है ?

उत्तर – विश्वास ! और जब विश्वास टूट जाए तो फिर आत्मविश्वास।

प्रश्न – यदि आदमी मांसाहार न करे तो दुनिया में जानवर इतने अधिक बढ़ जायेंगे कि हमारा तो रहना ही मुश्किल हो जाएगा। आप इस बारे में क्या सोचते हैं ?

उत्तर – क्या आपने कभी गधे को खाया ? नहीं ! तो क्या गधों की संख्या बढ़ गई ? नहीं न ! तो फिर यह सवाल कहाँ से आया। प्रकृति का अपना संतुलन है। आप घबराइए मत। आपको क्या, आपकी आने वाली पीढ़ियों को भी मुश्किल नहीं आएगी।

प्रश्न – चार लाइन में जीवन के लिए क्या संदेश हो सकता है ?

उत्तर – छोटों को देखकर जिओ, बड़ों को देखकर बढ़ो, अच्छे के लिए प्रयास करो और बुरे के लिए तैयार रहो।

प्रश्न – जिन्दगी क्या है ?

उत्तर – रुकिए, देखिए और जाइए, बस यही जिन्दगी है। इंसान इस जहां में सिर्फ इतनी-सी देर के लिए ही आता है।

प्रश्न – युवा पीढ़ी को आप क्या संदेश देना चाहेंगे ?

उत्तर – आगे बढ़ो लेकिन एक लाइन ऑफ कन्ट्रोल खींच कर रखो। आगे बढ़ने और सफलता के लिए आपका तन और मन दोनों स्वस्थ होने चाहिए। शरीर स्वस्थ होगा तो दिमाग भी तेज चलेगा। तन और मन को स्वस्थ रखने के लिए आहार, विहार और विचार में संतुलन रखना बहुत जरूरी है।

प्रश्न – सफलता के शिखर पर पहुँचने के लिए क्या करना होगा ?

उत्तर – सतत संघर्ष, अथक् प्रयास और कठोर मेहनत। शिखर पर पहुँचने के लिए पहली सीढ़ी पार करनी पड़ती है, सीधे सौवीं पीढ़ी पर नहीं पहुँचा जा सकता। असफल होने के डर से भागने की बजाए कोशिश करते रहें। थोड़ा पसीना बहाएं। सफलता आपके कदम चूमेगी।

प्रश्न – एक अकेला ईमानदार क्या करेगा, जब चारों तरफ बेईमान घूम रहे हैं ?

उत्तर – आप एक ईमानदार इंसान बन जाइए। दुनिया से एक बेईमान कम हो जाएगा। यह मानना कि चारों तरफ सब बेईमान घूम रहे हैं – ठीक नहीं है। अच्छे लोग खत्म नहीं हुए हैं और न ही उनकी कमी हुई है। इन लोगों को या तो पीछे धकेल दिया गया है या किनारे लगा दिया गया है।

प्रश्न – मैंने सुना है कि आप धर्म-प्रचार के लिए विदेश जाने वाले हैं। अगर आप विदेश जा रहे हैं तो कब जा रहे हैं

उत्तर – 30 फरवरी, 2006 को (इसका मतलब लोगों को देर से समझ में आया)

प्रश्न – लोग कहते हैं कि आपके आने से महामस्तकाभिषेक में चार चांद लग गए। आप क्या सोचते हैं ?

उत्तर – मैं ऐसा नहीं कहूंगा कि मेरे यहाँ आने से चार चांद लग गए। मैं ऐसा कहूंगा कि मेरे यहाँ आने से मेरे भाग्य जग गए।

प्रश्न – सपने देखना कितना जरूरी है ?

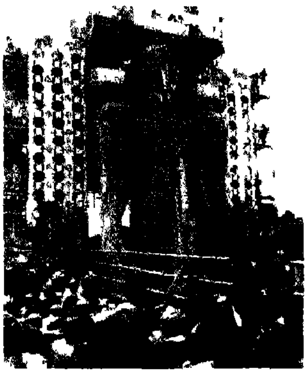
उत्तर – हर इंसान को सपने जरूर देखने चाहिए। लेकिन ध्यान रहे कि उन सपनों को साकार करने के लिए अपने वजूद को दांव पर लगाना पड़ता है।

प्रश्न – आप के भीतर की ताकत क्या है ? और आप इतना फास्ट क्यों बोलते हैं ?

उत्तर – क्या करूं, फास्ट बोलना मेरी मजबूरी है। जमाना ही फास्ट का है। आज की नई पीढ़ी को सब कुछ फास्ट चाहिए। जैसे फास्ट म्यूजिक, फास्ट ट्रेन, फास्ट फूड और इसी तरह फास्ट प्रवचन। मेरी असली ताकत आत्मबल है।

— ○ —

... कि वह फोन नम्बर ही भूल जाएं



गोम्मटेश बाहुबली का महामस्तकाभिषेक महोत्सव आज सम्पन्न हुआ। न सिर्फ सम्पन्न हुआ, बल्कि निर्विघ्न सम्पन्न हुआ और न सिर्फ निर्विघ्न सम्पन्न हुआ बल्कि सानद सम्पन्न हुआ। देश और दुनिया के हजारों लाखों श्रद्धालुओं के जमावडे के बावजूद कहीं भी किसी दुर्घटना का न होना किसी चमत्कार से कम नहीं है। यह सब भगवान बाहुबली का ही चमत्कार है। पिछले 12 दिनों में 25 लाख से अधिक लोगों ने महोत्सव में शिरकत की लेकिन कहीं कोई खून खराबा नहीं, लूटपाट नहीं चोरी-डकैती नहीं, जान-माल की कोई हानि नहीं। भला होता भी कैसे ? क्योंकि यहा के पूरे वातावरण में बाहुबली का यह सदेश गूज रहा है - अहिंसा से सुख, त्याग से शाति मैत्री से प्रगति, ध्यान से सिद्धि।

सच कहू तो बाहुबली के इन चरणों की महिमा अद्भुत है। बाहुबली के श्रीचरणों में सिर झुकाने और माथा टेकने के बाद जो आत्मिक शाति मिलती है, वह अन्यत्र दुर्लभ है। कश्मीर की हरियाली और खुशहाली,

महोत्सव समापन
मस्तकाभिषेक के मचान से
आखरी सदेश
19 फरवरी 2006

घाटियों और वादियों के देखने के बाद कभी किसी ने कहा था कि धरती पर यदि कहीं स्वर्ग है तो वह यही हैं, यही हैं यहीं है। मैं मुनि तरुणसागर इस वक्तव्य में थोड़ा-सा परिवर्तन करके यों कहना चाहता हूँ कि जब कोई श्रद्धालु सैकड़ों-हजारों कि.मी. की यात्रा करते हुए यहाँ श्रवणबेलगोला पहुँचता है। बाहुबली स्वामी के दर्शन करने के लिए विन्ध्यगिरि की 620 सीढियां हांफते-हांफते चढता है और बाहुबली के इन श्री चरणों में जब अपना सिर रखता है तब उसे जो सुकून व शांति मिलती है तो उसकी अन्तरात्मा से यही आवाज निकलती है कि दुनिया में यदि कहीं सच्ची सुख-शांति है तो वह इन्हीं चरणों में है, इन्हीं चरणों में है, इन्हीं के चरणों में है। बाहुबली के चरण तारणहार हैं। यह मूर्ति कोई मामूली मूर्ति नहीं है, खुद में एक चमत्कार है। चमत्कार मूर्ति में नहीं होता है, हमारी आस्था में होता है। हमारी आँखों में होता है।

आज महोत्सव पूरा हो रहा है और श्रद्धालु अपने-अपने घरों को लौटने के लिए तैयार हैं। बेशक आप अपने घरों को लौटे लेकिन खाली हाथ न लौटें। सेवा और साधना का एक संकल्प लेकर लौटे। एक आदर्श जीवन जीने का संकल्प लेकर लौटे। जिन्दगी में सैकडों बुराइयाँ हैं उनमें से एक-दो बुराइयों को, एक-दो बुरी आदतों को बाहुबली स्वामी के चरणों में छोड कर लौटें। इससे बेहतर बाहुबली के चरणों में और कोई समर्पण नहीं हो सकता और ना ही संकल्प। एक भी बुरी आदत सुधर जाए तो यह तीर्थयात्रा सफल है। कुछ समर्पण करके जाएं। कुछ संकल्प लेकर जाएं। संकल्प और समर्पण के सहारे ही जिन्दगी चलती है।

दिगम्बर जैन मठ के प्रमुख भट्टारक स्वस्ति श्री चारूकीर्ति जी की 12 वर्षों की कठिन तपस्या का फल है यह महामस्तकाभिषेक महोत्सव। वे विलक्षण सूझ-बूझ के धनी हैं। उन्होंने भगवान बाहुबली को माध्यम बनाकर जैन धर्म की जो विश्व व्यापक धर्म प्रभावना की है वह इतिहास में स्वर्ण अक्षरों से लिखी जायेगी। मैंने सुना है कि वे पिछली कई रातों से सोये नहीं हैं। आज महोत्सव के सानंद सम्पन्न हो जाने पर वे चैन की नींद सोयेंगे।

गोमटेश्वर बाहुबली के प्रतिदिन के मस्तकाभिषेक की सुन्दर व्यवस्थाओं के लिए श्री एन.के. सेठी, जयपुर की सेवाओं को भी भुलाया नहीं जा सकता। वीर सेवादल और वीर सेवा मण्डल के सैकडों कार्यकर्ताओं ने स्वयं सेवक के रूप में सेवाएं दी हैं, इसके लिए मैं उन्हें और सेठी जी को बहुत-बहुत आशीर्वाद देता हूँ। चिलचिलाती धूप में आपने यहाँ घंटो बैठकर जिस भक्ति भावना और भगवत्ता का परिचय दिया है वह भी तारीफे काबिल है। यह मस्तकाभिषेक महोत्सव इक्कीसवीं सदी का पहला मस्तकाभिषेक महोत्सव था

और आज मैं मुनि तरुणसागर मस्तकाभिषेक के लिए निर्मित इस मचान के शीर्ष पर खड़ा होकर दावे के साथ कह सकता हूँ कि इक्कीसवीं सदी का यह पहला मस्तकाभिषेक हर दृष्टि से 'एक्कीसा' रहा। इसके लिए चारूकीर्ति स्वामीजी और उनके सहयोगियों को बहुत-बहुत आशीर्वाद।

बस मेरा आखिरी एक संदेश जो आपको अपने साथ लेकर घर जाना है और घर में जीना है। कल्पना करें यदि कोई सास मस्तकाभिषेक महोत्सव में आयी है और बहू नहीं आ पाई तो सास जब अपने घर पहुँचे तो अपनी बहू को इतना प्यार दे, इतना प्यार दे कि बहू अपने पीहर का फोन नम्बर ही भूल जाए। सास के व्यवहार को देखकर बहू को लगना चाहिए कि 'अम्माजी' गंगा जी नहाकर आयी हैं और यदि कोई बहू बाहुबली के चरणों में आयी है तो वह घर जाकर अपनी सास को इतना आदर दे, इतना आदर दे कि सास अपनी बेटी का नाम जपना ही भूल जाए और अपनी बहू को ही बेटी मानने को मजबूर हो जाए। यह तो हुई सास-बहू की बात। अब जरा बाप-बेटे के लिए भी कुछ कह दूं। बाप जब यहाँ से घर पहुँचे तो वह ऐसा जीवन जीए, ऐसा जीवन जिए कि उसके युवा बेटे को तिजौरी की चाबी के लिए अपने बाप की मृत्यु का इन्तजार न करना पड़े। बाप को चाहिए कि वह भगवान बाहुबली की भांति समय आने पर स्वेच्छा से तिजौरी की चाबी और अधिकार का सुख छोड़ दे और अगर कोई बाप यहाँ नहीं आ पाया है। उसका बेटा आया है तो बेटे को चाहिए कि वह जब यहाँ से अपने घर पहुँचे तो ऐसा सात्विक और प्रामाणिक जीवन जिए कि उसके जीवन को देखकर दुनिया उसके माँ-बाप से पूछे कि कौन से पुण्य के उदय और तपस्या के फलस्वरूप तुमने ऐसी होनहार औलाद पाई है। बस बाहुबली के महामस्तकाभिषेक के लिए दूर-सुदूर राज्यों से आये आप सब श्रद्धालुओं के लिए मुझ मुनि तरुणसागर का यही आखिरी संदेश है।

इन लम्हों का पुन: साक्षी बनने के लिए अब हमें 2018 का लम्बा इन्तजार करना होगा। बस, अब और नहीं।

जय गोम्मटेश !
जय बाहुबली !!

— o —

अब मैं चलता हूँ...



मंगल विदाई

श्रवणबेलगोला से प्रस्थान अवसर पर प्रदत्त प्रवचन

26 फरवरी, 2006

आज श्रवणबेलगोला से 43 दिनों के लम्बे प्रवास के पश्चात् यहाँ से गमन कर रहा हूँ। एक दिन था, जब आगमन हुआ था। आज का दिन है जब गमन हो रहा है। जब आगमन होता है तो यह भी तय होता है कि एक दिन गमन भी होगा। आप जरा आगमन शब्द को गौर से देखिए, आगमन में गमन छुपा हुआ है। आ-गमन इसका मतलब जो आया है वह जायेगा जरूर और जो जा रहा है वह आयेगा - यह जरूरी नहीं है। क्योंकि गमन शब्द में आगमन का आभास कहीं से भी नहीं होता। 'आया है सो जाएगा - राजा रंक फकीर।'

मैं ऐसा नहीं कहूंगा कि ये 43 दिन कैसे निकले - ये हम जानते हैं। मैं तो यही कहूंगा कि ये 43 दिन कैसे निकल गये पता ही नहीं चला। सच है आनंद और सुख के दिन कब गुजर जाते हैं पता कहाँ चलता है। मैं खुशनसीब हूँ कि मुझे आचार्यश्री वर्धमानसागर जी सहित अनेक आचार्यों, मुनियों से प्रेम, आदर, अपनापन और वात्सल्य मिला है। मैं मानता हूँ कि यहाँ मेरे प्रवचन और सत्संगों से लोगों ने मुझसे बहुत

कुछ सीखा-समझा होगा लेकिन मैं यह भी मानता हूँ कि इन संत-मुनियों के बीच में उठने-बैठने से मैंने भी बहुत कुछ सीखा-समझा है। इस तरह के वातावरण में रहने का, उठने-बैठने का यह मेरा पहला अवसर था और इस अवसर ने मुझे नये अनुभव दिये हैं।

भट्टारक श्री चारूकीर्ति जी के लिए मैं क्या कहूँ कुछ समझ नहीं आता। पूरे मस्तकाभिषेक महोत्सव में उन्होंने मुझे जरूरत से ज्यादा महत्व दिया है। चाहे राष्ट्रपति का कार्यक्रम रहा हो या उपराष्ट्रपति का, महामस्तकाभिषेक मुख्य कार्यक्रम हो या दीक्षाओं का हर जगह मुझे आगे रखा है। सच कहूँ तो इस महोत्सव में सम्मिलित होने को लेकर मैं बड़े पशोपेश में था। क्योंकि ऐसे कार्यक्रमों में मेरा कभी जाना नहीं होता है लेकिन मैं आज अपने दिल की बात कह रहा हूँ, मुझे ऐसा कभी नहीं लगा कि मुझे नजर अंदाज किया जा रहा है बल्कि यहां मेरी प्रतिभा और प्रभाव को पूरा सम्मान दिया गया।

'नई दुनिया' (म.प्र.) के पत्रकार प्रवीण शर्मा ने मुझसे एक सवाल किया - श्रवणबेलगोला ने आपको बहुत कुछ दिया है, आपने श्रवणबेलगोला को क्या दिया ? मैंने कहा, मैंने दिया नहीं है, मैं दूंगा। मैं गोम्मटेश बाहुबली को अपने प्रवचनों का कथा नायक बनाकर पूरे देश को बाहुबली की कथा सुनाऊंगा। उनके आदर्शों और संदेश को जन-जन तक पहुँचाऊंगा। अभी तक मेरे प्रवचनों और चिन्तन का पूरा फोकस महावीर और उनके दर्शन पर होता था। अब महावीर के साथ बाहुबली भी मेरे कथा नायक होंगे। कथा शब्द पर जरा गौर करें - कथा इस शब्द को जरा उल्टा कर दें। 'थका' शब्द बनता है। सदियों से जो खड़ा है पर अभी वो थका नहीं उसकी ही कथा मुनि तरुणसागर देश और दुनिया को सुनायेंगे।

भगवान बाहुबली खुले आकाश तले कायोत्सर्ग मुद्रा में खड़े हैं। कहते हैं : खाली दिमाग शैतान का घर होता है - यह सच भी है। मगर यह भी सच है कि खुला दिमाग भगवान का घर होता है। खुला आकाश और उसके नीचे बाहुबली की कायोत्सर्ग मुद्रा हमें संदेश दे रही है कि अपने मन और विचार की खिड़कियाँ खुली रखें। दिल और दिमाग को खुला रखें। जीवन पारदर्शी हो - यह जरूरी है। खुली किताब की तरह हो - यह जरूरी है।

महामस्तकाभिषेक का ही यह आकर्षक था कि यहाँ 250 से अधिक दिगम्बर मुनि-आर्यिकाओं का अद्भुत सान्निध्य संगम रहा। आचार्य श्री वर्धमानसागरजी कह रहे थे कि जहाँ पिछले मस्तकाभिषेक में कुल 65 पिच्छीधारी साधु-साध्वियाँ थीं वहीं इस बार यह आंकड़ा 250 तक पहुँच गया है। मैंने कहा, महाराज, यह जैन धर्म का उदय काल है। आप देखना अगले महामस्तकाभिषेक 2018 में यह संख्या 500 तक पहुँचने वाली है। आखिर जहाँ बाहुबली 1000 वर्ष से खड़े हैं वहाँ एक दिन 1000 मुनि-आर्यिकाएं एक

साथ उनकी वंदना जरूर करेंगे। जैन धर्म के किसी भी महोत्सव में त्यागियों की उपस्थिति महोत्सव का गौरव होता है।

इतनी बड़ी संख्या में मौजूद साधु-संतों के आहार-विहार आदि की व्यवस्था करना कोई आसान काम नहीं होता लेकिन त्यागी समिति के प्रमुख श्रीपाल गंगवाल ने दिन-रात एक करके इन व्यवस्थाओं को बखूबी से संभाला है। दो मुनियों को लाना दो हाथियों को घर में बांधने जैसा है। फिर भी गंगवाल और उनके साथियों ने 200 मुनियों की वैय्यावृत्ति और व्यवस्थाओं का महान सेवा कार्य किया है। महोत्सव के महामंत्री अरविंद आर. दोशी जी (मुम्बई) और डी. आर. शाह भी कार्यक्रम के प्रमुख सूत्रधारों में से हैं। दोशी जी सुलझे विचारों के धनी हैं। हम मुनि नहीं बन सकते तो मुनियों की सेवा तो कर ही सकते हैं। मुनियों की सेवा वैय्यावृत्ति श्रावक का पहला धर्म है।

कल मैं भट्टारक चारुकीर्तिजी से चर्चा कर रहा था। मैंने पूछा – आगामी कार्य योजना क्या है ? बोले – जिस तरह बनारस में हिन्दू विश्वविद्यालय है, अलीगढ़ में मुस्लिम विश्वविद्यालय है, बस वैसा ही श्रवणबेलगोला में जैन विश्वविद्यालय हो यह मेरा सपना है। बेशक यह एक बहुत बडा सपना है और इस सपने को साकार करना भी इतना आसान काम नहीं है। हाँ, अगर स्वामी जी के सपने को हिन्दुस्तान का पूरा जैन समाज अपना सपना बना ले तो कोई मुश्किल काम भी नहीं है। आखिर जैन समाज के पास लक्ष्मी और सरस्वती दोनों में से किस चीज की कमी है ? हमें अपने तीर्थों को सिर्फ पूजा स्थल बनाकर नहीं रखना है वरन् उन्हें सेवा का केन्द्र भी बनाना है। वहाँ शिक्षा, चिकित्सा और दीक्षा की त्रिवेणी भी बहानी है।

अब विदा लेने का वक्त आ गया है। मैसूर के लिए प्रस्थान करना है। गोम्मटेश भगवान बाहुबली से आप सबके मंगलमय जीवन की कामना व प्रार्थना है। अच्छा तो अब चलता हूँ...।

— ○ —

देश भर में सर्वाधिक 'पढ़े और सुने' जाने वाले क्रांतिकारी संत

मुनिश्री तरुणसागरजी का पठनीय साहित्य

एक परिचय

1 **दुःख से मुक्ति कैसे मिले**
22 मननीय प्रवचनों का अपूर्व संकलन, जीवन से जुड़ी समस्याओं का सटीक समाधान
मूल्य 30 रुपये

2 **क्रोध को कैसे जीतें ?**
(हिन्दी, अंग्रेजी, गुजराती व मराठी)
जन-जन की समस्या क्रोध है। हर आदमी क्रोध से परेशान है पीड़ित है। 'क्रोध को कैसे जीतें ?' पुस्तक क्रोध से मुक्ति दिलाने में पूर्ण समर्थ है। दिल को लुभाने वाली मुनिश्री की विशिष्ट शैली से कृति चर्चित बन पड़ी है।
मूल्य 15 रुपये

3 **प्रेस-वार्ताएं**
प्रेस-वार्ताएं अपने आप में एक अनूठी पुस्तक है। इन्दौर, भोपाल कोटा, मेरठ, दिल्ली आदि में आयोजित विशिष्ट वार्ताओं का अपूर्व प्रकाशन।
मूल्य 25 रुपये

4 **चपल-मन**
दिल और दिमाग को झकझोर देने वाली कविताएं पढ़ने बैठो तो पढ़ते ही जाओ। मुनिश्री की पहली और बहुचर्चित कृति।
मूल्य 25 रुपये

5 **जैन बाल भारती (भाग 1, 2, 3, 4)**
जैन धर्म के प्रारम्भिक ज्ञान हेतु सर्वश्रेष्ठ बाल प्रकाशन। नई शैली में जैन धर्म के क्लिष्ट विषयों की सुन्दरतम प्रस्तुति।
मूल्य 25 रुपये

6 **मन को कैसे जीएं ?**
मन चंचल है चपल है क्यों ? चंचल मन को कैसे रोकें ? इस प्रश्न का त्वरित समाधान प्रस्तुत कृति में मिलेगा।
मूल्य 15 रुपये

7 **मृत्यु-बोध (बहुचर्चित)**
(हिन्दी व अंग्रेजी)
जीवन के शाश्वत सत्य 'मृत्यु' पर एक मौलिक कृति जिसका एक-एक वाक्य इतना सरस, मीठा, पवित्र जीवन्त व ताजगी लिए हुए है कि मन को हर वाक्य पर सोचने को मजबूर कर देगा।
मूल्य 15 रुपये

8 **मुकुट जब झुकने लगे**
23 अगस्त 1997 को दिल्ली के रामलीला मैदान में भारत सरकार के गृहमंत्री श्री लालकृष्ण आडवाणी के मुख्य आतिथ्य में प्रदत्त प्रवचन जिसमें आप पढ़ेंगे कुलकर नाभिराय के जीवन का एक प्रसंग आपके जीवन के लिए।
मूल्य 15 रुपये

9 **एक लड़की**
(हिन्दी व अंग्रेजी)
मुनिश्री द्वारा 5 जुलाई 1997 को दिल्ली के ऐतिहासिक परेड ग्राउंड लाल किला मैदान में दिया गया भ्रूण-हत्या पर एक विशेष प्रवचन। विषय की प्रस्तुति कुछ इस तरह है कि बस पढ़ते जाओ और हँसते जाओ-रोते जाओ।
मूल्य 15 रुपये

10 **एक था सेठ**
प्रदत्त एक कथा-प्रवचन। जीवन की सच्चाइयों और अध्यात्म की गहराइयों का अपूर्व चिन्तन।
मूल्य 15 रुपये

11 **क्रान्तिकारी संत**
प्रसिद्ध लेखक श्री सुरेश सरल द्वारा लिखित मुनिश्री तरुणसागर जी की अनुपम और प्रेरणादायक जीवन-गाथा।
मूल्य 100 रुपये

12 **महावीरोदय**
(हिन्दी व अंग्रेजी)
महावीर स्वामी की 2600वीं जन्म-जयंती पर भगवान महावीर के जीवन और दर्शन पर स्फुट सूत्रों का अपूर्व संचयन।
मूल्य 20 रुपये

13 **मैं सिखाने नहीं, जगाने आया हूँ**
श्री मुकेश नायक (उच्च शिक्षा मंत्री, मध्यप्रदेश शासन) द्वारा सम्पादित। मुनिश्री के भोपाल प्रवास जनवरी, 1994 में 33 जीवनोपयोगी चिन्तनपूर्ण विषयों पर हुए प्रवचनों का सुन्दर प्रकाशन।
मूल्य 30 रुपये

14 **राष्ट्र के नाम संदेश**
30 नवम्बर 1997 को मास-निर्यात व कत्लखानों के विरोध में आयोजित देशव्यापी अहिंसा सम्मेलन में 1 लाख श्रोताओं के मध्य दिल्ली के ऐतिहासिक लाल किले से मुनिश्री द्वारा राष्ट्र के नाम संदेश। धर्म समाज व राष्ट्र पर एक ज्योतिर्मय चिन्तन-प्रवचन।

मूल्य 15 रुपये

15 **तरुणसागर-उवाच**
इन्दौर और मेरठ के विभिन्न स्थानों पर मुनिश्री द्वारा दिये गये अमृत प्रवचनों का सार-संक्षेप।

मूल्य 25 रुपये

16 **मुझे आपसे कुछ कहना है**
(हिन्दी व अंग्रेजी)
इन्दौर में 26 जनवरी 1995 को राजवाड़ा पर ऐतिहासिक धर्मसभा में मुनिश्री द्वारा दिया गया एक क्रान्तिकारी प्रवचन जो सिखाता है जीवन जीने की कला।

मूल्य 15 रुपये

17 **पब्लिक प्रवचन**
जन-साधारण के मध्य दिया गया एक अमृत प्रवचन जो सिखाता है कि जीवन को स्वर्ग कैसे बनायें तनावों से मुक्त कैसे हों।

मूल्य 15 रुपये

18 **मैंने सुना है**
पूज्यश्री द्वारा भारत प्रसिद्ध दिगम्बर जैन तीर्थ तिजारा चातुर्मास-2000 में प्रत्येक रविवार को हुए विशेष प्रवचनों का संग्रह।

मूल्य 30 रुपये

19 **अमृत प्रवचन-माला**
(ऑडियो कैसेट्स)
क्रान्तिकारी संत मुनिश्री तरुणसागर जी की अमृतवाणी का जी टी वी से विश्व के 122 देशों में प्रसारण। इसी की ऑडियो कैसेटों का सैट। सैट-1 (1-10) सैट-2 (11-20) सैट-3 (20-30)

प्रत्येक सैट 200 रुपये

20 **21वीं सदी और अहिंसा महाकुंभ**
1 जनवरी 1999 को विश्वविख्यात हर की पैड़ी हरिद्वार में प्रदत्त एक प्रवचन जिसमें नई सदी में प्रस्तावित अहिंसा महाकुंभ की रूपरेखा तथा मांस निर्यात के विरोध में राष्ट्रव्यापी शंखनाद।

मूल्य 15 रुपये

21 **क्रान्तिकारी प्रवचन**
(हिन्दी व अंग्रेजी)
25 दिसम्बर 2000 को जयपुर की ऐतिहासिक बड़ी चौपड़ पर मुनिश्री द्वारा दिया गया एक क्रान्तिकारी उद्बोधन। सबसे हटकर और सबसे बढ़कर।

मूल्य 15 रुपये

22 **आनंद-यात्रा**
मुनिश्री द्वारा संचालित तनाव-मुक्ति का अभिनव प्रयोग आनंद यात्रा की फुहारें।

मूल्य 15 रुपये

23 **क्या कहेंगे लोग ?**
20 जुलाई 2001 को अजमेर के प्रसिद्ध पटेल स्टेडियम में प्रदत्त एक अमृत-प्रवचन।

मूल्य 15 रुपये

24 **गई भैंस पानी में**
26 दिसम्बर 01 को श्री राम वाटिका भीलवाड़ा में आयोजित दिव्य सत्संग महोत्सव में प्रदत्त एक प्रवचन।

मूल्य 15 रुपये

25 **एक बुढ़िया जो बचपन में मर गई**
गोरा-बादल स्टेडियम चित्तौड़गढ़ (राज) में प्रदत्त एक जीवन्त-प्रवचन।

मूल्य 15 रुपये

26 **माँ**
17 फरवरी 2002 को दशहरा मैदान नीमच (म प्र) में प्रदत्त एक क्रान्तिकारी प्रवचन।

मूल्य 15 रुपये

27 **प्रवचन वी सी डी**
सैट-1 से 5 6 से 10 11 से 15 16 से 20 21 से 25 एवं 26 से 30

प्रत्येक सैट का मूल्य 250 रुपये
सम्पूर्ण सैट का मूल्य 1500 रुपये

28 **अर्थी सजा के रखना**
10 मार्च 2002 को पुरानी कृषि उपज मण्डी मन्दसौर (म प्र) में प्रदत्त एक क्रान्तिकारी प्रवचन।

मूल्य 15 रुपये

29 **जीने की कला**
11 अप्रैल से 18 अप्रैल 2002 तक प्रतापगढ़ (राज) में आयोजित अमृत प्रवचन महोत्सव में प्रदत्त प्रवचन।
मूल्य 15 रुपये

30 **गुस्सा और जिद**
धर्मक्षेत्र परिसर कावाबाड़ी के सामने जावरा (म प्र) में सम्पन्न दिव्य सत्सग महोत्सव (12 से 19 मई 2002) में प्रदत्त सत्सग प्रवचन।
मूल्य 15 रुपये

31 **आह्वान**
श्रीराम विद्यालय परिसर सीतामऊ (जि -मदसौर म प्र) में आयोजित सत्सग (7 से 11 जून 2002 तक) प्रदत्त आह्वान-प्रवचन।
मूल्य 15 रुपये

32 **मुझे गुस्सा बहुत आता है**
रतलाम चातुर्मास-2002 में डॉ अम्बेडकर मैदान में आयोजित सस्कार-महोत्सव में (11 अगस्त से 1 सितम्बर) प्रदत्त एक सकेतीय-प्रवचन।
मूल्य 15 रुपये

33 **सम्पूर्ण-प्रवचन (भाग 1 2 3 व 4)**
क्रान्तिकारी सत द्वारा सन् 1993 से 2004 तक प्रदत्त प्रवचनों का महासग्रह। 1400 से अधिक पृष्ठों में अब तक प्रकाशित सभी प्रवचन पुस्तकों का समावेश। एक दुर्लभ एव सग्रहणीय प्रकाशन।
मूल्य 500 रुपये

34 **कड़वे-प्रवचन भाग 1-2-3 (बहुचर्चित)**
(हिन्दी/गुजराती/अग्रेजी/मराठी/कन्नड़/तमिल)
विचार क्राति में एक नया तहलका मचाने वाली पुस्तक।
मूल्य 100 रुपये (प्रति भाग)

35 **अहिंसा-महाकुभ (मासिक पत्रिका)**
मुनिश्री के विचारों की प्रतिनिधि पत्रिका।
आजीवन 1100 रुपये
त्रैवार्षिक शुल्क 300 रुपये

36 **कलम के डॉक्टर मलम के डॉक्टर**
29 मार्च 2006 को जे एस एम मेडिकल कॉलेज में डॉक्टर्स व मेडिकल के छात्र-छात्राओं के मध्य प्रवचन।
मूल्य 15 रुपये

37 **मस्तकाभिषेक प्रवचन**
श्रवणबेलगोला (कर्ना) स्थित भगवान बाहुबली के महामस्तकाभिषेक महोत्सव-06 में प्रमुख वक्ता के रूप में प्रदत्त चुनिंदा प्रवचन।
मूल्य 50 रुपये

38 **शब्दों के शहशाह**
वरिष्ठ पत्रकार प्रवीण शर्मा (इदौर) की कलम से श्रवणबेलगोला में भगवान बाहुबली के महामस्तकाभिषेक महोत्सव-06 में क्रातिकारी सत की उपस्थिति में वहा जो भी घटा उसका आँखों देखा हाल।
मूल्य 70 रुपये

39 **तरुणाई के सागर**
क्रातिकारी सत मुनिश्री तरुणसागरजी के जीवन और कृतित्व पर विभिन्न लेखकों विद्वानों और सत-मुनियों द्वारा लिखे लेखों और विचारों का अपूर्व सकलन।
मूल्य 40 रुपये

आप भी पढिये, औरों को भी पढवाइए।
अपनी मांग तत्काल भेजें।

साहित्य डाक व वी पी पी द्वारा भेजने की सुविधा उपलब्ध है। डाक शुल्क अतिरिक्त होगा।
मनीऑर्डर या ड्राफ्ट 'अहिंसा-महाकुभ', फरीदाबाद के नाम से देय है।

●

साहित्य मगाने हेतु सम्पर्क-सूत्र
अहिंसा महाकुंभ प्रकाशन
196, सैक्टर-18, फरीदाबाद (हरियाणा) * दूरभाष 0129-2262549